राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

मूल्य: ₹15/-

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 3, सितम्बर 2023

सच्चाई, ऊर्जा, सकारात्मक विचार

विश्व गुरु ने दिखाया 'मानव कल्याण' का सनातन पथ..!

आपका अपना अस्पताल

WELLS
MULTISPECIALITY HOSPITAL
(A Unit of WELLS HOSPITAL Pvt. Ltd.)

आपके शहर में

SCAN ME

हॉस्पिटल में उपलब्ध सुविधाएँ

- आई॰सी॰यू॰ (I.C.U. / C.C.U. / H.D.U.)
- डिलक्स एसी॰ रूम
- जेनरल एवं जनतावार्ड
- एक्स-रे (X-RAY)
- सीटी स्कैन (CT SCAN)
- यू. एस. जी. (U.S.G.)
- टी. ऍम.टी. (T.M.T.)
- पी.एफ.टी. (P.F.T.)
- 2डी-इको (2D-ECHO)
- डायग्नोस्टिक लैब (DIAGNOSTIC LAB)
- सभी न्यूरो ऑर्थो, स्पाइनल, जेनरल, डेन्टल एवं गायनोकॉलोजी विभाग की सर्जरी (AIIMS के विशेषज्ञ सर्जन के द्वारा)
- जेनरल फिजिशियन के द्वारा OPD की मुफ्त सुविधा सुबह 9 am से 11 am तक
- सभी इन्सोरेन्स कम्पनी एवं टी॰ पी॰ ए॰ द्वारा मेडिक्लेम कैशलेस की सुविधा.
- 24 घंटे फार्मेसी एवं जाँच की सुविधा उपलब्ध.
- 24 घंटे बिजली, पानी एवं कैंटीन की सुविधा उपलब्ध

एक्स-रे एवं पैथोलॉजी जाँच 15 से 20% की विशेष छूट

दवाई लेने पर 10 से 20% की विशेष छूट

24/7 Emergency Services

बी-136, हाउसिंग कॉलोनी, नियर कंकड़बाग टेम्पो स्टैंड, वी-मार्ट मॉल के पीछे
कंकड़बाग, पटना-20, Mob.: 9341508211 /12 /13/14

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 03, सितम्बर 2023

RNI No. BIHHIN/2007/22741

संपादक
राजीव रंजन

समाचार संपादक
राकेश कुमार

विशेष संवाददाता
कुमुद रंजन सिंह

छायाकार
विनोद राज

विधि सलाहकार
उपेन्द्र प्रसाद
चंद्र नारायण जायसवाल

साज-सज्जा
मयंक शर्मा

प्रशासनिक कार्यालय
सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर
कंकड़बाग, पटना - 800020
फोन : 7004721818

Email : ubhartabihar@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक रांजीव रंजन द्वारा कृत्या पब्लिकेशन, लंगरटोली, बिहार से मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर, कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।
संपादकः राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटाये जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने है। इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नही है। सामग्री की वापसी की जिम्मेवारी उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वोधिकार सुरक्षित है। कुछ छाया चित्र और लेख इंटरनेट, एजेंसी एवं पत्र-पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त सभी पद अस्थायी एवं अवैतनिक है। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।

संरक्षक

डॉ. संतोष कुमार
राजीव रंजन

अखिलेश कुमार जायसवाल
डॉ. राकेश कुमार

काशी में धनाभिषेक, टूरिज्म बमबम अर्थव्यवस्था 3500 करोड़ के पार 05

रक्षाबंधन: अब बहने भी बन रही भाई ... 173

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल... 34

राजीव रंजन
संपादक

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी हर साल भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तिथि को मनाई जाती है। मान्यतानुसार, इस दिन भक्त श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाते हैं और उनके बाल रूप की पूजा करते हैं। इस दिन श्रीकृष्ण के लिए भक्त व्रत भी रखते हैं। देशभर में यह त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन मंदिरों और घरों में सजावट की जाती है और श्रीकृष्ण के जीवन की झाकियां लगाई जाती हैं। मथुरा से लेकर बरसाना और वृंदावन को सजाया जाता है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि में श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए प्रशासन द्वारा कड़ी व्यवस्था की जाती है। ऐसी मान्यता है कि जन्माष्टमी पर विधि पूर्वक पूजन करने से घर में सुख-शांति आती है और सफलता भी मिलती है। धार्मिक मान्यता है कि कृष्ण जी के बाल रूप का पूजन रात्रि में उनके जन्म के समय ही करना शुभ होता है। इस साल जन्माष्टमी का त्योहार कुछ लोग ने आज और कुछ लोग सात सितंबर 2023 को मना रहे हैं। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को हुआ था। इस दिन पूरी दुनिया में उनका जन्मदिन मनाया जाता है। भगवान कृष्ण का प्राकट्य रोहिणी नक्षत्र में हुआ था। इसलिए जन्माष्टमी के निर्धारण में रोहिणी नक्षत्र का भी ध्यान रखते हैं। इस साल जन्माष्टमी की तारीख को लेकर बहुत कन्फ्यूजन है। आइए आपको बताते हैं कि आखिर जन्माष्टमी की सही तिथि क्या है। इस बार भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तिथि आज दोपहर 03.38 से शुरू हो चुका है और इसका समापन 7 सितंबर को शाम में 04.14 बजे होगा।

काशी में धनाभिषेक, टूरिज्म बमबम

अर्थव्यवस्था 3500 करोड़ के पार

सावन में एक तरफ पूरा देश देवो के देव महादेव को खुश करने में जुटा रहा तो दुसरी तरफ उन्हीं के द्वारा बसायी काशी में दुनिया जहान से आएं भक्त दर्शन-पूजन के बीच धनाभिषेक कर काशीवासियों को मालामाल करते नजर आएं। आंकड़ों के मुताबिक सावन माह के 58 दिनों में 1 करोड़ 60 लाख 95 हजार 9 सौ 98 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए. इससे यूपी के धार्मिक राजधानी काशी की अर्थव्यवस्था में न सिर्फ चार चांद लग गया, बल्कि पर्यटन से जुड़े ट्रैवल टूरिज्म, होटल, हॉस्पिटैलिटी, ट्रांसपोर्ट, रियल एस्टेट से लगायत इंडस्ट्री समेत अन्य कारोबार में इजाफा देखने को मिला। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि सिर्फ सावन में ही सवा पांच करोड़ के फूल-माला बिक गए। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के सीईओ डॉ. सुनील कुमार वर्मा की मानें तो श्रीकाशी विश्वधाम उद्घाटन तिथि 12 दिसम्बर 2022 से 12 दिसम्बर 2023 तक श्रद्धालुओं की संख्या 40 लाख से साढ़े सात करोड़ पहुंच गई है। यही नहीं 100 करोड़ से अधिक चढ़ावा भी आया है। एक अनुमान के मुताबिक उद्घाटन तिथि से अब तक विभिन्न सेक्टरों में चढ़ावा सहित 3500 करोड़ के कारोबार हो चुके होंगे।

सुरेश गांधी

धार्मिक राजधानी काशी अब आर्थिक राजधानी बनने को अग्रसर है। या यूं कहे सबसे अधिक पर्यटकों वाला शहर बन गया है। इसने आगरा व मथुरा को भी पीछे छोड़ दिया है, जहां वर्ष 2022 में 6.5 करोड़ पर्यटक पहुंचे थे। दिसंबर 2021 में काशी विश्वनाथ धाम उद्घाटन होने के बाद से अब तक लगभग 10.6 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं। पांच लाख वर्ग फुट में फैला यह कॉरीडोर वाराणसी पर्यटन को बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रहा है। पर्यटकों की संख्या में भारी वृद्धि के पीछे अहम कारण काशी विश्वनाथ धाम के पुनर्विकास है, जिसमें गंगा क्रूज, विश्व प्रसिद्ध गंगा आरती, गंगा घाटों का सौंदर्य, काशी की सांस्कृतिक-आध्यात्मिक विरासत और बरसों पुरानी बुनाई की कला सम्मिलित है। काशी विश्वनाथ मंदिर ट्रस्ट के पीआरओ पियुष तिवारी ने बताया कि जब से मंदिर का पुनर्विकास हुआ है, हर रोज डेढ़ लाख श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ के दर्शन-पूजन के लिए पहुंचते हैं। वहीं, सावन के महीने में यह संख्या बढ़कर दो लाख और सोमवार को साढ़े 6 लाख से ज्यादा हो गयी। उन्होंने कहा कि पिछले सावन में बाबा विश्वनाथ के दर्शन के लिए कुल 1 करोड़ 11 लाख श्रद्धालु पहुंचे थे, जबकि इस साल श्रावण मास में यह संख्या 1.60 करोड़ से भी ज्यादा हो गयी।

फिरहाल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट श्रीकाशी विश्वनाथ धाम के लोकार्पण के बाद से वाराणसी की आर्थिक तस्वीर बदल कर रख दी है। ना सिर्फ में रोजगार के साधनों में वृद्धि हुई है, बल्कि यहां के ढांचागत सुविधाओं में भी व्यापक सुधार हुआ है। पर्यटकों की संख्या में अभूतपूर्व इजाफा हुआ है। 99 फीसदी लोग मानते है कि इस अवधि में न सिर्फ शहर के ढांचागत सुविधाओं में व्यापक सुधार हुआ है, बल्कि रोजगार का सृजन भी हुआ है। अकेले पर्यटन के क्षेत्र में सबसे ज्यादा 35 फीसदी रोजगार बढ़ा। इसके अलावा घाटों के प्रबंधन के कार्य में

रोजगार बढ़े है। होटल मालिकों की आय में 75 फीसदी, दुकानदारों की आय में 50 फीसदी, ई-रिक्शा चालकों की आय में 35 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है। टैक्सी ऑपरेटरों की आय में 25 फीसदी की वृद्धि आंकी गई है। नाविक, साड़ी व्यवसायी, पूजन समाग्री विक्रेता, गुलाबी मीनाकारी, शिल्प कारीगर, खाने-पीने के दुकानदारों के मुताबिक उनकी आय में पहले की तुलना में 55 फीसदी की वृद्धि हुई है। खास बात यह है कि काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन-पूजन पहुंचे 99 फीसदी फीसदी श्रद्धालु सुगम-दर्शन से प्रभावित हैं।

सभी के लिए रोजगार के साधन बढ़े

होटल कारोबारी मनोज जायसवाल के मुताबिक मंदिर के पुनर्निर्माण के बाद से तो मानो वाराणसी की किस्मत चमक गई है। यहां इंफ्रास्ट्रक्चर में काफी सुधार हुआ है। पहले दिनभर में 12-13 घंटे भी बिजली की आपूर्ति मुश्किल से होती थी। दिनभर होटलों में जेनरेटर की वजह से शोर रहता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब यहां बिजली की आपूर्ति पूरी तरह से हो रही है। कनेक्टिविटी में भी काफी सुधार हुआ है। सड़क के साथ-साथ हवाई मार्ग से यात्रा की सुविधा भी बढ़ी है, जिसके परिणामस्वरूप देश-विदेश से यहां पहुंचने वालों की संख्या में काफी बढ़ोतरी दिख रही है। उनका कहना है कि पहले यहां खास सीजन या देव दीपावली या गंगा दशहरा जैसे पर्वों के मौके पर ही पर्यटक पहुंचते थे, लेकिन आज हर रोज एक से डेढ़ लाख पर्यटकों के आने से रोजगार के अवसर बढ़े हैं। इससे वाराणसी में 75 से 80 प्रतिशत तक व्यवसाय बढ़ा है। होटल इंडस्ट्री में बूम आया है। होटल ऑनलाइन बुक किए जाते हैं। एसी कमरों की कीमत यहां 1000 से लेकर 3000 रुपये तक है। वहीं, नन-एसी कमरों की कीमत 1000 रुपये के नीचे है। लगभग हर रोज यहां होटल के कमरे बुक हो जाते हैं। सिर्फ होटल इंडस्ट्री को ही इसका फायदा नहीं हो रहा, बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी इसका असर दिख रहा है। जिस तरह से यहां पर्यटकों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है, उसे देखते हुए यह कहना गलत न होगा कि पर्यटक स्थलों और धार्मिक स्थलों के साथ-साथ लोग यहां की पारंपरिक कला-संस्कृति, खान-पान, परिधान आदि की ओर भी आकर्षित हो रहे हैं। बनारसी साड़ी हो या फिर वाराणसी के स्ट्रीट फूड्स, आज भी इनका क्रेज पर्यटकों के सिर चढ़कर बोलता है। यहां से जाने से पहले वे बनारसी साड़ी के अलावा सिल्क के कपड़े साथ ले जाना नहीं भूलते। खाने-पीने की चीजों का स्वाद चखना और फिर उन्हें संग ले जाना, पर्यटकों के इस कदम से वाराणसी के लोगों के व्यवसाय में काफी बढ़ोतरी हुई है। रिक्शा चलाने वाले से नाव चलाने वाले नाविक तक, सभी के लिए रोजगार के साधन बढ़े हैं। वाराणसी में समृद्धि हर ओर देखने को मिल रही है। परिवहन सुविधाएं बढ़ने और अन्य कई सुविधाएं देखने के बाद देश-विदेश से आने वाले लोग भी यहां निवेश करने को लेकर कदम बढ़ा रहे हैं।

बेहतर कनेक्टिविटी भी है वजह

निःसंदेह योगी सरकार के प्रयासों ने मंदिर के पुनरुद्धार के बाद यहां पहुंचने, ठहरने समेत दर्शन-पूजन आदि को भी बेहद आसान बना दिया है। देश को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने के अपने मिशन के साथ मौजूदा सरकार लगातार शहर में पर्यटन की आर्थिक क्षमता को बेहतर बनाने की कोशिश में जुटी है। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर और घाटों के लिए हमेशा से प्रसिद्ध यह नगर, धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने की सरकार की परंपरा और आधुनिकता को साथ लेकर आगे बढ़ रही है। परिणामस्वरूप काशी-विश्वनाथधाम मंदिर समेत समूचे वाराणसी में पर्यटकों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। मुम्बई और गोवा की तरह अब वाराणसी में भी लोग पानी पर लग्जरी यात्रा का आनंद उठा रहे हैं। वाराणसी यूपी का पहला ऐसा शहर है, जहां नदी में चलने वाले क्रूज की संख्या 10 से ज्यादा हो चुकी है। पर्यटकों की संख्या में हुई वृद्धि से वाराणसी में रिवर टूरिज्म की डिमांड भी बढ़ी है, जिसमें क्रूज की मांग भी शामिल है। गंगा की लहरों पर क्रूज का संचालन बढ़ने से वाराणसी में न सिर्फ पर्यटन क्षेत्र का विकास हो रहा है, बल्कि यहां के कारोबारियों को भी लाभ मिल रहा है। बेहतर कनेक्टिविटी के कारण पर्यटक वाराणसी के साथ-साथ अयोध्या, विन्ध्याचल और प्रयागराज भी जा रहे हैं। छुट्टियों और पर्व-त्योहारों में काशी आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। टेंट सिटी, रिवर फ्रंट, नमो घाट जैसी पर्यटन परिवहन तथा मूलभूत सुविधाओं को मजबूत करने वाली परियोजनाओं के पूरा होने के बाद काशी सहित वाराणसी और मिजार्पुर मंडल में पर्यटन उद्योग को और ऊंचाई मिलेगी।

खुला समृद्धि का द्वार

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के निर्माण ने समृद्धि के द्वार खोल दिए हैं। काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के लोकापर्ण के बाद पहले ही साल भक्तों ने 100 करोड़ रुपये से अधिक का दान दिया। महज एक साल के भीतर ही 7.35 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। यह तादाद पहले के मुकाबले 12 गुने से भी ज्यादा है। मंदिर में बीते एक साल में नकदी के अलावा 60 किलो सोना, 10 किलो चांदी, 1500 किलो तांबा भी भक्तों ने चढ़ाया है। श्रद्धालुओं ने 50 करोड़ रुपये से ज्यादा की नकदी दान में दी है। कुल मिले दान का 40 फीसदी ऑनलाइन आया है। खुद मंदिर प्रशासन की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक बीते साल के मुकाबले इस साल आय में 500 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है।

दस गुना पर्यटक

पर्यटन विभाग के मुताबिक वर्ष 2022 में महज जुलाई महीने में वाराणसी पहुंचने वाले भारतीय पर्यटकों की संख्या 40.03 लाख है, जो जुलाई 2017 के 4.61 लाख के मुकाबले करीब दस गुना ज्यादा है। इस साल सावन और देव दीपावली में वाराणसी पहुंचने वाले पर्यटकों की संख्या ने रिकार्ड बनाया है। काशी विश्वनाथ मंदिर के चारों प्रवेश द्वारों पर लगे हेट स्कैनिंग मशीन से आने वालों की गिनती की जाती है। काशी विश्वनाथ धाम ने जबसे दिव्य रूप लिया वाराणसी के फूल माला से जुड़े लोग हों या बनारसी साड़ी व्यवसाय करने वाले सभी उत्साहित हैं. व्यापार में 40 प्रतिशत बूम से सबके चेहरे खिले हुए हैं. गोदौलिया, मैदागिन, अस्सी आदि चैराहे के नजदीक दुकान चलाने वाले तमाम दुकानदार विश्वनाथ धाम के निर्माण के बाद से अपने कारोबार में हुए इजाफे से खुश हैं. वह कहते हैं कि काशी विश्वनाथ धाम के जीर्णोद्धार का असर शहर के हर क्षेत्र में दिख रहा है. यहां के लोगों की आय में इजाफा हो रहा है और संसार भर से करोड़ों श्रद्धालु बाबा विश्वनाथ के दर्शन करने आ रहे है. इनकी संख्या अब हर साल बढ़ती जाएगी क्योंकि शहर के ढांचागत विकास पर अब विशेष ध्यान दिया जा रहा है.

40 फीसदी दान ऑनलाइन

बाबा के भक्त यहां की व्यवस्था की तरह हाईटेक हो रहे हैं। साल भर में विभिन्न मदों में आए लगभग 50 करोड़ दान में 40 फीसदी ऑनलाइन था। मंदिर गर्भगृह को स्वर्णमंडित करने के लिए मुंबई के श्रद्धालु ने 60 किलो सोना दान किया। अन्य मदों में लोग तैयार खड़े दिखे। श्रद्धालु व दान विस्तार को देखते हुए माना जा रहा है कि पांच साल में मंदिर विस्तार व सुंदरीकरण में खर्च 850 करोड़ से अधिक धनराशि चढ़ावे में आ जाएगी।

महका फूलों का बाजार

सावन में श्रद्धालुओं ने बाबा विश्वनाथ का जलाभिषेक कर आशीर्वाद लिया। वहीं गौरीकेदारेश्वर, जागेश्वर महादेव, तिलभांडेश्वर महादेव, कर्दमेश्वर महादेव, सारंगनाथ, शूलटंकेश्वर सहित द्वादश ज्योतिर्लिंग, मणिमंदिर सहित सभी मंदिर भक्तों से गुलजार रहे। कहीं भगवान शिव का हरियाली श्रृंगार हुआ तो कहीं फूल बंगला की झांकी सजाई गई। हिम श्रृंगार के दर्शन कर श्रद्धालुओं ने भोग अर्पित किया। शूलटंकेश्वर से लेकर कैथी मार्कंडेय महादेव धाम तक आस्थावान भक्ति में डूबे नजर आए। त्रिदेव मंदिर में जलविहार की झांकी सजाई गई। वृंदावन के मोहक फूल बंगले के बीच विशाल झील में फुहारों के बीच राधा कृष्ण के जलविहार की झांकी भक्तों में मन में समा गई। हिम शिवलिंग के साथ राम लक्ष्मण सीता हनुमान के साथ ही फूलों से बने झूले पर राधाकृष्ण की झांकी लोग अपलक निहारते रहे। राणी सती के अलावा सालासर हनुमान और खाटू वाले श्याम प्रभु के श्रृंगार के दर्शन के साथ त्रिदेवों को छप्पन भोग अर्पित किया गया। सावन के महीने में जहां बाबा के धाम में भक्तों की कतार उमड़ी वहीं फूलों का बाजार भी महक उठा। सावन के महीने में सवा पांच करोड़ से अधिक फूलों का खरीद और बिक्री हुई। मलदहिया फूल मंडी की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार सोमवार को 50 लाख से अधिक फूल और मालाएं बिक गईं। वहीं रविवार को 30 लाख रुपये से अधिक के फूल-माला की बिक्री हुई थी।

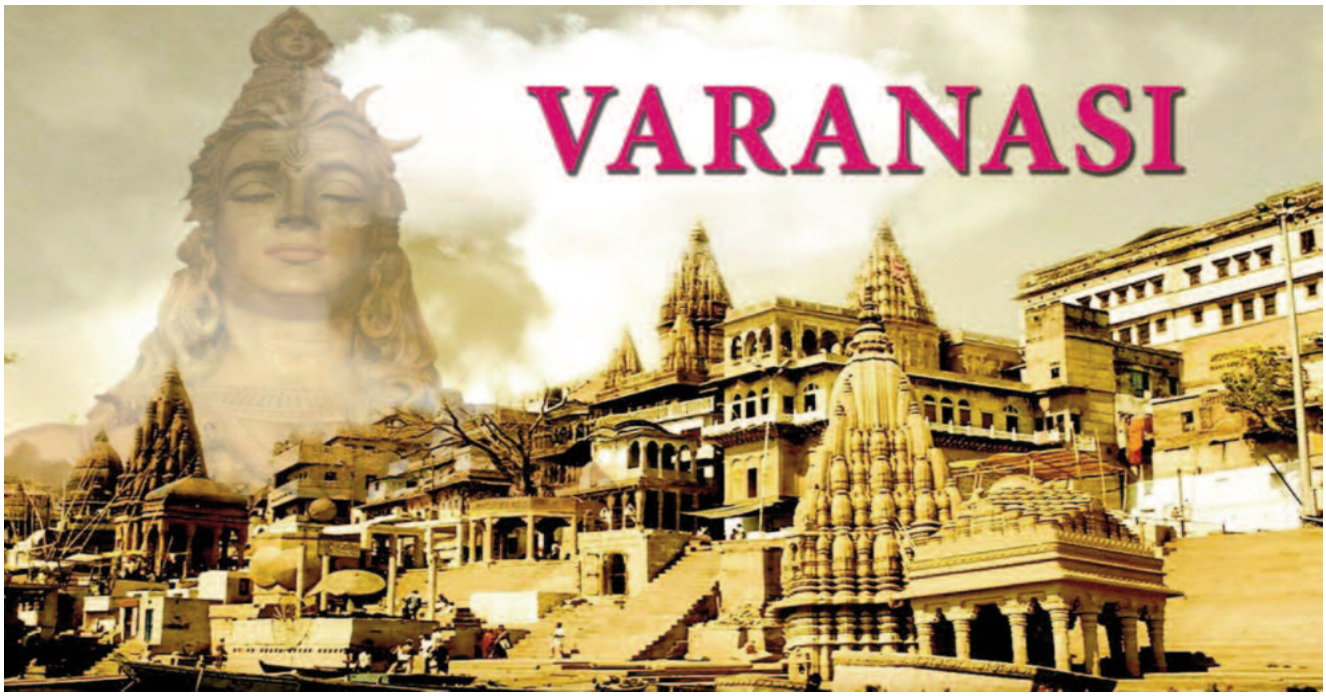

विश्व गुरु ने दिखाया 'मानव कल्याण' का सनातन पथ

भारत मंडपम दुनिया के एक शानदार जी-20 आयोजन का गवाह बना है. जी20 का सफलतापूर्वक संपंन होना, भारत के लिए एक ह्लगर्व का क्षणह्ल है. जी20 घोषणापत्र सभी विकासात्मक और भू-राजनीतिक मुद्दों पर 100 प्रतिशत आम सहमति के साथ ह्यऐतिहासिक और ह्यअभूतपूर्व है. नए भू-राजनीतिक पैराग्राफ आज की दुनिया में ग्रह, लोगों, शांति और समृद्धि के लिए एक शक्तिशाली आह्वान हैं. जी20 घोषणापत्र को अंतिम रूप दिये जाने से आज की दुनिया में प्रधानमंत्री मोदी का नेतृत्व प्रदर्शित हुआ है. मतलब साफ है मोदी की मुरीद पूरी ह्लदुनियाह्ल बन चुकी है। इन महाशक्तियों ने मोदी को वर्ल्ड लीडर के रुप में मान लिया है। चीन का सुपर पावर होने का चैप्टर क्लोज हो चुका है। खास बात यह है कि जी-20 से चीन के कॉरिडोर का करारा जवाब दिया गया है। एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य पर सहमति बनी है। रुस का नाम लिए बगैर कहा गया यह युग युद्ध का नहीं है। अब ना ही परमाणु का इस्तेमाल होगा और ना ही हथियारों की तस्करी होगी। जी-20 इसलिए भी सफल है क्योंकि पहली बार 73 मुद्दों पर सहमति बनी है। नौ बार आतंकवाद का जिक्र बता दिया गया है कि आतंकवाद से पूरे विश्व को खतरा है। भारत की पहल पर अफ्रीकी संघ की एंट्री हो गयी है। ग्लोबल बायोफ्यूल एलायंस पर मुहर लगी है। भारत मिडल ईस्ट यूरोप कॉरिडोर लॉन्च किया गया

सुरेश गांधी

फिरहाल, भारत की अध्यक्षता में जी-20 शिखर सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न हो चुका है. इसी के साथ ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डीसिलल्वा को जी-20 की अध्यक्षता सौंप दी गयी और नई दिल्ली लीडर्स समिट

> "डेंगू एक गंभीर बीमारी है जो मच्छरों के काटने की वजह से फैलता है। डेंगू बुखार अभी बढ़ने की टेंडेंसी देखी जा रही है, अभी बहुत ज्यादा तो नहीं लेकिन अभी से ही सतर्क रहना बहुत आवश्यक है क्योंकि डेंगू के मामले आने शुरू हो गए हैं और आगे आने वाले दिनों में ये बढ़ने की संभावना हैं। अगर लोग सतर्क नही रहेंगे तो सितंबर और अक्टूबर में और भी बढ़ने की संभावना है।

डिक्लेरेशन (नई दिल्ली घोषणापत्र) पर सहमति भी बन गयी। घोषणापत्र पर ना तो रूस यूक्रेन विवाद का साया पड़ा और ना ही चीन की पैंतरेबाजी काम आई. भारत रूस- यूक्रेन के विवादास्पद मुद्दे पर जी20 देशों के बीच एक अप्रत्याशित सहमति बनाने में कामयाब रहा, जिसमें ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और इंडोनेशिया जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने सफलता तक पहुंचने में अग्रणी भूमिका निभाई. जी-20 नेताओं ने इस सम्मेलन में कई गंभीर चुनौतियों पर चर्चा करने के बाद कई फैसले लिए. इसमें मिडिल ईस्ट यूरोप कनेक्टिविटी, कॉरिडोर लॉन्च और अफ्रीकी यूनियन की एंट्री पर मुहर लगी, तो वहीं दूसरे दिन भी ग्रुप में शामिल सभी देशों के बीच सबकी सहमित से इंडिया मिडिल ईस्ट यूरोप कनेक्टिविटी कॉरिडोर लॉन्च का सबसे बड़ा फायदा ये होगा कि इन्फ्रा डील से शिपिंग समय और लागत कम होगी, जिससे व्यापार सस्ता और तेज होगा. इसे चीन की बेल्ट एंड रोड परियोजना के विकल्प के रूप में पेश किया जा रहा है. इस कॉरिडोर का उद्देश्य संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), सऊदी अरब, जॉर्डन और इजराइल से होते हुए भारत से यूरोप तक फैले रेलवे मार्गों और बंदरगाह लिंकेज को एकीकृत करना है. इस समिट की सबसे खास बात यह है कि इसके जरिए सनातन धर्म की जबरदस्त ब्रांडिंग की गयी है। नटराज की विशाल मूर्ति, कोणार्क और ननालंदा का झलक, कंट्री प्लेट पर इंडिया नाम की बजाय भारत और साबरमती आश्रम की बैकग्राउंड में लगी तस्वीरे इस बात का संकेत है कि आने वाला दिन सनातन धर्म की ही है।

रेल लिंक से भारत और यूरोप के बीच व्यापार करीब 40 फीसदी तक तेज हो सकता है. भारत के इस प्रस्ताव पर देशों की रजामंदी, चीन के लिए बड़े झटके से कम नहीं है. इस ऐलान से चीन के प्रोजेक्ट बीआरआई को तगड़ा झटका लगा है, जिसका भारत पहले से विरोध करता रहा है. खासकर ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस की लॉन्चिग से टिकाऊ बायोफ्यूल का इस्तेमाल बढ़ेगा। बायोफ्यूल पेड़-पौधों, अनाज, शैवाल, भूसी और फूड वेस्ट से बनने वाला ईंधन होता है और इसे कई तरह के मायोमास से निकाला जाता है. इसमें कार्बन की कम मात्रा होती है. अगर इसका इस्तेमाल बढ़ेगा तो दुनिया में पारंपरिक ईंधन पेट्रोल-डीजल पर निर्भरता कम होगी और पर्यावरण प्रदूषण भी कम होगा. इसके साथ ही पीएम मोदी ने वन अर्थ पर जी20 समिट में पर्यावरण और जलवायु अवलोकन के लिए जी20 सैटेलाइट मिशन शुरू करने का भी प्रस्ताव रखा और नेताओं से ग्रीन क्रेडिट पहल पर काम शुरू करने का आग्रह किया. जो आने वाले दिनों में काफी फायदेमंद होने वाला है। इसके अलावा भारत ने अफ्रीकन यूनियन को जी-20 का स्थायी मेंबर बनाने का प्रस्ताव रखा था. जिसे बतौर अध्यक्ष सभी देशों की सहमति से पीएम मोदी द्वारा पारित किए जाने से अफ्रीका में चीन का प्रभाव बढ़ेगा। ऐसे में भारत का कदम अफ्रीकी महाद्वीप पर चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए काफी अहम होगा। अफ्रीका को देखे तो सबसे तेजी से विकास करने वाले 12 देशों में 6 अफ्रीका से है। इसलिए, अगर दुनिया को उस तरफ बढ़ना है तो आपको उन्हें एक हिस्सा बनाने की जरूरत है. दूसरी ओर भारत और अफ्रीका के बीच व्यापार और शिक्षा से लेकर हेल्थ और तकनीकी तक सहयोग का एक लंबा इतिहास है.

जी-20 में अफ्रीकी यूनियन को शामिल करने के समर्थन की पहल दोनों देशों के बीच इसी साझेदारी का प्रतीक भी है. भारत और अमेरिका के बीच 6जी टेक्नोलॉजी को डेवलप करने पर भी सहमति बनी है. इसके लिए जो अलायंस और एमओयू तैयार हुआ है, वह सिर्फ टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट करने पर ही नहीं, बल्कि उसकी सप्लाई चेन विकसित करने पर भी केंद्रित है. ये चीन के कनेक्टिविटी डिवाइस सेक्टर में बाहुबल को कम करेगा. अभी 5जी के मामले में चीन का दुनिया के बाजार में दबदबा है. यह अपनी तरह का पहला आर्थिक गलियारा होगा, इसमें भारत, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, यूरोपीय संघ, फ्रांस, इटली, जर्मनी और अमेरिका को शामिल किया गया है. इस कॉरिडोर के जरिए शिपिंग और रेलवे लिंक समेत कनेक्टिविटी और बेसिक इन्फ्रास्ट्रक्चर पर एक ऐतिहासिक पहल की गई है. कहा जा सकता है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा जी20 सम्मेलन की मेजबानी कामयाबी की नई कहानी गढ़ रहा है। यह मोदी की जादू का ही कमाल है कि पूरी दुनिया इस सुपर आयोजन के लिए भारत को विश्व गुरु के रुप में देख रही है। मोदी की सफल कूटनीति का ही परिणाम हे कि चीन के कॉरिडोर का चैप्टर क्लोज हो गया। जी20 मीटिंग के दौरान नई दिल्ली घोषणापत्र में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस चर्चित बयान को भी जगह दी गई है जिसमें उन्होंने रूस के राष्ट्रपति व्लादिर पुतिन से कहा था कि यह युद्ध का युग नहीं है. भारत की इसे बड़ी कूटनीतिक जीत इसलिए भी मानी जा रही है क्योंकि घोषणा पत्र में धरती, यहां के लोग, शांति, समृद्धि वाले खंड में चार बार यूक्रेन युद्ध की चर्चा की गई लेकिन रूस के नाम का एक बार भी उल्लेख नहीं किया गया फिर भी भारत ने इस पर आम सहमति बना ली. यहां

यह जान लेना जरूरी है कि भारत-और रूस के बीच ऐतिहासिक संबंध हैं और दोनो देशों में गहरी दोस्ती है. विषम परिस्थितियों में रूस ने कई बार भारत की मदद भी की है. यह कॉरिडोर सीधे तौर पर चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव को चुनौती देगा. इसके साथ ही आर्थिक गलियारे की मदद से एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़ा जाएगा और व्यापार और इन्फ्रास्ट्रक्चर नेटवर्क को स्थापित किया जाएगा. इस कॉरिडोर की मदद से एशिया, यूरोप और अफ्रीका को

> मच्छरों से बचने के लिए साफ जगह पर रहे एवं मच्छरों से बचने के लिए मच्छरदानी का उपयोग जरूर करे। अगर कही भी पब्लिक प्लेस पर जा रहे हैं जहां की मच्छर होने की संभावना है तो वहां अपना फुल शर्ट ही पहन कर जाएं, मच्छर रोधी मलहम का उपयोग अवश्य करे। डेंगू के लक्षण दिखने पर तत्काल चिकत्सकीय सलाह जरूर लें।

जोड़ा जाएगा और व्यापार और इन्फ्रास्ट्रक्चर नेटवर्क को स्थापित किया जाएगा. इस कॉरिडोर की मदद से अतिरिक्त एशियाई देशों को आकर्षित करने की कोशिश रहेगी. इससे क्षेत्र में मैन्यूफैक्चरिंग, फूड सिक्योरिटी और सप्लाई चेन को बढ़ावा मिलेगा. व्हाइट हाउस की तरफ से भारत-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर को लेकर एक फैक्ट लेटर में जानकारी दी गई. इसमें बताया कि कॉरिडोर के जरिए यूरोप, मिडिल ईस्टऔर एशिया के बीच रेलवे और समुद्री नेटवर्क स्थापित करना शामिल है. इस महत्वाकांक्षी पहल का उद्देश्य कमर्शियल हब को कनेक्ट करना, क्लीन एनर्जी का विकास और एक्सपोर्ट का सपोर्ट करना, समुद्र के नीचे केबल बिछाना, एनर्जी ग्रिड और दूरसंचार लाइनों का विस्तार करना, क्लीन एनर्जी टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देना और कम्युनिटी के लिए इंटरनेट रीच बढ़ाना, स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करना है.

बैठक के दौरान यूक्रेन युद्ध के मामले में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और महासभा में अपनाए गए प्रस्तावों को दोहराया गया और कहा गया कि सभी देशों को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप ही काम करना चाहिए. इस घोषणा पत्र के जरिए रूस को संदेश दिया गया कि किसी भी देश की अखंडता, संप्रभुता का उल्लंघन और इसके लिए धमकी या बल के प्रयोग से बचना चाहिए. परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की धमकी देना अस्वीकार्य है. बीते साल रूस द्वारा पश्चिमी देशों को परमाणु हमले की धमकी के संदर्भ में भी इस बयान को देखा जा रहा है. नई दिल्ली घोषणापत्र को इसलिए भी भारत की बड़ी जीत के तौर पर देखा जा रहा है कि राजधानी में आयोजित जी20 समिट में शुरूआत में यूक्रेन युद्ध और जलवायु परिवर्तन से जुड़े मुद्दों को शामिल किए जाने पर रूस और चीन ने आपत्ति जताई थी. यही वजह है कि समिट में मीटिंग के दौरान इस पर सहमति नहीं बनने के बाद यूक्रेन युद्ध से जुड़े पैराग्राफ को खाली छोड़ दिया गया था. लेकिन दुसरे दिन की मीटिंग में यूक्रेन युद्ध, जलवायु परिवर्तन, लैंगिक असमानता, आर्थिक चुनौतियां, आतंकवाद समेत कई मुद्दों पर सदस्य देशों के बीच आम सहमति बनाने में कामयाब हो गया।

जी-20 में मिली सनातन संस्कृति को जगह

इस समिट की सफलता के साथ ही 5 ऐसी चीजें भी हैं, जिनकी जमकर चर्चा हो रही है. इसमें नटराज की विशाल मूर्ति, कोणार्क और नालंदा का झलक, कंट्री प्लेट पर इंडिया नाम की बजाय भारत और साबरमती आश्रम. जी हां, ये भारत के सनातन धर्म को प्रदर्शित कर रहे है। भारत मंडपम में कन्वेंशन हॉल के प्रवेश द्वार पर 28 फुट ऊंची नटराज की प्रतिमा लगाई गई थी. यह प्रतिमा भगवान शिव को नृत्य के देवता और सृजन और विनाश के रूप में परिभाषित करती है. भारत मंडपम में नटराज की प्रतिमा का लगाने के पीछे धार्मिक और ऐतिहासिक दोनों कारण थे. नटराज का ये स्वरूप शिव के आनंद तांडव का प्रतीक है. नटराज की प्रतिमा में आपको भगवान शिव की नृत्य मुद्रा नजर आएगी. साथ ही वो एक पांव से दानव को दबाए हैं. ऐसे में शिव का ये स्वरूप बुराई के नाश करने और नृत्य के जरिए सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने का संदेश देता है. प्रधानमंत्री मोदी सुबह जब महात्मा गांधी के समाधिस्थल पर मेहमानों का स्वागत कर रहे थे तो उसके बैकग्राउंड में साबरमती आश्रम की कुटी के चित्र लगाएं थे। यह वहीं आश्रम है, जहां से भारत को आजाद कराने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन की शुरूआत महात्मा गांधी ने की थी. साबरमती आश्रम उस आदर्श का घर बन गया जिसने भारत को स्वतंत्र बना दिया. साबरमती आश्रम आज प्रेरणा और मार्गदर्शन स्त्रोत के रूप में सेवा करता है. इससे पहले पीएम मोदी शनिवार को जब जी20 शिखर सम्मेलन में विदेशी नेताओं का स्वागत कर रहे थे तो उनके बैकग्राउंड में ओडिशा के मशहूर कोणार्क मंदिर का सूर्य चक्र बना हुआ था. पीएम मोदी ने मेहमानों को कोणार्क सूर्य मंदिर और चक्र के बारे में भी जानकारी दी थी. वहीं, भारत मंडपम में राष्ट्रपति की ओर से डिनर का आयोजन किया गया. इस दौरान वेलकम स्टेज के बैकग्राउंड में नालंदा विश्वविद्यालय की झलक दिखाई दी. प्रधानमंत्री मोदी जी20 के कुछ नेताओं को विश्वविद्यालय का

> “ डेंगू एक गंभीर बीमारी है जो मच्छरों के काटने की वजह से फैलता है। डेंगू बुखार अभी बढ़ने की टेंडेंसी देखी जा रही है, अभी बहुत ज्यादा तो नहीं लेकिन अभी से ही सतर्क रहना बहुत आवश्यक है क्योंकि डेंगू के मामले आने शुरू हो गए हैं और आगे आने वाले दिनों में ये बढ़ने की संभावना हैं। अगर लोग सतर्क नही रहेंगे तो सितंबर और अक्टूबर में और भी बढ़ने की संभावना है।

महत्व बताते हुए भी दिखे. वहीं, राष्ट्रपति मुर्मू ने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक सहित जी20 के नेताओ को नालंदा यूनिवर्सिटी के महत्व के बारे में समझाया. बता दें कि नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत की प्रगति को दशार्ता है.

दो अलग-अलग गलियारे बनाए जाएंगे

एमओयू के अनुसार, दो अलग-अलग गलियारे शामिल होंगे. पूर्वी गलियारा भारत को अरब की खाड़ी से जोड़ेगा और उत्तरी गलियारा अरब की खाड़ी को यूरोप से जोड़ेगा. इसमें एक रेलवे नेटवर्क की सुविधा होगी जोमौजूदा समुद्री और सड़क परिवहन मार्गों के रूप में विश्वसनीय और लागत प्रभावी क्रॉस बॉर्डर शिप टू रेल ट्रांजिट सुविधा देने के लिए डिजाइन किया गया है. मुखमुख्य रूप से मिडिल ईस्ट से होकर गुजरने वाले इस रेलवे मार्ग में बिजली के केबल और क्लीन हाइड्रोजन पाइपलाइन बिछाने की योजनाएं शामिल हैं. व्हाइट हाउस की रिपोर्ट में कहा गया है कि रेल सौदा भारत से यूएई, सऊदी अरब, जॉर्डन और इजराइल के माध्यम से यूरोपतक शिपिंग और रेल लाइनों को जोड़ेगा. अब प्रोजेक्ट में शामिल देश अगले 60 दिन में कॉरिडोर को लेकर एक कार्य योजना तैयार करेंगे. इसमें ट्रांजिट रूट्स, कोऑर्डिनेशन बॉडी और टेक्निकल पहलुओं पर ज्यादा जानकारी के लिए चर्चा की जाएगी. भारत सरकार के सूत्रों के मुताबिक, इसमें शामिल सभी देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करते हुए परामर्शात्मक, पारदर्शी और भागीदारीपूर्ण कनेक्टिविटी पहल की महत्व पर जोर दिया गया है.

पूरी दुनिया की कनेक्टविटी मिलेगी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे मानवीय प्रयास और महाद्वीपों में एकता का एक प्रमाण बताया है. उन्होंने कहा, राष्ट्रपति बाइडेन, मोहम्मद बिन सलमान, शेख मोहम्मद बिन जायद, मैक्रो समेत सभी देशों के प्रमुखों को इस इनिशिएटिव के लिए बहुत बधाई देता हूं. मजबूत कनेक्टिविटी और इन्फ्रस्ट्रक्चर मानव सभ्यता के विकास का मूल आधार है. आने वाले समय में भारत पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच यह आर्थिक एकीकरण का प्रभावी माध्यम बनेगा. यह पूरी दुनिया की कनेक्टिविटी और सतत विकास को नई दिशा देगा. जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इसे वाकई में एक बड़ी उपलब्धि माना. बाइडेन ने कहा, दुनिया इतिहास के एक मोड़ पर खड़ी है. एक ऐसा पॉइंट, जहां हम आज जो निर्णय लेते हैं वह हमारे भविष्य की दिशा को प्रभावित करने वाले हैं. नए भारत-मिडिल ईस्ट-यूरोप आर्थिक गलियारे में इजराइल और जॉर्डन भी शामिल हैं.

> मच्छरों से बचने के लिए साफ जगह पर रहे एवं मच्छरों से बचने के लिए मच्छरदानी का उपयोग जरूर करे। अगर कही भी पब्लिक प्लेस पर जा रहे हैं जहां की मच्छर होने की संभावना है तो वहां अपना फुल शर्ट ही पहन कर जाएं, मच्छर रोधी मलहम का उपयोग अवश्य करे। डेंगू के लक्षण दिखने पर तत्काल चिकत्सकीय सलाह जरूर लें।

करणी सेना के बिहार महिला प्रदेश अध्यक्ष दीपशिखा चौहान से उभरता बिहार के समाचार संपादक राकेश कुमार की खास बातचीतः

सवालःआप करनी सेना से क्यों जुड़ी?

जवाबः मैं करनी सेना से इसलिए जुड़ी क्योंकि करनी सेना देश, धर्म और सेवा के लिए काम करती है और सच्चे दिल और लगन से काम करती है। करनी सेना के जो राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं उन्होंने करनी सेना को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचा दिया हैं। हमारी करनी सेना को देश के बाहर अमेरिका तक हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष ने स्थापित किया है और जितने भी हमारे करनी सैनिक हैं वो देश, धर्म और सेवा के लिए काम करते हैं इसलिए मैं करनी सेना से जुड़ी।

सवालः करनी सेना की स्थापना कब हुई और भारत के किस-किस प्रदेश में करनी सेना है?

जवाबः साल तो नहीं पता है लेकिन करीब करीब 10 से 12 साल तो करनी सेवा की स्थापना का हो ही गया होगा। भारत में हर प्रदेश में करनी सेना है। अभी हमने गोवा में भी करनी सेना की स्थापना कर दिया है। उत्तर प्रदेश, हरियाणा और बिहार में भी करनी सेना सक्रिय है। केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक और देश के हर राज्य में करनी सेना स्थापित है और करनी सैनिक हर जगह सक्रिय हैं।

सवालः बिहार के हर जिले में करनी सेना के जितने भी सैनिक हैं वे सक्रिय हैं या नहीं?

जवाबः पूरे बिहार में करनी सेना के जितने भी करनी सैनिक है वह सभी सक्रिय हैं और बिहार की राजधानी पटना में करनी सेना में 80 से 90 करनी सैनिक है और सभी सैनिक देश, धर्म और सेवा के लिए सक्रिय हैं। धीरेंद्र जी जो हमारे सर हैं उन्होंने करनी सेना को बिहार में लाया और उनके द्वारा ही करनी सेना बिहार आई। धीरेंद्र सर अभी करनी सेवा के राष्ट्रीय महामंत्री बन चुके हैं और पूरे टीम को लीड कर रहे हैं और हमारे उपाध्यक्ष विक्रमजीत सिंह हैं।

सवालः तमिलनाडु के उदय निधि स्टालिन द्वारा सनातन के खिलाफ दिए गए बयान पर आप करनी सेना की तरफ से क्या बोलना चाहती है?

जवाबः करनी सेना की तरफ से मैं बोलना चाहती हूं कि सनातन को बीमारी बोलने वाला व्यक्ति खुद एक बीमार व्यक्ति है और ऐसे लोग जो सनातन धर्म के खिलाफ बयान देंगे उनके बीमारी का खात्मा करनी सेना करेगी। अभी हाल में ही गोवा में एक मंदिर को चर्च में बदल दिया गया था लेकिन मैं वहां मां दुर्गा की प्रतिमा की स्थापना करने गई थी और मैं वहां मां दुर्गा की प्रतिमा की स्थापना की। करनी सेना को सनातन का विरोध करने वाले सभी लोगों से नफरत है।

सवालः अगर कोई करनी सेना से जुड़ना चाहे या सदस्य बनना चाहे तो वह कैसे सदस्य बने या कैसे जुड़े?

जवाबः करनी सेना से अगर कोई जुड़ना चाहते हैं तो उनका आधार कार्ड, पुलिस सत्यापन, एक तस्वीर और उनका सही मोबाइल नंबर मेरे पास भेजना होगा और मैं उसका सत्यापन करूंगी और उन्हें करनी सेना से जोड़ दूंगी। कोई भी व्यक्ति अपना विवरण मेरे व्हाट्सएप नंबर 912322 9905 पर भेज सकते हैं।

सवालः कई लोगों का ऐसा कहना है कि करनी सेना केवल राजपूत जाति का है आप इस पर क्या बोलना चाहती हैं?

जवाबः करनी सेना केवल राजपूत जाति के लोगों का है यह बिल्कुल गलत है और हमारे संगठन को बदनाम करने के लिए यह बात बोली जाती है। मैं देश के सभी लोगों से यह कहना चाहती हूं कि हमारे करनी सेना में सिर्फ "चादर" और "फादर" को हटाकर सभी सनातनी भाई हमारे अपने हैं। जिनकी भी यह भावना है की करनी सेना केवल एक विशेष जाति पर ध्यान देती है तो यह उनकी गलत भावना है। करनी सेना सनातन के लिए है। हमारे संगठन करनी सेना के अध्यक्ष सूरज पाल अंबु जी ने बोला है कि जो भी सनातनी है चाहे वो अनुसूचित जाति के क्यों न हो वो भी हमारे भाई ही है।

चिराग पासवान का एक बार फिर सीएम नीतीश कुमार पर हमला, कहा कि नीतीश कुमार केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा में इधर से उधर होते है!

लोजपा (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सांसद चिराग पासवान ने एक बार फिर सीएम नीतीश कुमार पर हमला किया। चिराग पासवान ने कहा कि वे केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के लिए इधर से उधर जाते हैं। इन्हें बिहार के विकास से कोई मतलब नहीं। इस दौरान उन्होंने इशारों में लालू-राबड़ी शासनकाल पर भी तंज कसा और कहा कि इनसे कोई उम्मीद बेमानी है। पटना के श्रीकृष्णापुरी स्थित पार्टी कार्यालय में ध्वजारोहण के बाद पत्रकारों से वे बात कर रहे थे।

चिराग पासवान ने कहा कि बिहार में केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के कारण सरकार की पार्टियां बदल रही हैं। उन्होंने 2015 से लेकर 2022 तक की अवधि की चर्चा करते हुए कहा कि 2015 में जब सरकार बदली तो क्या वो प्रदेश के विकास के लिए बदली?

बिल्कुल नहीं। वह केवल उन्होंने अपने लिए बदली। 2017 में भी वही हुआ और अब 2022 में भी उसी वजह से सरकार बदली। ऐसा नहीं है तो क्या बिहार के विकास के लिए सरकार बदली। क्या बिहार के विकास का कोई काम रुका हुआ था। ऐसा बिल्कुल नहीं है। इसके पीछे बस महत्वाकांक्षा है।

चिराग पासवान ने कहा कि जब-जब सीएम पद से नीतीश कुमार ने इस्तीफा दिया, तब सही मायने में उपमुख्यमंत्री का इस्तीफा हुआ क्योंकि हर बार सीएम तो यही रहे बस उपमुख्यमंत्री बदलते गए। इनकी नीति और नीयत बिल्कुल नहीं बदली है। कहें तो ना सरकार बदली, न मुख्यमंत्री बदले और ना इनकी नीतियां बदलीं। सरकार तब भी गलत नीतियों पर चल रही थी और आज भी गलत नीतियों पर काम कर रही है। नतीजा है कि बिहार का विकास रुका हुआ है। सरकार में जो लोग हैं पिछले 30-32 सालों से वही बिहार पर शासन कर रहे हैं। जब इतने दिनों में जब इनसे कुछ नहीं बदला तो आगे क्या बदलेगा, सिर्फ निराशा ही हाथ लगेगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार INDIA गठबंधन में केवल पीएम बनने के लिए हैं। वे बार-बार दल केवल कुर्सी के लिए बदलते हैं। 2017 में भी केवल कुर्सी के लिए वे NDA के साथ गए थे। महत्वकांक्षाओं की ही भेंट बार-बार बिहार चढ़ता रहा है। ये एक ऐसा प्रदेश हैं जहां निरंतरता में उपमुख्यमंत्री बदलते रहे लेकिन मुख्यमंत्री स्थिर रहे।

युवाओं के प्रेरणास्त्रोत है श्रीकृष्ण के संदेश

सुरेश गांधी

श्रीकृष्ण अवतार भगवान विष्णु का पूर्णावतार है। ये रूप जहां धर्म और न्याय का सूचक है वहीं इसमें अपार प्रेम भी है। वे भगवान श्रीकृष्ण ही थे, जिन्होंने अर्जुन को कायरता से वीरता, विषाद से प्रसाद की ओर जाने का दिव्य संदेश श्रीमदभगवदगीता के माध्यम से दिया। तो कालिया

भारतीय दर्शन परंपरा में श्रीराम और श्रीकृष्ण के ईश्वरीय रुप दो किनारों पर हैं। एक ओर श्रीराम हैं, जो साधन की पवित्रता पर यकीन करते हैं। यानी लक्ष्य हासिल करने के लिए अपनाया गया रास्ता सही होना चाहिए, चाहे अंतिम परिणाम कुछ भी हो। वहीं श्रीकृष्ण लक्ष्य को ज्यादा तरजीह देते हैं। मौजूदा दौर में यह ज्यादा व्यावहारिक भी है। दिलचस्प यह है कि लक्ष्य हासिल करने में रास्ते चयन की नैतिक बाधाओं को श्रीकृष्ण अपने अकाट्य तर्कों से नेस्तनाबूद कर देते हैं। यही वजह हैं कि भारतीय मिथकीय पात्रों में श्रीकृष्ण सर्वाधिक अपने से प्रतीत होने वाले देवता या नायक माने जाते है। श्रीकृष्ण अकेले ऐसे अवतार हैं, जो पूरे देश में पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सब जगह समान रुप से पूज्य हैं। यह प्रतिष्ठा भारतीय मिथकीय पात्रों में से किसी को नहीं मिली। कहा जा सकता है बाकी के सभी अवतारों में एक अभिजात्य मयार्दा है। उनके साथ इतने किन्तु-परन्तु हैं कि आमजन उनके समीप जाने से डरता है, पर श्रीकृष्ण सबके लिए हैं और सबके हैं। इसीलिए लोग श्रीकृष्ण के साथ जुड़ता है

> “ मौजूदा दौर में यह ज्यादा व्यावहारिक भी है। दिलचस्प यह है कि लक्ष्य हासिल करने में रास्ते चयन की नैतिक बाधाओं को श्रीकृष्ण अपने अकाट्य तर्कों से नेस्तनाबूद कर देते हैं। यही वजह हैं कि भारतीय मिथकीय पात्रों में श्रीकृष्ण सर्वाधिक अपने से प्रतीत होने वाले देवता या नायक माने जाते है। श्रीकृष्ण अकेले ऐसे अवतार हैं।

नाग के फन पर नृत्य किया, विदुराणी का साग खाया और गोवर्धन पर्वत को उठाकर गिरिधारी कहलाये। समय पड़ने पर उन्होंने दुर्योधन की जंघा पर भीम से प्रहार करवाया, शिशुपाल की गालियां सुनी, पर क्रोध आने पर सुदर्शन चक्र भी उठाया। और अर्जुन के सारथी बनकर उन्होंने पाण्डवों को महाभारत के संग्राम में जीत दिलवायी। सोलह कलाओं से पूर्ण वह भगवान श्रीकृष्ण ही थे, जिन्होंने मित्र धर्म के निर्वाह के लिए गरीब सुदामा के पोटली के कच्चे चावलों को खाया और बदले में उन्हें राज्य दिया। इन्हीं वजहों से श्रीकृष्ण को संपूर्ण अवतार माना जाता है। संपूर्ण कभी गलत नहीं हो सकता न कर सकता है, क्योंकि उसके बाहर है क्या जो उसकी समीक्षा करे? इसीलिए संपूर्ण में अच्छा-बुरा, सृजन-विध्वंस और धर्म-अधर्म सबकुछ शामिल होता है। कृष्ण का चरित्र भी ऐसा ही है। मतलब साफ है संपूर्ण को संपूर्ण ही समझ सकता है और स्वीकार कर सकता है। हममें से कोई संपूर्ण नहीं है, जो कृष्ण गाथा के मर्म तक पहुंच सके। हम तो अपना-अपना कृष्ण ही चुन सकते हैं। असल में लोगों ने ऐसा ही किया है।

श्री कृष्णा योगेश्वर हैं। निर्मुक्त भाव से भागेश्वर भी हैं। अर्जुन और सुदामा दोनों उनके मित्र हैं। अर्जुन से वह युद्ध करने की बात कहते हैं और सुदामा से भक्ति की, अर्थात जिसकी जो योग्यता जिस क्षेत्र में हो उस क्षेत्र का वह कर्मयोगी बने। मतलब साफ है इस सत्ता के संघर्ष से बाहर आने और विनम्र होने के लिए हमें कृष्ण के साथ एक प्रेमपूर्ण संबंध अर्थात भक्ति विकसित करने की आवश्यकता है। क्योंकि केवल दिन और विनम्र ही भगवान की कृपा प्राप्त करते हैं। भारत अनंत शक्ति का स्रोत है। यहां के 65 करोड़ युवाओं में बहुतेरे में ज्यादातर शक्तियां सोई हुई हैं। सोने का अंतिम रात्रि प्रहर भी आ गया है और शक्तियों का अब भी जागरण नहीं हो पा रहा है। आज यह श्री कृष्ण जन्मोत्सव फिर उन्हीं सुषुप्त शक्तियों के जागरण का पर्व है। वह भारत को महाभारत बनाने का घोर निनाद कर रहा है। अर्जुन रूपी युवा शक्ति जो अभी अवसाद ग्रस्त है उसके ऊपर जो तमस है, उसे हटाना होगा और श्री कृष्ण के जीवन चरित्र का जो अहर्निश कर्म वाद्य बज रहा है उसे और जोर से बजाना होगा। आज इस पवित्र पावन पर्व पर युवाओं के लिए नवनिर्माण की जिम्मेदारी स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग शेष नहीं हैं। हमें भी अपने जीवन को शक्तिशील और सृजनात्मक बनाने के लिए दुर्बलता नहीं दिखाने हैं बल्कि श्रीकृष्ण की शिक्षाओं से हाथ में अर्जुन की तरह कुदाली, बाण लेकर तब तक खोदना है जब तक की हमारी पूर्णता का जलस्रोत न मिल जाएं।

मुश्किल घड़ी में साथ होते हैं उनके आदर्श

श्री कृष्ण व्यक्ति नहीं वरन सद्प्रवृत्तियों के आदर्श के रूप में हमारे सम्मुख हैं। हर विपरीत घड़ी में उनके आदर्श हमारे सामने होते हैं। महाभारत के युद्ध में जीत का श्रेय उन्होंने अर्जुन और भीम को दिया तो प्रत्येक स्त्री को उसके प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग का श्रेय देने से भी वे नहीं चूके। जबकि इस पूरे युद्ध के महानायक श्रीकृष्ण ही थे। अपने मित्र सुदामा के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाए बिना ही उन्होंने उसके मन की बात जान ली थी। वे प्रमाण के साथ दूसरों को सबक भी सिखा देते थे। जब बहन सुभद्रा ने द्रौपदी के प्रति उनके विशेष लगाव की बात की तो बात के पीछे छिपे ईर्ष्याभाव की गहराई को वे समझ गए और उसी वक्त उन्होंने सुभद्रा को सीख देने का विचार कर लिया था। एक मौके पर सुभद्रा और द्रौपदी की मौजूदगी में श्रीकृष्ण की उंगली में छोटा-सा घाव हो गया तो पट्टी के लिए कपड़े का टुकडा तलाशते सुभद्रा इधर-उधर देखने लगी जबकि द्रौपदी ने पलभर का विलंब किए बगैर पहनी हुई बेशकीमती साड़ी का पल्लू फाड़ घाव पर बांध दिया। इसी के वशीभूत होकर श्रीकृष्ण ने भरी सभा में द्रौपदी की लाज बचाई। कृष्ण बहुत थोड़े से प्रेम में बंध जाते हैं। श्रीकृष्ण ने भगवदगीता में भगवत प्राप्ति के तीन योग बताए हैं कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग। इनमें भक्तियोग उन्हें सर्वाधिक प्रिय है। जो उन तक पहुंचने का सबसे सरल मार्ग है। श्रीकृष्ण कह गए

> समय पड़ने पर उन्होंने दुर्योधन की जंघा पर भीम से प्रहार करवाया, शिशुपाल की गालियां सुनी, पर क्रोध आने पर सुदर्शन चक्र भी उठाया। और अर्जुन के सारथी बनकर उन्होंने पाण्डवों को महाभारत के संग्राम में जीत दिलवायी। सोलह कलाओं से पूर्ण वह भगवान श्रीकृष्ण ही थे, जिन्होंने मित्र धर्म के निर्वाह के लिए गरीब सुदामा के पोटली के कच्चे चावलों को खाया ।

हैं, कलयुग में जो भी व्यक्ति माता-पिता को ईश्वर मान सेवा करेगा मुझे सबसे प्रिय होगा। कर्मयोग और भक्तियोग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भक्ति मन की वह सरल अवस्था है जो व्यक्ति की आत्मा को आश्वस्त करती है कि परमात्मा और आत्मा एक है।

आकर्षक था श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व

श्रीकृष्ण में तथा अन्य किशोरों में यही तो अंतर है कि उनकी काया सतोप्रधान तत्वों की बनी हुई थी, वे पूर्ण पवित्र संस्कारों वाले थे और उनका जन्म काम-वासना के भोग से नहीं हुआ था। मीराबाई ने तो श्रीकृष्ण की भक्ति के कारण आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया। इस बात में कोई दो राय नहीं हैं की श्रीकृष्ण भारतीयों के रोम-रोम में बसे हुये हैं, और इसीलिए ही उनके जन्मोत्सव अर्थात ह्यजन्माष्टमीह्य को भारत के हर नगर में बहुत ही उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है। श्रीकृष्ण सभी को इसलिए इतने प्रिय लगते हैं क्योंकि उनकी सतोगुणी काया, सौम्य चितवन, हर्षित मुखत और उनका शीतल स्वभाव सबके मन को मोहने वाला है और इसीलिए ही उनके जन्म, किशोरावस्था और बाद के भी सारे जीवन को लोग दैवी जीवन मानते हैं। परंतु फिर भी श्रीकृष्ण के जीवन में जो मुख्य विशेषतायें थीं और जो अनोखे प्रकार की महानता थी उसको लोग आज यथार्थ रूप में और स्पष्ट रीति से नहीं जानते। उदाहरण के तौर पर वे यह नहीं जानते कि श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व इतना आकर्षक क्यों था और वे पूज्य श्रेणी में क्यों गिने जाते हैं? एक बार फिर, उन्हें यह भी ज्ञात नहीं है कि श्रीकृष्ण ने उस उत्तम पदवी को किस उत्तम पुरूषार्थ से पाया। अतः जब तक हम उन रहस्यों को पुर्णतः जानेंगे नहीं, तब तक श्रीकृष्ण दर्शन जैसे हमारे लिए अधुरा ही रह जायेगा। अमूमन किसी नगर या देश की जनता जन्मदिन उसी व्यक्ति का मनाती की जिनके जीवन में कुछ महानता रही हो। परंतु आप देखेंगे कि महान व्यक्ति भी दो प्रकार के हुए हैं। एक तो वे जिनका जीवन जन-साधारण से काफी उच्च तो था परंतु फिर भी उनकी मनसा पूर्ण अविकारी नहीं थी, उनके संस्कार पूर्ण पवित्र न थे, वे विकमार्जीत भी नहीं थे और उनकी काया सतोप्रधान तत्वों की बनी हुई नहीं थी। अब दूसरे प्रकार के महान व्यक्ति वे हैं जो पूर्ण निर्विकारी थे। जिनके संस्कार सतोप्रधान थे और जिनका जन्म भी पवित्र एवं धन्य था अर्थात कामवासना के परिणामस्वरूप नहीं अपितु योगबल से हुआ था। श्रीकृष्ण और श्रीराम ऐसे ही पूजन योग्य व्यक्ति थे। यहां ध्यान देने के योग्य बात यह है कि पहली प्रकार के व्यक्तियों के जीवन बाल्यकाल से ही गायन या पूजने के योग्य नहीं होते बल्कि वे बाद में कोई उच्च कार्य करते हैं जिसके कारण देशवासी या नगरवासी उनका जन्मदिन मनाते हैं। परंतु श्रीकृष्ण तथा श्रीराम जैसे आदि देवता तो बाल्यावस्था से ही महात्मा थे। वे कोई संन्यास करने या शिक्षा-दीक्षा लेने के बाद पूजने के योग्य नहीं बने और इसीलिए ही उनके बाल्यावस्था के चित्रों में भी उनको प्रभामण्डल से सुशोभित दिखाया जाता है जबकि अन्यान्य महात्मा लोगों को संन्यास करने के पश्चात अथवा किसी विशेष कर्तव्य के पश्चात ही प्रभामण्डल दिया जाता है। यही वजह हैं की श्रीकृष्ण की किशोरावस्था को भी मातायें बहुत याद करती हैं और ईश्वर से मन ही मन यही प्रार्थना करती हैं कि यदि हमें बच्चा हो तो श्रीकृष्ण जैसा। श्रीकृष्ण में तथा अन्य किशोरों में यही तो अंतर है कि उनकी काया सतोप्रधान तत्वों की बनी हुई थी, वे पूर्ण पवित्र संस्कारों वाले थे और उनका जन्म योगबल द्वारा हुआ था और उनका जन्म काम-वासना के भोग से नहीं हुआ था। मीराबाई ने तो श्रीकृष्ण की भक्ति के कारण आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया और इसके लिए विष का प्याला भी पीना सहर्ष स्वीकार कर लिया। जबकि श्रीकृष्ण की भक्ति के लिए, उनका क्षणिक साक्षात्कार मात्र करने के लिए और उनसे कुछ मिनट रास रचाने के लिए भी काम-विकार का पूर्ण बहिष्कार जरूरी है।

मुहूर्त

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का हिंदू धर्म में अत्याधिक महत्व है. यह भाद्रपद माह के आठवें दिन होता है जब चंद्रमा अस्त हो रहा होता है और रोहिणी नक्षत्र चमक रहा होता है. कृष्ण जन्माष्टमी पर, जिसे गोकुलाष्टमी के नाम से भी जाना जाता है, भक्त भगवान कृष्ण को नए कपड़े पहनाते हैं और आभूषणों से सजाते हैं. इस दिन कान्हा की मूर्ति को पालने में रखकर सजाया जाता है. कहा जाता है कि इसी दिन रात्रि 12 बजे भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था. प्रभु कृष्ण विष्णु जी के आठवें अवतार माने जाते हैं. जन्माष्टमी के दिन मंदिर से लेकर हर घर में कृष्ण जन्म और पूजा की खास तैयारी की जाती है. रात्रि के के समय विधि-विधान के साथ उनकी पूजा-अर्चना कर जन्म करवाया जाता है. इस दिन मथुरा-वृंदावन में श्री कृष्ण जन्माष्टमी की खास रौनक देखी जाती है. पूरा देश इस दिन हर्ष और उल्लास के साथकृष्ण भक्ति में डूब जाता है और भगवान कृष्ण के बाल रुप की पूजा की जाती है. इस साल श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 6 सितंबर, बुधवार के दिन मनाई जाएगी. इस दिन व्रत रखने का विधान है. रात को 12 बजे के बाद कृष्ण जन्मोत्सव के बाद व्रत का पारण उनकी पूजा-अचार्ना के बाद किया जाता है. मान्याता है इस दिन पूजा-पाठ करने शुभ फल की प्राप्ति होती है. कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि की शुरूआत 6 सितंबर को दोपहर 03:37 मिनट से होगी. समापन 7 सितंबर शाम 04:14 मिनट पर होगा. पूजा मुहूर्त 6 सितंबर, बुधवार रात 11: 57 मिनट से 12:42 मिनट तक है. व्रत का पारण 7 सितंबर 6: 02 मिनट या शाम 4:14 मिनट के बाद करें।

जहां धर्म और न्याय वहीं श्रीकृष्ण

वृंदावनवासियों को कृष्ण का बाल रूप और गोपी प्रसंग ज्यादा पसंद है। चैतन्य महाप्रभु को कृष्ण का ईश्वरीय संस्करण ज्यादा नजर आता था। वहां सूफी तत्व ज्यादा दिखाई पड़ता है। गांधी जी ने गीता के निष्काम कर्म योग को अपनाने

> “ एक बार फिर, उन्हें यह भी ज्ञात नहीं है कि श्रीकृष्ण ने उस उत्तम पदवी को किस उत्तम पुरूषार्थ से पाया। अतः जब तक हम उन रहस्यों को पुर्णतः जानेंगे नहीं, तब तक श्रीकृष्ण दर्शन जैसे हमारे लिए अधुरा ही रह जायेगा। अमूमन किसी नगर या देश की जनता जन्मदिन उसी व्यक्ति का मनाती की जिनके जीवन में कुछ महानता रही हो।

की कोशिश की। और-और लोगों ने कृष्ण को और-और दृष्टि से देखा होगा। कह सकते हैं हर आदमी के भीतर कृष्ण का कोई-न-कोई पहलू मौजूद है। उन्हीं परमदयालु प्रभु के जन्म उत्सव को जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है। पौराणिक ग्रंथों के मतानुसार श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में मध्यरात्रि के समय हुआ था। अतः भाद्रपद मास में आने वाली कृष्ण पक्ष की अष्टमी को यदि रोहिणी नक्षत्र का भी संयोग हो तो वह और भी भाग्यशाली माना जाता है। इसे जन्माष्टमी के साथ साथ जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। जन्माष्टमी के महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसके व्रत को ह्यव्रतराजह्य कहा जाता है। मान्यता है कि इस एक दिन व्रत रखने से कई व्रतों का फल मिल जाता है। अगर भक्त पालने में भगवान को झुला दें, तो उनकी सारी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं। संतान, आयु और समृद्धि की प्राप्ति होती है। धर्म शास्त्रों के अनुसार इस दिन जो भी व्रत रखता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है और वह मोह-माया के जाल के मुक्त हो जाता है। यदि यह व्रत किसी विशेष कामना के लिए किया जाए तो वह कामना भी शीघ्र ही पूरी हो जाती है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आपका आत्मिक सुख जगाने का, आध्यात्मिक बल जगाने का पर्व है। जीव को श्रीकृष्ण-तत्त्व में सराबोर करने का त्यौहार है। श्रीकृष्ण का जीवन सर्वांगसंपूर्ण जीवन है। उनकी हर लीला कुछ नयी प्रेरणा देने वाली है।

उनकी हर घटना, हर लीला निराली

वैसे भी श्रीकृष्ण अवतार से जुड़ी हर घटना और उनकी हर लीला निराली है। श्रीकृष्ण के मोहक रूप का वर्णक कई धार्मिक ग्रंथों में किया गया है। सिर पर मुकुट, मुकुट में मोर पंख, पीतांबर, बांसुरी और वैजयंती की माला। ऐसे अद्भूत रूप को जो एकबार देख लेता था, वो उसी का दास बनकर रह जाता था। श्रीकृष्ण को दूध, दही और माखन बहुत प्रिय था। इसके अलावा भी उन्हें गीत-संगीत, राजनीति, प्रेम, दोस्ती व समाजसेवा से विशेष लगाव था। जो आज हमारे लिए प्रेरणाश्रोत और सबक भी है। उनकी बांसुरी के स्वरलहरियों का ही कमाल था कि वे किसी को भी मदहोश करने की क्षमता रखते थे। उन्होंने कहा भी है, अगर जिंदगी में संगीत नहीं तो आप सुनेपन से बच नहीं सकते। संगीत जीवन की उलझनों और काम के बोझ के बीच वह खुबसूरत लय है जो हमेसा आपको प्रकृति के करीब रखती है। आज के दौर में कर्कश आवाजें ज्यादा है। ऐसे में खुबसूरत ध्वनियों की एक सिंफनी आपकी सबसे बड़ी जरुरत हैं। जहां तक राजनीति का सवाल है श्रीकृष्ण ने किशोरावस्था में मथुरा आने के बाद अपना पूरा जीवन राजनीतिक हालात सुधारने में लगाया। वे कभी खुद राजा नहीं बने, लेकिन उन्होंने तत्कालीन विश्व राजनीति पर अपना प्रभाव डाला। मिथकीय इतिहास इस बात का गवाह है कि उन्होंने द्वारका में भी खुद सीधे शासन नहीं किया। उनका मानना था कि अपनी भूमिका खुद निर्धारित करो और हालात के मुताबिक कार्रवाई तय करो। महाभारत युद्ध में दर्शक रहते हुए भी वे खुद हर रणनीति बनाते और आगे कार्रवाई तय करते थे। जबकि आज पदो के पीछे भागने की दौड़ में राजनीति अपने मूल उद्देश्य को भूल रही है। ऐसे में श्रीकृष्ण की राजनीतिक शिक्षा हमें रोशनी देती हैं।

आजीवन रहे युवा

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार श्रीकृष्ण 119 वर्ष की आयु तक जीवित रहे। दिलचस्प बात यह है कि कृष्ण 119 वर्ष में भी युवा ही दिखते थे। भगवान के युवा दिखाई देने का रहस्य उनके जन्म से लेकर विष्णुलोक जाने के क्रम में छिपा हुआ है। दरअसल कान्हा का जन्म मथुरा में हुआ। लालन-पालन और बचपन गोकुल, वृंदावन, नंदगांव, बरसाना में बीता। जब वह किशोर हुए तो मथुरा पहुंचे। वहां उन्होंने अपने क्रूर मामा कंस का वध किया। और फिर वह द्वारिका में रहने लगे। किंवदंती है कि सोमनाथ मंदिर के नजदीक ही उन्होंने अपनी देह त्यागी थी। उनकी मृत्यु एक बहेलिया के तीर लगने के कारण हुई थी। हुआ यूं था कि बहेलिया ने उनके पैर को हिरण का सिर समझ तीर चलाया और तीर सीधा उनके पैर के तलुए में जा लगा। इस तरह उन्होंने अपनी देह त्याग दी। पौराणिक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि जब श्रीकृष्ण विष्णु लोक पहुंच गए तब उनके मानवीय शरीर पर न तो झुर्रियां पड़ीं थीं और न ही उनके केश सफेद हुए थे। वह 119 उम्र में भी एक युवा की तरह ही दिखाई देते थे।

पशु-पक्षियों से लगाव, तो समाजसेवा में भी आगे

वृंदावन में गोपियों के साथ रास रचाने वाले श्रीकृष्ण को पशुओं और प्रकृति से बेहद लगाव था। उनका बचपन गायों और गांवों के जीवों के इर्द-गिर्द बीता, लेकिन जब मौका आया तो उन्होंने अपने नगर के लिए समुद्र के करीब का इलाके को चुना। जहां पहाड़, पशु, पेड़, नदी-समुद्र कृष्ण की पूरी कहानी का जरुरी हिस्सा हैं। यानी श्रीकृष्ण ने जिसे चाहा टूटकर चाहा और अपने प्रिय के लिए वे किसी भी हद से गुजरे। साथ ही अपने काम को भी नहीं भूले। वे अपने सबसे प्रिय लोगों को किशोवय में छोड़कर मथुरा आएं, काम की खातिर। कहा जा सकता है प्रेम और काम के बीच उलझे आज के दौर में श्रीकृष्ण वह राह सुझाते हैं जहां दोनों के बीच तार्किक संतुलन हैं। बतौर दोस्त श्रीकृष्ण के दो रुप दिखाई देते हैं। एक सुदामा के दोस्त है, दुसरे अर्जुन के। तत्कालीन परिस्थितियों में उन्हें अर्जुन जैसे दोस्त की दरकार थी, लेकिन वे सुदामा के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी नहीं भूलते। यह श्रीकृष्ण की दोस्ती का फलसफा हैं। मतलब साफ है दोस्त को जरुरत से ज्यादा खुद पर निर्भर मत बनाओं। अर्जुन को कृष्ण लड़ने लायक बनाते है, उसके लिए खुद नहीं लड़ते। सुदामा को भी आर्थिक मदद ही करते हैं। यानी दोस्ती की छीजती सलाहियत के बीच कृष्ण दोस्त की पहचान पर जोर देते हैं। समाजसेवा के लिए श्रीकृष्ण किसी काम को छोटा नहीं समझते। अगर अर्जुन के

“ वैसे भी श्रीकृष्ण अवतार से जुड़ी हर घटना और उनकी हर लीला निराली है। श्रीकृष्ण के मोहक रूप का वर्णक कई धार्मिक ग्रंथों में किया गया है। सिर पर मुकुट, मुकुट में मोर पंख, पीतांबर, बांसुरी और वैजयंती की माला। ऐसे अद्भूत रूप को जो एकबार देख लेता था, वो उसी का दास बनकर रह जाता था। श्रीकृष्ण को दूध, दही और माखन बहुत प्रिय था।

सारथी बने तो चरवाहा या यूं कहे ग्वाला भी बनें। सुदामा के पैर धोए तो युधिष्ठिर से धुलवाया, तो उनकी पत्तल भी उठाएं। कर्म प्रधानता का पूरा शास्त्र गीता इसका बड़ा उदाहरण है। यानी काम करो, बस काम, जो भी सामने हो, जैसा भी हो। या यूं कहे कृष्ण अकर्मण्यता के खिलाफ थे। मतलब साफ है शार्टकट और पहले परिणाम जानने की दौर में श्रीकृष्ण के मार्ग ज्यादा अहम् हो जाते हैं। वे परिणाम से ज्यादा कर्म को तवज्जों देते हैं। जन्माष्टमी के मौके पर जब कोई भी भक्त उनके आदर्शो या बताएं मार्गो का अनुशरण करता है या उनकी सच्चे दिल से प्रार्थना करता है, बाल-गोपाल कन्हैया उसकी इच्छा जरूर पूरी करते हैं।

गरम दूध कृष्ण ने पीया और छाले पड़े राधा को

एक दिन रुक्मणी ने भोजन के बाद, श्री कृष्ण को दूध पीने को दिया। दूध ज्यादा गरम होने के कारण श्री कृष्ण के हृदय में लगा और उनके श्रीमुख से निकला- ह्यहे राधे!ह्य सुनते ही रुक्मणी बोलीं- प्रभु! ऐसा क्या है राधा जी में, जो आपकी हर सांस पर उनका ही नाम होता है? मैं भी तो आपसे अपार प्रेम करती हूं... फिर भी, आप हमें नहीं पुकारते!! श्री कृष्ण ने कहा -देवी! आप कभी राधा से मिली हैं? और मंद मंद मुस्काने लगे...अगले दिन रुक्मणी राधाजी से मिलने उनके महल में पहुंचीं। राधाजी के कक्ष के बाहर अत्यंत खूबसूरत स्त्री को देखा... और, उनके मुख पर तेज होने कारण उसने सोचा कि ये ही राधाजी हैं और उनके चरण छुने लगीं! तभी वो बोली -आप कौन हैं ? तब रुक्मणी ने अपना परिचय दिया और आने का कारण बताया...तब वो बोली- मैं तो राधा जी की दासी हूं। राधाजी तो सात द्वार के बाद आपको मिलेंगी। रुक्मणी ने सातों द्वार पार किये... और, हर द्वार पर एक से एक सुन्दर और तेजवान दासी को देख सोच रही थी कि अगर उनकी दासियां इतनी रूपवान हैं... तो, राधारानी स्वयं कैसी होंगी? सोचते हुए राधाजी के कक्ष में पहुंचीं... कक्ष में राधा जी को देखा- अत्यंत रूपवान तेजस्वी जिसका मुख सूर्य से भी तेज चमक रहा था। रुक्मणी सहसा ही उनके चरणों में गिर पड़ीं... पर, ये क्या राधा जी के पूरे शरीर पर तो छाले पड़े हुए हैं! रुक्मणी ने पूछा- देवी आपके शरीर पे ये छाले कैसे? तब राधा जी ने कहा- देवी! कल आपने कृष्णजी को जो दूध दिया... वो ज्यादा गरम था! जिससे उनके हृदय पर छाले पड गए... और, उनके हृदय में तो सदैव मेरा ही वास होता है..!!

श्रीकृष्ण के शरीर का नीला रंग

श्रीकृष्ण के शरीर का रंग आसमान के रंग की तरह था। जिसे हम श्याम रंग भी कहते हैं। यह रंग काला, नीला और सफेद रंग का मिश्रिण होता है। जब श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था तब उनके शरीर का रंग सामान्य मनुष्य की तरह ही था। कहते है जब श्रीकृष्ण बचपन में अपने ग्वाल सखाओं के साथ नदी किनारे गेंद से खेल रहे थे। तभी उनकी गेंद नदी में जा गिरी। गेंद को नदी से निकालने के लिए उन्होंने नदी में गए। उस नदी में कालिया नाग रहता था जिसके विष के प्रभाव से उनके शरीर का रंग श्याम हो गया था। जबकि कुछ लोग का मत है कि पूतना द्वारा बाल रूप में जब श्रीकृष्ण को स्तनपान करा रही थी उस वक्त विष पान करने से उनके शरीर का रंग श्याम वर्ण का हो गया था।

श्रीकृष्ण को पाने की सरल राह है भक्ति

राम जहां जीवन का आदर्श हमारे सामने उपस्थित करते हैं तो श्रीकृष्ण की लीलाएं भारतीय जनमानस को अपनी ओर खींचती है। यही वजह है कि प्रत्येक भारतीय के मन में श्रीकृष्ण हैं। इस देश में ऐसा एक भी राज्य नहीं होगा जहां श्रीकृष्ण का मंदिर न हो। कीर्ति, लक्ष्मी, उदारता, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य ये छः उच्च गुण जिनमें निवास करते हैं ऐसे हैं योगेश्वर श्रीकृष्ण। यही वजह है कि श्रीकृष्ण भारतीयों के मन में बसते हैं। वे सर्वाधिक आकर्षित करने वाले भगवान हैं। योगेश्वर रूप में वे जीवन का दर्शन देते हैं तो बाल रूप में रची उनकी लीलाएं भक्तों के मन को लुभाती है। अपने विभिन्न रूपों में वे भक्तों का मार्गदर्शन करते हैं। श्रीकृष्ण भगवान विष्णु के आठवें अवतार माने जाते हैं। यह भगवान विष्णु का सोलह कलाओं से पूर्ण भव्यतम अवतार है। भगवान विष्णु के दस अवतारों में श्रीराम सातवें थे और श्रीकृष्ण आठवें। भारतीय जनमानस को उत्सवप्रिय श्रीकृष्ण अपने ज्यादा निकट प्रतीत होते हैं। कृष्ण यानी आकर्षण। वे जनमानस को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। श्रीकृष्ण भक्ति पर रीझते हैं और भक्तों को संतुष्टि प्रदान करते हैं। भगवदगीता में भगवत प्राप्ति के तीन योग बताए हैं कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग। इनमें भक्तियोग श्रीकृष्ण को सर्वाधिक प्रिय है। उन तक पहुंचने का यह सबसे सरल मार्ग है। श्रीकृष्ण कह गए हैं, कलयुग में जो भी व्यक्ति माता-पिता को ईश्वर मान सेवा करेगा मुझे सबसे प्रिय होगा। कर्मयोग और भक्तियोग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भक्ति मन की वह सरल अवस्था है। यह व्यक्ति की आत्मा को आश्वस्त करती है कि परमात्मा और आत्मा एक है।

मार्शल आर्ट के जन्मदाता थे श्रीकृष्ण

मार्शल आर्ट युद्ध कला है। कहते हैं कि इसका प्रयोग सर्वप्रथम भगवान श्रीकृष्ण ने किया था। कई पौराणिक ग्रंथों में इस बात की जानकारी मिलती है, लेकिन कई पौराणिक ग्रंथ में यह भी उल्लेख मिलता है कि मार्शल आर्ट की आरंभ कलरीपायट्टु नाम से भगवान परशुराम द्वारा किया गया था। कलरीपायट्टु शस्त्र विद्या है जिसे आज के युग में मार्शल आर्ट के नाम से जाना जाता है। कलरीपायट्टु दुनिया का सबसे पुराना मार्शल आर्ट है और इसे सभी तरह के मार्शल आर्ट का जनक भी कहा जाता है। इस विद्या के माध्यम से ही श्रीकृष्ण ने चाणूर और मुष्टिक जैसे दैत्य मल्लों का वध किया था तब उनकी उम्र 16 वर्ष की थी। मथुरा में दुष्ट रजक के सिर को हथेली के प्रहार से काट दिया था। मान्यताओं के अनुसार श्रीकृष्ण ने मार्शल आर्ट का विकास ब्रज क्षेत्र के वनों में किया था। डांडिया रास उसी का एक नृत्य रूप है। कालारिपयट्टू विद्या के प्रथम आचार्य श्रीकृष्ण को ही माना जाता है। हालांकि इसके बाद इस विद्या को अगस्त्य मुनि ने प्रचारित किया था। इस विद्या के कारण ही ह्यनारायणी सेनाह्य(नारायणी सेना यानी नारायण श्रीकृष्ण की सेना। द्वापरयुग में जब दुर्योधन और अर्जुन दोनों श्रीकृष्ण से सहायता मांगने गए, तो श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को पहला अवसर प्रदान किया। श्रीकृष्ण ने कहा कि वह उसमें और उसकी सेना नारायणी सेना में एक चुन लें। दुर्योधन ने नारायणी सेना का चुनाव किया। अर्जुन ने श्रीकृष्ण का चुनाव किया था। इसे चतुरंगिनी सेना भी कहते हैं।) उस समय यह सबसे प्रहारक सेना मानी जाती थी। श्रीकृष्ण ने ही कलारिपट्टू की नींव रखी, जो बाद में बोधिधर्मन से होते हुए आधुनिक मार्शल आर्ट में विकसित हुई। बोधिधर्मन के कारण ही यह विद्या चीन, जापान आदि बौद्ध देशों में पहुंची। वर्तमान में कलरीपायट्टु विद्या विद्या केरल और कर्नाटक में प्रचलित है।

सबसे प्रिय रहे अर्जुन

भक्तियोग में अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा, श्जो भक्त आपके प्रेम में डूब रहकर आपके सगुण रूप की पूजा करते हैं वे आपको प्रिय हैं या फिर जो आपके शाश्वत, अविनाशी और निराकार रूप की पूजा करते हैं वे? दोनों में से कौन श्रेष्ठ हैं? श्रीकृष्ण बोले, श्जो लोग मुझमें अपने मन को एकाग्र करके निरंतर मेरी पूजा और भक्ति करते हैं तथा खुद को मुझे समर्पित कर देते हैं वे मेरे परम भक्त होते हैं। जो मन-बुद्धि से परे सर्वव्यापी, निराकार की आराधना करते हैं वे भी मुझे प्राप्त कर लेते हैं। मगर जो भक्त मेरे निराकार स्वरूप पर आसक्त होते हैं, उन्हें बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है क्योंकि सशरीर जीव के लिए उस रास्ते पर चलना बहुत कठिन है। मगर हे अर्जुन, जो भक्त पूरे विश्वास के साथ अपने मन को मुझमें लगाते हैं और मेरी भक्ति में लीन रहते हैं उन्हें मैं जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त कर देता हूं।

“ श्रीकृष्ण के शरीर का रंग आसमान के रंग की तरह था। जिसे हम श्याम रंग भी कहते हैं। यह रंग काला, नीला और सफेद रंग का मिश्रिण होता है। जब श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था तब उनके शरीर का रंग सामान्य मनुष्य की तरह ही था। कहते है जब श्रीकृष्ण बचपन में अपने ग्वाल सखाओं के साथ नदी किनारे गेंद से खेल रहे थे। तभी उनकी गेंद नदी में जा गिरी।

रक्षाबंधन: अब बहने भी बन रही भाई की ढाल

समय के साथ अब सब कुछ बदल रहा है। यदि बहन पर आफत पड़ने पर भाई उसकी रक्षा कर सकता है तो भाई पर मुसीबत आने पर बहन भी उसकी सहायता और रक्षा कर सकती है। ऐसे एक-दो नहीं कई उदाहरण है जहां बहनें जरूरत पड़ने पर भाई को अपनी किडनी या अन्य अंग देकर जीवनदान किया है। स्वयं के पैरों पर खड़ी ऐसी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बहनें भी हैं जिन्होंने भाइयों को आर्थिक कठिनाइयों से उबारा है। अपने प्रिय भाई को दीदियां अपने हिस्से की चॉकलेट देती आई हैं तो भाई का अपराध अपने सिर लेकर उन्हें बचपन में मां-बाप की डांट से बचाती भी आई हैं। बड़ा भाई छोटी बहन के सिर पर हाथ रखता है तो बहन भी तो ऐसा नि:स्वार्थ प्रेम करना जानती है, जिससे मुकाबला सिर्फ मां का प्यार ही कर सकता है। मतलब साफ है राखी को हम रक्षा-सूत्र के बजाए मोह का धागा भी कह सकते हैं। यह रेशमी सूत्र भाई और बहन के बीच ही नहीं, बहनों-बहनों और भाईयों-भाईयों के बीच यह अदृश्य धागा है। सच कहें तो जिस भी रिश्ते में अपनत्व भरा जुड़ाव है, मोह का यह धागा होता ही है

सुरेश गांधी

रक्षाबंधन की जड़ें हमारी संस्कृति से बहुत ही गहराई के साथ जुड़ी हुई हैं। भाई तो बहन की रक्षा करता ही है लेकिन साथ ही बहन भी अपने भाई की हर विपत्ति से रक्षा की प्रार्थना करती है। ये रंग-बिरंगे धागे भले हैं कच्चे हों, लेकिन इनमें बंधा प्यार और विश्वास बहुत मजबूत होता है जो हर विपत्ति में रक्षा करता है। हमारी संस्कृति में बहुत पहले से रक्षा सूत्र बांधने की परंपरा चली आ रही है। पंडित द्वारा मंत्रोच्चार के साथ यजमान के रक्षासूत्र बांधा जाता है तो वहीं पहले के समय में जब राजा युद्ध पर जाते थे तो उनकी रक्षा और विजय की कामना के साथ रक्षा सूत्र बांधा जाता था। पूर्व की कथाओं के अनुसार लोगों ने विपरीत परिस्थितियों में भी राखी का मान रखते हुए अपने वचन को निभाया और अपनी बहन की रक्षा को हमेशा तत्पर रहे। राखी का मतलब केवल बहन की दूसरों से रक्षा करना ही नहीं होता है बल्कि उसके अधिकारो और सपनों की रक्षा करना भी भाई का कर्तव्य होता है। राखी के दिन केवल अपनी बहन की रक्षा का संकल्प मात्र नहीं लेना चाहिए के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत के मान-सम्मान और अधिकारों की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए, ताकि सही मायनों में राखी के दायित्वों का निर्वहन रक्षा करने वाले के प्रति आभार है राखी रक्षाबंधन यानी राखी बाधना असल में एक जिम्मेदार सोच से जुड़ा भाव है। अपने कर्तव्य को निभाने का वादा है। अपने दायित्व को समझने का बोध लिए है। यही वजह है कि हमारे यहां सिर्फ भाई को ही राखी बांधने का रिवाज नहीं है। राखी के पर्व का संबंध रक्षा करने के वचन से जुड़ा है। इसीलिए जो भी

> “ पूर्व की कथाओं के अनुसार लोगों ने विपरीत परिस्थितियों में भी राखी का मान रखते हुए अपने वचन को निभाया और अपनी बहन की रक्षा को हमेशा तत्पर रहे। राखी का मतलब केवल बहन की दूसरों से रक्षा करना ही नहीं होता है बल्कि उसके अधिकारो और सपनों की रक्षा करना भी भाई का कर्तव्य होता है।

रक्षा करने वाला है उसके प्रति आभार जताने के लिए भी रक्षासूत्र बांधने की रवायत है। चाहे वो सरहद पार देश की रक्षा करने वाले सैनिक हो या पुरोहितों के यमजमान हो या सृष्टि रचयिता ईश्वर समेत उन सभी कों धर्म, जाति और वर्ग से परे भारतीय बहनें राखियां भेजती व बांधती है। रक्षाबंधन सिर्फ एक त्योहार नहीं बल्कि भाई-बहन के बीच उस अटूट रिश्ते को दशार्ता है जो रेशम के धागे से जुड़ा हुआ होता है। इस बार राखी बांधने के लिए भद्रा काल का संयोग नहीं है। या यूं किसी भी तरह का कोई ग्रहण नहीं है। इस बार रक्षाबंधन शुभ संयोग वाला और सौभाग्यशाली है। इस दिन बहनें अपने भाई की कलाई पर राखी या रक्षा सूत्र बांधकर उसकी लंबी आयु और मंगल कामना करेंगी। भाई अपनी प्यारी बहना को बदले में भेंट या उपहार देकर हमेशा उसकी रक्षा करने का वचन देगा।

रिश्ते को मजबूत बनाती है परंपराएं

रक्षाबंधन पर्व की भारतीय समाज में इतनी व्यापकता और गहराई से समाया हुआ है कि इसका सामाजिक महत्व तो है ही, धर्म, पुराण, इतिहास, साहित्य और फिल्में भी इससे अछूते नहीं हैं। गुरुकुल परंपरा के अंतर्गत शिक्षा पाने वाला युवा जब शिक्षा पूरी करने के पश्चात गुरुकुल से विदा लेता था, तो वह आचार्य का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उसे रक्षा सूत्र बांधता था, जबकि आचार्य अपने विद्यार्थी को इस कामना के साथ रक्षासूत्र बांधता था कि वह भावी जीवन में अपने ज्ञान कासमुचित ढंग से प्रयोग करे। मौजूदा समय में पूजा आदि के अवसर पर बांधा जाने वाला कलावा भी रक्षा-सूत्र का ही प्रतीक होता है, जिसमें पुरोहित और यजमान एक-दूसरे के सम्मान की रक्षा करने के लिए एक-दूसरे को अपने बंधन में बांधते हैं। रक्षा-बंधन का पर्व हमारे सामाजिक ताने-बाने में इस प्रकार रचा-बसा हुआ है कि विवाह के बाद भी बहनें भाई को राखी अवश्य बांधती हैं, फिर चाहे उनका ससुराल मायके से कितनी ही दूर क्यों न हो। या तो वे भाई के घर इसी विशेष प्रयोजन से स्वयं पहुंचती हैं अथवा भाई उनके घर आ जाते हैं। अगर आना-जाना संभव न हो, तो डाक से राखी अवश्य भेज दी जाती है। आज के दौर में महिलाओं पर जो अत्याचार बढ़ रहे हैं, उसका मूल कारण यही है कि लोग बहन की अहमियत भूलते जा रहे हैं। बेटों का वर्चस्व बढ़ने और बेटियों को उपेक्षित करने से समाज खोखला होता जा रहा है। गौर कीजिए एक समय, बहन जी शब्द में अपार आदर छलकता था और लोग किसी भी बहन के लिए न्योछावर होने के लिए तत्पर रहते थे। आज इन रिश्तों की सामाजिक अहमियत कम होने के कारण ही महिला उत्पीड़न के मामले बढ़ रहे हैं। जबकि सच यह है कि बेटियों में छिपा बहन का प्यार ही स्वस्थ समाज की बुनियाद गढ़ पायेगा।

कच्चे धागे पक्के बंधन

वैसे भी हिन्दू धर्म में स्त्रियों का मां लक्ष्मी का रूप माना जाता है। लगभग हर घर में मां लक्ष्मी मां, बहन, पत्नी और बेटी के रूप में वास करती हैं। अगर घर की महिलाएं खुश रहती हैं तो घर में धन-दौलत की कभी कमी नहीं होती है। इससे बड़ी बात और क्या होगी कि जो बहन और बेटियां दुसरे घर की अमानत हो गयी है, लेकिन रक्षाबंधन के दिन जरुर भाई की कलाई पर राखी बांधने जरुर पहुंचती हैं। बहन के राखी बांधने के बाद भाई उसे तोहफा देता है। मनु स्मृति में स्वयं मनु ने बताया है कि ऐसी तीन चीजें हैं जिन्हें घर की महिलाओं को देने से घर में खुशहाली आती है। यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवताः। माता लक्ष्मी को घर का साफ और स्वच्छ माहौल बहुत ज्यादा पसंद होता है। जिस घर के पुरुष और महिलाएं दोनों साफ-सुथरे से रहते हैं और अच्छे वस्त्र धारण करते हैं, मां लक्ष्मी उनसे काफी प्रसन्न रहती हैं। ऐसे में रक्षाबंधन के दिन आप अपनी बहन को सुन्दर वस्त्र तोहफे के रूप में दें। जो लोग ऐसा नहीं करते हैं, उन्हें जीवन में दरिद्रता का मुख देखना पड़ता है। गहनों को भी मां लक्ष्मी का प्रतिरूप माना जाता है। जिस घर की महिलाएं सुन्दर गहनों से सजती-संवरती हैं, वहां मां लक्ष्मी का बसेरा हमेशा बना रहता है। घर में कभी किसी चीज की कमी नहीं रहती है। जब भी कोई विशेष त्योहार हो उस मौके पर पुरुषों को घर की महिलाओं को तोहफे में सुन्दर गहने देने चाहिए। सभी तोहफों से बढ़कर मीठी वाणी होती है। जिस घर के पुरुष महिलाओं को सम्मान देते हैं और उनसे अच्छे से बात करते हैं, उस घर पर मां लक्ष्मी की कृपा हमेशा बनी रहती है। जिस घर की स्त्रियां चिंतित होती हैं, उस घर की तरक्की रुक जाती है। जहां महिलाएं खुश रहती हैं वहां दिन दूनी रात चैगुनी तरक्की होती है।

खुशियों की डोर रक्षाबंधन

भारत एक खुबसूरत देश है। खुबसूरत इसलिए, क्योंकि हर त्योहार की रौनक यहां दिखाई देती है। त्योहार कोई भी हो उसका जश्न धर्म, सम्प्रदाय, जाति और सामाजिक स्तर के भेदभाव से उपर उठकर दिखाई देता है। राखी भी एक ऐसा ही पर्व है, जिसमें रिश्ते खून से बढ़कर भरोसे, प्रेम, स्नेह और आत्मीयता के डोर से बंधे होते है। इसे सिर्फ हिन्दू ही नहीं, बल्कि अन्य धर्म के लोग जैसे कि सिख, जैन और ईसाई भी हर्षोल्लास के साथ इसे मनाते हैं। रक्षा के नजरिये से देखें तो, राखी का ये त्योहार देश की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा तथा लोगों के हितों की रक्षा के लिए बाँधा जाने वाला महापर्व है। जिसे धार्मिक भावना से बढकर राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाने में किसी को आपत्ति नही होनी चाहिए। भारत जैसे विशाल देश में बहने सीमा पर तैनात सैनिकों को रक्षासूत्र भेजती हैं एवं स्वंय की सुरक्षा के साथ उनकी लम्बी आयु और सफलता की कामना करती हैं। हमारे देश में राष्ट्रपति भवन में तथा प्रधानमंत्री कार्यालय में भी रक्षाबंधन का आयोजन बहुत उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन भाई-बहन के बीच प्रेम का ऐसा झरना बहता है, जो आपकी जिंदगी को खुशियों से भर देता है। इस रिश्ते का डीएनए ही कुछ ऐसा है कि मुसीबत के वक्त जब कहीं से मदद की उम्मींद नहीं होती है, तब भी कलाई पर बंधा स्नेह जिन्दगी की डोर थामने के लिए खड़ा हो जाता है। अर्थात रक्षाबंधन भाई-बहन के बीच वह रिश्ता है जिसमें गंगाजल की तरह बहनें धारा तो भाई कल-कल। बहनें टहनी तो भाई श्रीफल, बहने स्नेहिल तो भाई वत्सल या यूं कहें भाई-बहनों के सभी सवालों का जवाब है रक्षाबंधन। या यूं कहें भाई-बहन का नाता स्नेह, ममता, वात्सल्य, करुणा और रक्षा के भावों के ताने-बाने में बुना होने से अनूठा ही है। यह नाता जितना स्नेहमय है उतना ही शालीन और पावन भी। क्योंकि

> “रक्षाबंधन पर्व की भारतीय समाज में इतनी व्यापकता और गहराई से समाया हुआ है कि इसका सामाजिक महत्व तो है ही, धर्म, पुराण, इतिहास, साहित्य और फिल्में भी इससे अछूते नहीं हैं। गुरुकुल परंपरा के अंतर्गत शिक्षा पाने वाला युवा जब शिक्षा पूरी करने के पश्चात गुरुकुल से विदा लेता था, तो वह आचार्य का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उसे रक्षा सूत्र बांधता था।

इसमें जुड़ी होती है बचपन की यादें। साथ खेलना, झगड़ना, शरारतें और भी बहुत कुछ। जन्म से जुड़ा ये रिश्ता वक्त के साथ मजबूत होता जाता है। बेशक, कहने को राखी सिर्फ एक पतले से धागे को कलाई पर बांधने का त्योहार है। लेकिन, इस महीन सी डोर में जीवन को संबल व दिशा देने वाली कितनी शक्ति है, ये तो वे ही बता सकते हैं जिनके मन में बहन के प्रति प्यार बसा है। भाई-बहन का यह भाव प्राचीन काल से हमारे यहां रहा हैं। इस संबंद्ध को लेकर सबसे प्राचीन विमर्श ऋग्वेद के यम-यमी सुक्त मिलता है। यम और यमी दोनों विवस्वान यानी सूर्य की संतानें है, दोनों जुड़वा भाई-बहन है। यम अपनी बहन को इस संबंध की मयार्दा का बोध कराते हैं। भाई-बहन के बीच परस्पर रक्षा का संबंध भी एकतरफा नहीं है, केवल भाई ही बहन की रक्षा नहीं करता, बहन भी आड़े वक्त में भाई को बचाती है। रक्षाबंधन का पर्व और राखी के धागे इस पारस्परिक रक्ष्य-रक्षक संबंध के प्रतीक हैं। यूं तो नारी, मां, बेटी या पत्नी के विभिन्न रुपों में पुरुषों से जुड़ती है पर उन सब में अपनत्व और अधिकार के साथ-साथ, कहीं न कहीं कुछ पाने की लालसा रहती है। नारी का सबसे सच्चा स्वरुप बहन के रिश्ते में ही प्रकट होता है। मां-बाप भले ही लड़के-लड़कियों में भेद करें पर बहन के मन में ऐसा करने का चाव होता है जिससे भाई के जीवन में खुशहाली रहे। यही वजह है कि भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन यानी रक्षा की कामना लिए कच्चे धागों का ऐसा बंधन जो पुरातन काल से इस सृष्टि में रक्षा के आग्रह और संकल्प के साथ बांधा और बंधवाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधती हैं और उनके लिए मंगल कामना करती हैं। तो वहीं, भाई भी अपनी बहनों को इस पवित्र बंधन के बदले उपहार देने के साथ ही उसकी रक्षा करने का वचन देते हैं। कहा जा सकता है रक्षाबंधन के पर्व का संबंध रक्षा से है।

वरुण देव की पूजा से दुश्मन होते हैं परास्त

शास्त्रों के अनुसार में भद्रा के पुच्छ काल में कार्य करने से कार्यसिद्धि और विजय प्राप्त होती है। जो लोग अपने दुश्मनों को या फिर प्रतियोगियों को हराना चाहते हैं उन्हें रक्षाबंधन के दिन वरुण देव की पूजा करनी चाहिए।

कैसा रक्षासूत्र बांधें

- भाई की अच्छी शिक्षा और एकाग्रता के लिए - नारंगी रंग का रक्षासूत्र बांधें।
- भाई के शीघ्र विवाह के लिए - ऐसा रक्षासूत्र बांधें जिसमें सफेद रंग के नग लगे हों।
- भाई के विवाह सम्बन्धी समस्याओं के लिए - पीले रंग का रक्षासूत्र बांधें।
- भाई के रोजगार और आर्थिक लाभ के लिए - नीले रंग का रक्षासूत्र बांधें।
- भाई की नकारात्मक ऊर्जा और दुर्घटना से रक्षा के लिए - लाल रंग का रक्षासूत्र बांधें।
- भाई की हर प्रकार से रक्षा के लिए - लाल पीले सफेद रंग का मिश्रित रक्षासूत्र बांधें।

बहन को कैसा उपहार दें

- बहन के करियर और नौकरी के लिए- अच्छी कलम, पुस्तकें और लैम्प उपहार में दें।
- बहन के शीघ्र विवाह के लिए- सुगंध और पीले वस्त्र उपहार में दें।
- बहन के सुखद वैवाहिक जीवन के लिए- चांदी के आभूषण और चप्पल जूते उपहार में दें।
- बहन के संतान सम्बन्धी समस्याओं के लिए- बाल कृष्ण की मूर्ति और संगीत का सामान दें।
- बहन की आर्थिक सम्पन्नता के लिए- बहन को लाल वस्त्र, मिठाई और चावल उपहार में दें।

दरिद्रता दूर करने के उपाय

- अपनी बहन के हाथ से गुलाबी कपडे में अक्षत, सुपारी और एक रुपए का सिक्का ले लें।

> “भाई-बहन के बीच परस्पर रक्षा का संबंध भी एकतरफा नहीं है, केवल भाई ही बहन की रक्षा नहीं करता, बहन भी आड़े वक्त में भाई को बचाती है। रक्षाबंधन का पर्व और राखी के धागे इस पारस्परिक रक्ष्य-रक्षक संबंध के प्रतीक हैं। यूं तो नारी, मां, बेटी या पत्नी के विभिन्न रुपों में पुरुषों से जुड़ती है पर उन सब में अपनत्व और अधिकार के साथ-साथ, कहीं न कहीं कुछ पाने की लालसा रहती है।

- इसके बाद अपनी बहन को वस्त्र और मिठाई उपहार में दे दें, उनका चरण छूकर आशीर्वाद लें।
- गुलाबी कपडे में सारे सामान को बांधकर अपने धन स्थान पर रख दें।
- आपकी दरिद्रता दूर होनी शुरू हो जायेगी।

मानसिक समस्याओं को दूर करने के उपाय

- रक्षाबंधन को शाम को अपनी गोद में एक हरा पानी वाला नारियल रखें।
- इसके बाद ह्लॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमःह्ल का 108 बार जाप करें।
- जाप समाप्त हो जाने के बाद नारियल को अगले चैबीस घंटे में बहते जल में प्रवाहित कर दें।
- हर तरह की मानसिक और शारीरिक पीड़ा से मुक्ति मिलेगी।

पौराणिक मान्यताएं

रक्षाबंधन का इतिहास काफी पुराना है, जो सिंधु घाटी की सभ्यता से जुड़ा हुआ है। असल में रक्षाबंधन की परंपरा उन बहनों ने डाली थी जो सगी नहीं थीं, भले ही उन बहनों ने अपने संरक्षण के लिए ही इस पर्व की शुरूआत क्यों न की हो, लेकिन उसकी बदौलत आज भी इस त्योहार की मान्यता बरकरार है। इतिहास के पन्नों को देखें तो इस त्योहार की शुरूआत 6 हजार साल पहले माना जाता है। इसके कई साक्ष्य भी इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं। रक्षाबंधन की शुरूआत का सबसे पहला साक्ष्य रानी कर्णावती और सम्राट हुमायूं का है। मध्यकालीन युग में राजपूत और मुस्लिमों के बीच संघर्ष चल रहा था, तब चित्तौड़ के राजा की विधवा रानी कर्णावती ने गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह से अपनी और अपनी प्रजा की सुरक्षा का कोई रास्ता न निकलता देख हुमायूं को राखी भेजी थी। तब हुमायू ने उनकी रक्षा कर उन्हें बहन का दर्जा दिया था। इतिहास का एक दूसरा उदाहरण कृष्ण और द्रोपदी को माना जाता है। कृष्ण भगवान ने राजा शिशुपाल को मारा था। युद्ध के दौरान कृष्ण के बाएं हाथ की उंगली से खून बह रहा था, इसे देखकर द्रोपदी बेहद दुखी हुई और उन्होंने अपनी साड़ी का टुकड़ा चीरकर कृष्ण की उंगली में बांध दी, जिससे उनका खून बहना बंद हो गया। कहा जाता है तभी से कृष्ण ने द्रोपदी को अपनी बहन स्वीकार कर लिया था। सालों के बाद जब पांडव द्रोपदी को जुए में हार गए थे और भरी सभा में उनका चीरहरण हो रहा था, तब कृष्ण ने द्रोपदी की लाज बचाई थी। भविष्यपुराण के मुताबिक राखी ना केवल भाई बहनों के प्रेम और स्नेह का त्योहार है बल्कि यह पति-पत्नी के संबंध और उनके सुहाग से जुड़ा हुआ पर्व भी है।

सतयुग में वृत्रासुर नाम का एक असुर हुआ जिसने देवताओं के पराजित कर-के स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। इसे वरदान था कि उस पर उस समय तक बने किसी भी अस्त्र-शस्त्र का प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए इंद्र बार-बार युद्ध में हार जा रहे थे। देवताओं की विजय के लिए महर्षि दधिचि ने अपना शरीर त्याग दिया और उनकी हड्डियों से अस्त्र-शस्त्र बनाए गए। इन्हीं से इंद्र का अस्त्र वज्र भी बनाया गया। देवराज इंद्र इस अस्त्र को लेकर युद्ध के लिए जाने लगे तो पहले अपने गुरु बृहस्पति के पहुंचे और कहा कि मैं वृत्रासुर से अंतिम बार युद्ध करने जा रहा हूं। इस युद्ध में मैं विजयी होऊंगा या वीरगति को प्राप्त होकर ही लौटूंगा। देवराज इंद्र की पत्नी शची अपने पति की बातों को सुनकर चिंतित हो गई और अपने तपोबल से अभिमंत्रित करके एक रक्षासूत्र देवराज इंद्र की कलाई में बांध दी। जिस दिन इंद्राणी शची ने देवराज की कलाई में रक्षासूत्र बांधा था उस दिन श्रावण महीने की पूर्णिमा तिथि थी।

इस सूत्र को बांधकर देवराज इंद्र जब युद्ध के मैदान में उतरे तो उनका साहस और बल अद्भुत दिख रहा था। देवराज इंद्र ने वृत्रासुर का वध कर दिया और फिर से स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। यह कहानी इस बात की ओर संकेत करती है कि पति और सुहाग की रक्षा के लिए श्रावण पूर्णिमा यानी रक्षाबंधन के दिन पत्नी को भी पति की कलाई में रक्षासूत्र बांधना चाहिए। एक अन्य पौराणिक कथा के मुताबिक, रक्षाबंधन समुद्र के देवता वरूण की पूजा करने के लिए भी मनाया जाता है। आमतौर पर मछुआरें वरूण देवता को नारियल का प्रसाद और राखी अर्पित करके ये त्योहार मनाते है। इस त्योहार को नारियल पूर्णिमा भी कहा जाता है। कहते हैं एलेक्जेंडर जब पंजाब के राजा पुरुषोत्तम से हार गया था तब अपने पति की रक्षा के लिए एलेक्जेंडर की पत्नी रूख्साना ने रक्षाबंधन के त्योहार के बारे में सुनते हुए राजा पुरुषोत्तम को राखी बांधी और उन्होंने भी रूख्साना को बहन के रुप में स्वीकार किया।

इंसानियत का पर्व है रक्षाबंधन

देखा जाए तो रक्षाबंधन सिर्फ भाई-बहन का त्योहार नहीं है बल्कि ये इंसानियत का पर्व है। यह अनेकता में एकता का पर्व है, जहां जाति और धर्म के भेद-भाव को भूलकर एक इंसान दूसरे इंसान को रक्षा का वचन देता है और रक्षा सूत्र में बंध जाता है। रक्षा सूत्र के विषय में श्रीकृष्ण ने कहा था कि रक्षा सूत्र में अद्भुत शक्ति होती है। रक्षा बंधन भाई-बहन के प्यार का त्योहार है, एक मामूली सा धागा जब भाई की कलाई पर बंधता है, तो भाई भी अपनी बहन की रक्षा के लिए अपनी जान न्योछावर करने को तैयार हो जाता है। बहनों का स्नेह, प्यार और दुलार भाइयों के लिए उनके सुरक्षा कवच का काम करता है। वहीं बहनों का मान-सम्मान भाइयों की प्राथमिकता होती है। आजकल बहनें ज्यादा सजग हो गई हैं। अब वे भाइयों के पीछे नहीं, उनके बचाव में सबके सामने खड़ी होने लगी हैं। शायद इसी सेवा भाव के रिश्ते को नमन करते हुए चिकित्सा परिचर्या में लगी महिलाओं को सिस्टर कहा जाता है। वो लोग बड़े खुशकिस्मत होते हैं जिनके बहनें होती हैं क्योंकि जीवन में यह एक ऐसा पवित्र रिश्ता है जिससे आप बहुत कुछ सिखते हैं। पुरुषों के चारित्रिक विकास में मां-बाप से भी ज्यादा एक बहन का संवाद ज्यादा असर करता है। बहन से संवाद से ना केवल पुरुष के नकारात्मक विचारों में कमी आती है बल्कि उसके अंदर नारी जाति के लिए आदर भ्झी पनपता है।

बढ़ती है साझेदारी

हर रिश्ते में अब बदलाव आ रहा है। भाई बहन का रिश्ता भी और सहज और सजग हुआ है। इस बात की प्रमाणिकता पर तो मनोवैज्ञानिकों ने भी अपनी मुहर लगा दी है। आजकल आपसी रिश्तों में बिखराव तो आ रहा है पर उनमें लगाव कम भी नहीं हुआ है। कामकाजी माता-पिता हर घर की जरूरत बन चुके हैं और इसके चलते बच्चों में साझेदारी बढ़ी है। घर में बच्चों को मिल रहे खुलेपन से उनमें अपनी बात रखने का हौसला भी बढ़ा है। आपसी बातचीत से बच्चों में विकास जल्दी होता है। आजकल के बच्चे ज्यादा समझदार और परिपक्व हो रहे हैं। इसका एक फायदा ये भी हुआ है कि वो आपस की जिम्मेदारियों को भी पहले से कहीं अधिक समझने लगे हैं। बहनों ने भाईयों के साथ रिश्तों की इन जिम्मेदारियों को बांटना शुरू किया है। प्यार और सुरक्षा का भाव मैच्योरिटी लाने में सहायक हुआ है। इसी से रिश्ता मजबूत होता है।

ह्यमोह के धागेह्य से हैं जुड़े है सारे संबंध

यशराज बैनर की फिल्म ह्यदम लगा के हईशाह्य का एक गीत है, ह्यये मोह-मोह के धागे।ह्य बड़ा प्यारा गीत है। इसे नायक-नायिका नहीं गाते, यह नेपथ्य में बजता है। पर है यह रुमानियत से संबंधित गीत। मगर मोह शब्द सिर्फ इतने में ही सीमित नहीं है। दुनिया के सारे संबंध मोह के धागे से ही जुड़े हैं। मोह के अर्थ भी तो कई हैं और प्रकार भी कई। मोह के कुछ प्रकारों को निरर्थक मोह में गिना जाता है तो कुछ प्रकारों को सार्थक मोह में। मसलन किसी भी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति से मोह की अति, मोह में उससे चिपके रहना, उसे सांस लेने का अवसर न देना, अनुपयोगी वस्तुओं का संग्रह इत्यादि नकारात्मक व निरर्थक मोह की श्रेणी में आते हैं। दूसरी ओर सार्थक और जरूरी किस्म का मोह तो जीने का आकर्षण होता है, यह न हो तो व्यक्ति निर्जीव दीवार के समान हो जाए। इस प्रकार के मोह में हर प्रकार का लगाव, प्यार, स्नेह, ममता और अपनापन आता है। मोह का यह धागा दिखाई नहीं देता, बस महसूस होता है। इसकी सुगंध स्वार्गिक होती है। वह मोह जिसे अपनापन कहते हैं, इंसान के भावनात्मक जीवन के लिए ऑक्सीजन होता

“ हर रिश्ते में अब बदलाव आ रहा है। भाई बहन का रिश्ता भी और सहज और सजग हुआ है। इस बात की प्रमाणिकता पर तो मनोवैज्ञानिकों ने भी अपनी मुहर लगा दी है। आजकल आपसी रिश्तों में बिखराव तो आ रहा है पर उनमें लगाव कम भी नहीं हुआ है। कामकाजी माता-पिता हर घर की जरूरत बन चुके हैं और इसके चलते बच्चों में साझेदारी बढ़ी है। घर में बच्चों को मिल रहे खुलेपन से उनमें अपनी बात रखने का हौसला भी बढ़ा है।

है, यह कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। मोह में जाने क्या होता है कि वो आपमें जीने की ललक बनाए रखता है। मोह न हो तो जीवन रेगिस्तान हो जाए। यह वह मोह है जो गोंद नहीं, रुई का शुभ्र-श्वेत फाहा होता है जिस पर, जिससे आप प्यार करते हैं उसी का रंग चढ़ता जाता है।

बहनें खुश तो बरसेगी मां लक्ष्मी की कृपा!

रक्षाबंधन के दिन भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधना पारंपरिक रुप में भले ही भाई की ओर से बहन की रक्षा करने का प्रतीक हो, लेकिन यह शायद ही किसी को पता हो कि अगर बहनें इस दिन मेहरबान हो गयी तो भाई हो जायेगा मालामाल। घर में न सिर्फ खुशियां ही खुशियां होंगी, बल्कि धन-धान्य होने के साथ मिलेगा मां लक्ष्मी का आशीर्वाद। यह सब होगा भाई द्वारा बहनों की मनपसंद उपहारों को भेंट करने से। यह सच है कि विकास और आधुनिकता की चकाचैंध में सबसे ज्यादा असर अगर किसी पर डाला है तो वे हमारे रिश्ते ही हैं। इंटरनेट, तकनीक, एक्सपोजर और बढ़ती महत्वाकांक्षाएं ये तमाम ऐसे पहलू है जिन्होंने इंसान की सोच को बदलाव की ओर उन्मुख किया है। लेकिन भाई और बहन का एक ऐसा पवित्र रिश्ता हैं, जिसे अब भी बदलती जीवन शैली छू तक नहीं सकी है।

परंपरागत तरीके से भाई-बहन का प्रेम भरा ये रिश्ता निभाई जा रही है। उन्हीं परंपराओं में से एक है रक्षाबंधन, जो भाई और बहन के प्रेम का दिवस होता है। इस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधकर उससे खुद की सुरक्षा का भरोसा पाती है। बहन अपने भाई को सबसे ज्यादा प्रेम करती है। ज्योतिषियों की मानें तो इस दिन बहनें भाईयों पर कुछ ज्यादा ही मेहरबान होती है। इसका अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि बहनें सात समुन्दर पार से भी भाई को रक्षा बांधने चली आती है। बहनों की इस खुशी में अगर उनके मनपसंद उपहार भाईयों द्वारा दी जाएं तो वे बड़ी सहजता से देती है धन-धान्य होने का आशीर्वाद। वैसे भी हिन्दू धर्म में स्त्रियों का मां लक्ष्मी का रूप माना जाता है। लगभग हर घर में मां लक्ष्मी मां, बहन, पत्नी और बेटी के रूप में वास करती हैं। अगर घर की महिलाएं खुश रहती हैं तो घर में धन-दौलत की कभी कमी नहीं होती है। इससे बड़ी बात और क्या होगी कि जो बहन और बेटियां दुसरे घर की अमानत हो गयी है, लेकिन रक्षाबंधन के दिन जरुर भाई की कलाई पर राखी बांधने जरुर पहुंचती हैं।

बहन के राखी बांधने के बाद भाई उसे तोहफा देता है। मनु स्मृति में स्वयं मनु ने बताया है कि ऐसी तीन चीजें हैं जिन्हें घर की महिलाओं को देने से घर में खुशहाली आती है। यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवताः। माता लक्ष्मी को घर का साफ और स्वच्छ माहौल बहुत ज्यादा पसंद होता है। जिस घर के पुरुष और महिलाएं दोनों साफ-सुथरे से रहते हैं और अच्छे वस्त्र धारण करते हैं, मां लक्ष्मी उनसे काफी प्रसन्न रहती हैं। ऐसे में रक्षाबंधन के दिन आप अपनी बहन को सुन्दर वस्त्र तोहफे के रूप में दें। जो लोग ऐसा नहीं करते हैं, उन्हें जीवन में दरिद्रता का मुख देखना पड़ता है। गहनों को भी मां लक्ष्मी का प्रतिरूप माना जाता है। जिस घर की महिलाएं सुन्दर गहनों से सजती-संवरती हैं, वहां मां लक्ष्मी का बसेरा हमेशा बना रहता है। घर में कभी किसी चीज की कमी नहीं रहती है। जब भी कोई विशेष त्योहार हो उस मौके पर पुरुषों को घर की महिलाओं को तोहफे में सुन्दर गहने देने चाहिए। सभी तोहफों से बढ़कर मीठी वाणी होती है। जिस घर के पुरुष महिलाओं को सम्मान देते हैं और उनसे अच्छे से बात करते हैं, उस घर पर मां लक्ष्मी की कृपा हमेशा बनी रहती है। जिस घर की स्त्रियां चिंतित होती हैं, उस घर की तरक्की रुक जाती है। जहां महिलाएं खुश रहती हैं वहां दिन दूनी रात चैगुनी तरक्की होती है।

वृक्ष को भी बांधती है राखी

सदियों से चली आ रही रीति के मुताबिक, बहन भाई को राखी बांधने से पहले प्रकृति की सुरक्षा के लिए तुलसी और नीम के पेड़ को राखी बांधती है जिसे वृक्ष-रक्षाबंधन भी कहा जाता है। हालांकि आजकल इसका प्रचलन नही है। राखी सिर्फ बहन अपने भाई को ही नहीं बल्कि वो किसी खास दोस्त को भी राखी बांधती है जिसे वो अपना भाई जैसा समझती है और तो और रक्षाबंधन के दिन पत्नी अपने पति को और शिष्य अपने गुरु को भी राखी बांधते है।

विधि

एक थाली में रोली, चन्दन, अक्षत, दही, रक्षासूत्र और मिठाई रख लें। भाई की आरती के लिए थाली में घी का दीपक भी रखें। पूजा की थाली को सबसे पहले भगवान को समर्पित करें। ध्यान रहे कि भाई पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह कर के ही बैठे। पहले भाई को तिलक लगाएं। फिर राखी बांधे और उसके बाद आरती करें। फिर मिठाई खिलाकर भाई की मंगल कामना करें। इस बात का ख्याल रखें कि राखी बांधते समय भाई और बहन दोनों का सिर जरूर ढका हो। इसके बाद माता-पिता और गुरु का आशीर्वाद लें। भाइयों को ध्यान रखना चाहिए कि बहनों को उपहार में काले कपड़े, तीखी या नमकीन चीज ना दें। ऐसा उपहार दें जो दोनों के लिए मंगलकारी हो।

पूजन से परिवार में खुशहाली

रक्षाबंधन का ये पावन पर्व आपकी कई समस्याओं का समाधान भी बनकर आता है। रक्षाबंधन के दिन विधि-विधान से पूजन करने से मानसिक या शारीरिक समस्याओं का समाधान संभव है। इसके लिए सबसे पहले सफेद वस्त्र धारण कर-के पूजा के स्थान पर बैठें। अपनी गोद में पानी वाला एक हरा नारियल रखें। इसके बाद ओउम सोम सोमाय नमः का जाप करें। फिर नारियल को बहते हुए जल में प्रवाहित कर दें। जिन्हें नजदीकी रिश्तों में समस्या आ रही हो, वे रक्षाबंधन की शाम को चावल, दूध और चीनी की खीर बना कर शिव जी को अर्पित कर दें। इसके बाद सफेद फूल डालकर चन्द्रमा को अर्घ्य दें। खीर को प्रसाद की तरह समस्त परिवार के लोगों को दें और खुद भी ग्रहण करें। राखी बांधते समय बहनें अगर इन मंत्र का उच्चारण करती है तो भाईयों की आयु में वृद्धि होती है। जो इस प्रकार है, ह्लयेन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबलःद्व तेन त्वांमनुबध्नामि, रक्षे मा चल मा चल।।

> बहन के राखी बांधने के बाद भाई उसे तोहफा देता है। मनु स्मृति में स्वयं मनु ने बताया है कि ऐसी तीन चीजें हैं जिन्हें घर की महिलाओं को देने से घर में खुशहाली आती है। यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवताः। माता लक्ष्मी को घर का साफ और स्वच्छ माहौल बहुत ज्यादा पसंद होता है। जिस घर के पुरुष और महिलाएं दोनों साफ-सुथरे से रहते हैं और अच्छे वस्त्र धारण करते हैं।

वसुधैव कुटुंबकम से मोदी ने किया नई संभावनाओं को शंखनाद

जी-20 सम्मेलन ने इतिहास के पन्नों पर जो इबारत लिखी है उसे सदियों तक याद रखा जाएगा। इस जी-20 में पीएम मोदी ने मानव कल्याण का जो काम किया, उसे आज तक दुनिया का कोई नेता नहीं कर सका. कौशल और कूटनीति के दम पर प्रधानमंत्री ने जी-20 को इतिहास का न सिर्फ सबसे कामयाब सम्मेलन बना दिया, बल्कि विश्व के कल्याण के लिए सभी देशों को वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन का गौरवशाली संदेश भी देने की कोशिश की है। यह शिखर सम्मेलन एक पृथ्वी-एक परिवार-एक भविष्य की भावना की प्राप्ति में एक मील का पत्थर साबित होगा। मोदी ने यह मंत्र देकर नई संभावनाओं को शंखनाद कर दिया है। मतलब साफ है सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास, पीएम नरेंद्र मोदी का मंत्र अब मानवता के लिए मार्गदर्शक बन चुका है। भारत के विशेष प्रयासों से अफ्रीकी संघ को जी-20 के स्थायी सदस्य के रूप में शामिल किया जाना इसी मंत्र का प्रतीक है। विश्व के कल्याण के लिए, सभी देशों को वसुधैव कुटुंबकम (सारी दुनिया एक परिवार है) के दर्शन को अपनाना चाहिए और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ना चाहिए

सुरेश गांधी

फिरहाल, दिल्ली का भारत मंडपम दुनिया के एक शानदार जी-20 आयोजन का गवाह बना है. जी20 का सफलतापूर्वक संपंन होना, भारत के लिए एक ह्लगर्व का क्षणह्ल है. जी20 शिखर सम्मेलन के जरिए भारत ने ग्लोबल मंच पर बेहद प्रभावशाली तरीके से नेतृत्व दिखाया है। भारत स्वाभाविक रूप से ग्लोबल साउथ का लीडर बनकर भी उभरा। जी20 घोषणापत्र सभी विकासात्मक और भू-राजनीतिक मुद्दों पर 100 प्रतिशत आम सहमति के साथ ह्यऐतिहासिक और ह्यअभूतपूर्व है. शांति और समृद्धि के लिए एक शक्तिशाली आह्वान हैं. एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य पर सहमति बनी है। रुस का नाम लिए बगैर कहा गया यह युग युद्ध का नहीं है। अब ना ही परमाणु का इस्तेमाल होगा और ना ही हथियारों की तस्करी होगी। जी-20 के जरिए भारत ने न सिर्फ कूटनीति का लोहा मनवाया, बल्कि वसुधैव कुटुंबकम (सारी दुनिया एक परिवार है) का दर्शन कराते हुए अफ्रीकी संघ की एंट्री भी करा दी। खास बात यह है कि घोषणापत्र पर ना तो रूस यूक्रेन विवाद का साया पड़ा और ना ही चीन की पैंतरेबाजी काम आई. भारत रूस-यूक्रेन के विवादास्पद मुद्दे पर जी20 देशों के बीच एक अप्रत्याशित सहमति बनाने में कामयाब रहा, जिसमें ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और इंडोनेशिया जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने सफलता तक पहुंचने में अग्रणी भूमिका निभाई. मिडिल ईस्ट यूरोप कनेक्टिविटी, कॉरिडोर लॉन्च और अफ्रीकी यूनियन की एंट्री पर मुहर लगी, तो वहीं दूसरे दिन भी ग्रुप में शामिल सभी देशों के बीच सबकी सहमित से इंडिया मिडिल ईस्ट यूरोप कनेक्टिविटी कॉरिडोर लॉन्च का सबसे बड़ा फायदा ये होगा

> “ जी-20 के जरिए भारत ने न सिर्फ कूटनीति का लोहा मनवाया, बल्कि वसुधैव कुटुंबकम (सारी दुनिया एक परिवार है) का दर्शन कराते हुए अफ्रीकी संघ की एंट्री भी करा दी। खास बात यह है कि घोषणापत्र पर ना तो रूस यूक्रेन विवाद का साया पड़ा और ना ही चीन की पैंतरेबाजी काम आई. भारत रूस-यूक्रेन के विवादास्पद मुद्दे पर जी20 देशों के बीच एक अप्रत्याशित सहमति बनाने में कामयाब रहा।

कि इन्फ्रा डील से शिपिंग समय और लागत कम होगी, जिससे व्यापार सस्ता और तेज होगा. इसे चीन की बेल्ट एंड रोड परियोजना के विकल्प के रूप में पेश किया जा रहा है. इस कॉरिडोर का उद्देश्य संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), सऊदी अरब, जॉर्डन और इजराइल से होते हुए भारत से यूरोप तक फैले रेलवे मार्गों और बंदरगाह लिंकेज को एकीकृत करना है. जी-20 की सफलता को देखते हुए हम कह सकते हैं कि भारत की पहल से इस संगठन की प्रोफाइल ही चेंज हो गई है। दुनिया को संदेश गया है कि अब जी-20 विकासशील और गरीब मुल्कों को तवज्जो देने वाला संगठन बन गया है।

जबसे रूस-यूक्रेन युद्ध हुआ, भारत ने इनमें से किसी एक का पक्ष लेने के बजाय खुद की मध्यस्थ की हैसियत बनाए रखी। लेकिन इस पर कई बार गंभीर सवाल भी उठे। साथ ही, किसी बड़े मंच पर ऐसा मौका नहीं आया था, जहां भारत अपने इस रुख को साबित कर सके। लेकिन जी-20 समूह में, जहां एक ओर अमेरिका और यूरोपीय देश हैं, दूसरी ओर चीन व रूस जैसे देश हैं, वहां भारत ने न सिर्फ संतुलन बनाया, बल्कि सम्मेलन की समाप्ति के बाद दोनों धुर विरोधी पक्षों ने भारत की भूमिका को आत्मसात भी किया। इस सम्मेलन के बाद अब भारत स्वाभाविक मध्यस्थ के रूप में स्थापित हो सकता है। दिलचस्प बात है कि इसमें कई ऐसे समूह हैं, जो एक-दूसरे के विरोधी माने जाते हैं। इन सभी में भारत की सक्रिय हिस्सेदारी होने से अब भारत की तोल-मोल यानी बारगेन क्षमता बढ़ सकती है। इसका लाभ बड़ी ग्लोबल डील में अपनी शर्तें मनवाने में मिल सकता है। जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध के समय भारत ने रूस से सस्ता तेल खरीदा। कुछ वर्षों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई में भारत न सिर्फ कहता आया है कि उसका टाइम आ गया है, बल्कि तमाम विकाससील देशों के हितों की आवाज के रूप में भी उभरा है। उसका क्लाइमेक्स इस सम्मेलन में दिखा। साउथ अफ्रीका-ब्राजील-इंडोनेशिया जैसे देश तमाम विकसित देशों के सामने न सिर्फ मजबूत बनकर उभरे, बल्कि संदेश देने में भी सफल रहे कि अब कोई अजेंडा एकतरफा तय नहीं होगा। भारत ने बहुत ही विनम्रमा से विकसित देशों को उनके लिए एकतरफा फैसला नहीं लेने का गंभीर संदेश भी दे दिया। इससे न केवल दोनों देश आपस में जुड़ेंगे बल्कि एशिया, पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच आर्थिक सहयोग, ऊर्जा के विकास और डिजिटल कनेक्टिविटी को बल मिलेगा।इस कॉरिडोर के बनने के बाद भारत से मिडिल ईस्ट होते हुए यूरोप तक सामान के आयात निर्यात में काफी सुगमता देखने को मिलेगी। भारत से यूरोप तक यदि सामान भेजा जाएगा तो आने जाने में 40 फीसदी समय की बचत होगी। अभी भारत से किसी भी कार्गो को शिपिंग से जर्मनी यदि सामान पहुंचाना हो तो एक महीने से ज्यादा यानी करीब 36 दिन का समय लगता है। लेकिन इस इकोनॉमिक कॉरिडोर के बनने के बाद इस रूट से 14 दिन का समय कम हो जाएगा। यानी 22 दिन में ही सामान पहुंच जाएगा। इकोनॉमिक कॉरिडोर प्रोजेक्ट में भारत, यूएई, सउदी अरब, अमरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोपीयन यूनियन सहित कुल 8 देशों को होगा। इसका फायदा इन 8 देशों के अलावा इजरायल और जॉर्डन को भी मिलेगा।

कहा जा सकता है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा जी20 सम्मेलन की मेजबानी कामयाबी की नई कहानी गढ़ रहा है। यह मोदी की जादू का ही कमाल है कि पूरी दुनिया इस सुपर आयोजन के लिए भारत को विश्व गुरु के रुप में देख रही है। मोदी की सफल कूटनीति का ही परिणाम हे कि चीन के कॉरिडोर का चैप्टर क्लोज हो गया। जी20 मीटिंग के दौरान नई दिल्ली घोषणापत्र में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस चर्चित बयान को भी जगह दी गई है जिसमें उन्होंने रूस के राष्ट्रपति व्लादिर पुतिन से कहा था कि यह युद्ध का युग नहीं है. भारत की इसे बड़ी कूटनीतिक जीत इसलिए भी मानी जा रही है क्योंकि घोषणा पत्र में धरती, यहां के लोग, शांति, समृद्धि वाले खंड में चार बार यूक्रेन युद्ध की चर्चा की गई लेकिन रूस के नाम का एक बार भी उल्लेख नहीं किया गया फिर भी भारत ने इस पर आम सहमति बना ली. यहां जान लेना जरूरी है कि भारत-और रूस के बीच ऐतिहासिक संबंध हैं और दोनो देशों में गहरी दोस्ती है. विषम परिस्थितियों मयहें रूस ने कई बार भारत की मदद भी की है. यह कॉरिडोर सीधे तौर पर चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव को चुनौती देगा. इसके साथ ही आर्थिक गलियारे की मदद से एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़ा जाएगा और व्यापार और इन्फ्रास्ट्रक्चर नेटवर्क को स्थापित किया जाएगा. इस कॉरिडोर की मदद से एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़ा जाएगा और व्यापार और इन्फ्रास्ट्रक्चर नेटवर्क को स्थापित किया जाएगा. इस कॉरिडोर की मदद से अतिरिक्त एशियाई देशों को आकर्षित करने की कोशिश रहेगी. इससे क्षेत्र में मैन्यूफैक्चरिंग, फूड सिक्योरिटी और सप्लाई चेन को बढ़ावा मिलेगा. व्हाइट हाउस की तरफ से भारत-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर को लेकर एक फैक्ट लेटर में जानकारी दी गई. इसमें बताया कि कॉरिडोर के जरिए यूरोप, मिडिल ईस्टऔर एशिया के बीच रेलवे और समुद्री नेटवर्क स्थापित करना शामिल है. इस महत्वाकांक्षी पहल का उद्देश्य कमर्शियल हब को कनेक्ट करना, क्लीन एनर्जी का विकास और एक्सपोर्ट का सपोर्ट करना, समुद्र के नीचे केबल बिछाना, एनर्जी ग्रिड और दूरसंचार लाइनों का विस्तार करना, क्लीन एनर्जी टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देना और कम्युनिटी के लिए इंटरनेट रीच बढ़ाना, स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करना है.

भारत बना दुनिया की आवाज

देखा जाएं तो भारत ने जी20 की अध्यक्षता एक मुश्किल समय में की है। पहले तो कोरोना महामारी का संकट था और दुनिया उससे उबरने की कोशिश कर रही थी। इसके बाद यूक्रेन युद्ध छिड़ गया, जिससे तेल संकट खड़ा हो गया। इनकी वजह से खासतौर पर विकासशील देशों की हालत बहुत खराब हुई। इन्हीं मुश्किलों को ध्यान में रखकर भारत ने जी20 के अध्यक्ष के तौर पर वह वशुधैव कुटुंबकम की सोच को दुनिया के सामने रखा। इसका मकसद यह बताना था कि

> जबसे रूस-यूक्रेन युद्ध हुआ, भारत ने इनमें से किसी एक का पक्ष लेने के बजाय खुद की मध्यस्थ की हैसियत बनाए रखी। लेकिन इस पर कई बार गंभीर सवाल भी उठे। साथ ही, किसी बड़े मंच पर ऐसा मौका नहीं आया था, जहां भारत अपने इस रुख को साबित कर सके। लेकिन जी-20 समूह में, जहां एक ओर अमेरिका और यूरोपीय देश हैं, दूसरी ओर चीन व रूस जैसे देश हैं, वहां भारत ने न सिर्फ संतुलन बनाया।

दुनिया में जो भी प्रयास किए जाएं उनका दृष्टिकोण मानवी हो। यानी वह आम व्यक्ति के जीवन के लिए लाभकारी हो। साथ ही उसका महत्व पूरी दुनिया के लिए एक हो तो भारत में एक विश्व, एक कुटुंब, एक भविष्य के नारे को आगे रख जी-20 की बैठक को एक नया आयाम दिया है। जी-20 की बैठक के पहले भी होती रही है लेकिन भारत में इसका प्रारूप पूरी तरह से बदल चुक चुका है। भारत ने पहली बार जी20 की बैठक को इतने व्यापक तरीके से आयोजित किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने बैठक की अध्यक्षता मिलने पर निर्णय लिया कि हम इस बैठक को पूरे भारतवर्ष में आयोजित करेंगे। इसके बाद देश के लगभग 60 अलग-अलग शहरों में जी20 से जुड़ी 220 से अधिक बैठके हुई। इससे उन सभी जगह का लाभ होता है वहां के प्रशासन स्थानिय कंपनियों और वहां के लोगों की क्षमता का विकास होता है। आयोजन को लेकर एक तरह का उत्सव जैसा वातावरण होता है। जिससे जन भागीदारी बढ़ती है। इस प्रयास से पूरे देश में सभी लोगों कम से कम जी20 का नाम जरुर पता लग गया। कुल मिलाकर भारत ने सबको साथ लेने की बात की है। जैसे खाद्य सुरक्षा की बात हुई तो भारत ने आम मोटे अनाज का विचार सामने रखा। ऐसे ही डिजिटल और साइबर सुरक्षा जैसे मुद्दों पर भारत ने अपने डिजिटल पेमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर को उदाहरण की तरह पेश किया। जिसके तहत अगस्त महीने में 10 अरब से ज्यादा यूपीआई लेनदेन का रिकॉर्ड कायम हुआ। ऐसे ही जलवायु परिवर्तन की चर्चा पर भारत ने पर्यावरण की अनुकूल जीवन शैली को विचार रखा। सबसे बड़ी बात यह कि भारत में जी20 की बैठक में विकास सील देश या ग्लोबल साउथ कहे जाने वाले देश का प्रभावित तरीके से प्रतिनिधित्व किया और उनका आवाज बना।

टेंशन में चीन

मोदी ने जी-20 के जरिए दुनिया को संदेश दिया कि इसमें गंभीर मुद्दों के समाधान भी निकाला जा सकता है। यह अलग बात है कि भारत में जी-20 सम्मेलन की सफलता से चीन और पाकिस्तान में बौखलाहट है। भारत पश्चिम एशिया व यूरोप के बीच कॉरिडोर के ऐलान ने पाकिस्तानियों को चिंता में डाल दिया है। भारत के इस प्रस्ताव पर देशों की रजामंदी, चीन के लिए बड़े झटके से कम नहीं है. इस ऐलान से चीन के प्रोजेक्ट बीआरआई को तगड़ा झटका लगा है, जिसका भारत पहले से विरोध करता रहा है. इसमें सऊदी अरब और यूएई के शामिल होने से उन्हें लग रहा है अब पाकिस्तान अलग-थलग पड़ जाएगा। भारत की पहुंच सीधे अरब देशों और यूरोप तक हो जाएगी। दिलचस्प बात यह है कि जी-20 के मध्य हुए फैसलों से अपने हितों पर चोट पहुंचाते देखने के बावजूद चीन विरोध नहीं कर पाया। सम्मेलन में चीनी प्रधानमंत्री भले ही भारत में समावेशी विकास की बातें कर गए हो लेकिन चीनी रक्षा मंत्रालय से जुड़े चीन इंस्टीट्यूट आफ कंटेंपरेरी इंटरनेशनल रिलेशंस ने आरोप लगाया कि जी-20 की मेजबानी का उपयोग भारत अपने हितों को बढ़ाने व चीन को नुकसान पहुंचाने के लिए कर रहा है।

मोदी ने नामुमकिन को किया मुमकिन

रूस यूक्रेन युद्ध पर जिस तरह जी-20 देशों के सदस्य दो खेमें बंटे हुए थे, उसे देखते हुए बड़ी पहेली बना हुआ था की घोषणा पत्र पर सभी की सहमति बन पाएगी या नहीं। पिछले साल बाली-इंडोनेशिया में जी-20 शिखर सम्मेलन के आखिरी दिन कसमकस के बाद साझा घोषणा पत्र जारी तो हो गया पर रूस और चीन ने इससे किनारा कर लिया था। उस घोषणा पत्र में यूक्रेन पर हमले के लिए रूस की कड़ी निंदा दोनों देश को रास नहीं आई थी। रूस यूक्रेन युद्ध का मुद्दा दिल्ली घोषणा पत्र में भी प्रमुखता से शामिल किया गया है। यह अलग बात है कि इसकी भाषा ऐसी रखी गई कि ना ही रुस की सहमति में दिक्कत आई और ना ही चीन ने कोई अड़ंगा लगाया। यह घोषणा पत्र भारत की ऐसी कूटनीतिक जीत है जिसकी गूंज अंतरराष्ट्रीय मंचों पर दूर तक और देर तक सुनी जाएगी। इस कूटनीतिक जीत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और हमारी विदेश नीति के चाणक्य की टीम को जाता है। रूस यूक्रेन के मुद्दे पर इस टीम ने एक तरफ अमेरिका और यूरोपीय संघ को साधा तो दूसरी तरफ घोषणा पत्र पर रूस और चीन की सहमति भी जुटा ली। रूस यूक्रेन युद्ध पर भारत ने शुरू से तटस्थ की भूमिका में रही। जबकि पश्चिमी देश लगातार भारत पर दबाव बना रहे थे कि यूक्रेन को भी जी-20 शिखर सम्मेलन में बुलाया जाएं। भारत ने दबाव से बचकर जो रणनीति अपनाई उससे भी रूस और चीन की सहमति आसान हो गई। सम्मेलन की यह बड़ी उपलब्धि है कि जी-20 के सभी देश भारत की इस अवधारणा से सहमत है।

“ रूस यूक्रेन युद्ध पर जिस तरह जी-20 देशों के सदस्य दो खेमें बंटे हुए थे, उसे देखते हुए बड़ी पहेली बना हुआ था की घोषणा पत्र पर सभी की सहमति बन पाएगी या नहीं। पिछले साल बाली-इंडोनेशिया में जी-20 शिखर सम्मेलन के आखिरी दिन कसमकस के बाद साझा घोषणा पत्र जारी तो हो गया पर रूस और चीन ने इससे किनारा कर लिया था। उस घोषणा पत्र में यूक्रेन पर हमले के लिए रूस की कड़ी निंदा दोनों देश को रास नहीं आई थी।

कॉरीडोर से मजबूत होगी डिजिटल कनेक्टिविटी व कारोबार

जी-20 समिट में इकोनॉमिक कॉरिडोर पर बनी सहमति से न केवल दोनों देश आपस में जुड़ेंगे बल्कि एशिया, पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच आर्थिक सहयोग, ऊर्जा के विकास और डिजिटल कनेक्टिविटी को बल मिलेगा। वहीं चीन के बीआरआई को भारत-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर यानी आईएमईसी से करारा झटका लगेगा। इस प्रोजेक्ट में भारत सहित कई मिडिल ईस्ट के देश और यूरोपीयन यूनियन के देशों को फायदा मिलेगा। इस कॉरिडोर के बनने के बाद भारत से मिडिल ईस्ट होते हुए यूरोप तक सामान के आयात निर्यात में काफी सुगमता देखने को मिलेगी। भारत से यूरोप तक यदि सामान भेजा जाएगा तो आने जाने में 40 फीसदी समय की बचत होगी। अभी भारत से किसी भी कार्गो को शिपिंग से जर्मनी यदि सामान पहुंचाना हो तो एक महीने से ज्यादा यानी करीब 36 दिन का समय लगता है। लेकिन इस इकोनॉमिक कॉरिडोर के बनने के बाद इस रूट से 14 दिन का समय कम हो जाएगा। यानी 22 दिन में ही सामान पहुंच जाएगा

सुरेश गांधी

फिरहाल, इस इकोनॉमिक कॉरिडोर प्रोजेक्ट में भारत, यूएई, सउदी अरब, अमरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोपीयन यूनियन सहित कुल 8 देशों को लाभ होगा। इसका फायदा इन 8 देशों के अलावा इजरायल और जॉर्डन को भी मिलेगा। यह कॉरिडोर 6 हजार किमी लंबा होगा। इसमें करीब 3 हजार 500 किलोमीटर का हिस्सा समुद्री मार्ग होगा। इस इकोनॉमिक कॉरिडोर के बनने के बाद से ही भारत, मिडिल ईस्ट और यूरोप के बीच एक नया कारोबार सिस्टम बनेगा। जिसका फायदा भारत को निश्चित रूप से होगा। इस इकोनॉमिक कॉरिडोर में न सिर्फ भारत और मिडिल ईस्ट व यूरोप, बल्कि अमेरिका भी साझेदार है। यह पहली बार होगा जब अमेरिका और भारत मिडिल ईस्ट में भी साझेदार बने हैं। इससे पहले भारत और अमेरिका इंडोपैसिफिक क्षेत्र में साथ काम कर रहे थे। भारत की मध्य एशिया से जमीनी रूप से कनेक्टिविटी पाकिस्तान की वजह से नहीं हो पाती है। इस कनेक्टिविटी में पाकिस्तान सबसे बड़ी बाधा रहा है। इस इकोनॉमिक कॉरिडोर से पाकिस्तानी बाधा का बड़ा तोड़ मिल गया है। पाकिस्तान 1991 से ही इस कोशिश को रोकने में लगा हुआ था। निश्चित रूप से अरब देशों के साथ भारत की भागीदारी हाल के समय में बढ़ी है। ओपेक देशों खासकर सउदी अरब से द्विपक्षीय कारोबार और रणनीतिक पार्टनरशिप भी बढ़ी है। ऐसे में यूएई व अरब गवर्नमेंट भी भारत के साथ स्थाई कनेक्टिविटी बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

भारत और ईरान के संबंध हाल के समय में सुधरे हैं। चीन और पाकिस्तान के चाबहार पोर्ट की काट में भारत ईरान के ग्वादर पोर्ट को डेवलप करके मध्य एशिया तक कारोबार की कोशिश में रहा है। लेकिन अमेरिका के ईरान पर प्रतिबंधों का असर भारत के इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट पर पड़ा। लिहाजा इस वजह से भारत

> “ भारत की मध्य एशिया से जमीनी रूप से कनेक्टिविटी पाकिस्तान की वजह से नहीं हो पाती है। इस कनेक्टिविटी में पाकिस्तान सबसे बड़ी बाधा रहा है। इस इकोनॉमिक कॉरिडोर से पाकिस्तानी बाधा का बड़ा तोड़ मिल गया है। पाकिस्तान 1991 से ही इस कोशिश को रोकने में लगा हुआ था। निश्चित रूप से अरब देशों के साथ भारत की भागीदारी हाल के समय में बढ़ी है।

ने ग्वादर प्रोजेक्ट को ठंडे बस्ते में डालकर भारत-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर पर फोकस किया। अमेरिका के भी इस कॉरिडोर से जुड़ने के बाद उसे उम्मीद है कि इस मेगा कनेक्टिविटी वाले प्रोजेक्ट से अरब प्रायद्वीप में पॉलिटिकल स्टेबिलिटी आएगी। साथ ही अमेरिका और मिडिल ईस्ट के देशों के बीच रणनीतिक भागीदारी और ताकतवर होगी। वहीं भारत को भी अमेरिका और अरब व यूएई की सक्रियता का रणनीतिक लाभ मिलेगा। क्योंकि वैसे भी जब बिजनेस रिलेशन अच्छे होते हैं तो छोटे मोटे विवाद भी नजरअंदाज कर दिए जाते हैं। भारत को इस कॉरिडोर से अन्य फायदों के साथ यह फायदा भी होगा कि यह कॉरिडोर मुंबई से शुरू होगा और चीन के बीआरआई का बेहतर विकल्प होगा। यूरोप तक सीधी पहुंच से भारत के लिए सामान का आयात निर्यात करना यानी कारोबार करना और आसान हो जाएगा।

बता दें, चीन बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के बहाने कारोबार करते करते छोटे देशों को कर्ज के जाल में फंसाने की कई वर्षों से जुगत में लगा हुआ है। ऐसे में नया कॉरिडोर बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का बेहतर विकल्प बनकर उभरेगा। कई देशों को चीन के कर्ज के जाल से मुक्ति मिलेगी। जी20 में अफ्रीकी संगठन के 21वें सदस्य बनने के बाद बीआरआई के माध्यम से चीन की अफ्रीकी देशों पर कर्ज का दबाव बनाने की कोशिश को रोकने में मदद मिलेगी। भले ही चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग जी20 समिट के लिए भारत नहीं आ सके। उन्होंने पीएम ली कियांग को भारत भेज दिया, लेकिन चीन की पूरी नजर इस समिट पर गड़ी रही। जब चीन को पता चला कि उसकी महत्वाकांक्षी परियोजना बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के विकल्प के रूप में भारत-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर बनाए जाने पर सहमति हुई है तो वह बौखला गया। चीन का आरोप है कि दिल्ली में आयोजित जी20 समिट में एकबार फिर अमेरिका ने अपनी पुरानी योजना को ही आगे बढ़ाया है। अमेरिका ने पहले भी इस योजना के विस्तार का खाका पेश किया है। इस इकोनॉमिक कॉरिडोर प्रोजेक्ट का उद्देश्य चीन को दुनिया में आइसोलेट करना है। चीन ने इस कॉरिडोर के बहाने अमेरिका पर अपनी भड़ास निकाली है।

जी-20 में मिली सनातन संस्कृति को जगह

इस समिट की सबसे खास बात यह है कि इसके जरिए सनातन धर्म की जबरदस्त ब्रांडिंग की गयी है। नटराज की विशाल मूर्ति, कोणार्क और ननालंदा का झलक, कंट्री प्लेट पर इंडिया नाम की बजाय भारत और साबरमती आश्रम की बैकग्राउंड में लगी तस्वीरे इस बात का संकेत है कि आने वाला दिन सनातन धर्म की ही है। नटराज की विशाल मूर्ति, कोणार्क और नालंदा का झलक, कंट्री प्लेट पर इंडिया नाम की बजाय भारत और साबरमती आश्रम. जी हां, ये भारत के सनातन धर्म को प्रदर्शित कर रहे है। भारत मंडपम में कन्वेंशन हॉल के प्रवेश द्वार पर 28 फुट ऊंची नटराज की प्रतिमा लगाई गई थी. यह प्रतिमा भगवान शिव को नृत्य के देवता और सृजन और विनाश के रूप में परिभाषित करती है. भारत मंडपम में नटराज की प्रतिमा का लगाने के पीछे धार्मिक और ऐतिहासिक दोनों कारण थे. नटराज का ये स्वरूप शिव के आनंद तांडव का प्रतीक है. नटराज की प्रतिमा में आपको भगवान शिव की नृत्य मुद्रा नजर आएगी. साथ ही वो एक पांव से दानव को दबाए हैं. ऐसे में शिव का ये स्वरूप बुराई के नाश करने और नृत्य के जरिए सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने का संदेश देता है. प्रधानमंत्री मोदी सुबह जब महात्मा गांधी के समाधिस्थल पर मेहमानों का स्वागत कर रहे थे तो उसके बैकग्राउंड में साबरमती आश्रम की कुटी के चित्र लगाएं थे। यह वहीं आश्रम है, जहां से भारत को आजाद कराने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन की शुरूआत महात्मा गांधी ने की थी. साबरमती आश्रम उस आदर्श का घर बन गया जिसने भारत को स्वतंत्र बना दिया. साबरमती आश्रम आज प्रेरणा और मार्गदर्शन स्त्रोत के रूप में सेवा करता है. इससे पहले पीएम मोदी शनिवार को जब जी20 शिखर सम्मेलन में विदेशी नेताओं का स्वागत कर रहे थे तो उनके बैकग्राउंड में ओडिशा के मशहूर कोणार्क मंदिर का सूर्य चक्र बना हुआ था. पीएम मोदी ने मेहमानों को कोणार्क सूर्य मंदिर और चक्र के बारे में भी जानकारी दी थी. वहीं, भारत मंडपम में राष्ट्रपति की ओर से डिनर का आयोजन किया गया. इस दौरान वेलकम स्टेज के बैकग्राउंड में नालंदा विश्वविद्यालय की झलक दिखाई दी. प्रधानमंत्री मोदी जी20 के कुछ नेताओं को विश्वविद्यालय का महत्व बताते हुए भी दिखे. वहीं, राष्ट्रपति मुर्मू ने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक सहित जी20 के नेताओ को नालंदा यूनिवर्सिटी के महत्व के बारे में समझाया. बता दें कि नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत की प्रगति को दशार्ता है.

दो अलग-अलग गलियारे बनाए जाएंगे

एमओयू के अनुसार, दो अलग-अलग गलियारे शामिल होंगे. पूर्वी गलियारा भारत को अरब की खाड़ी से जोड़ेगा और उत्तरी गलियारा अरब की खाड़ी को यूरोप से जोड़ेगा. इसमें एक रेलवे नेटवर्क की सुविधा होगी जोमौजूदा समुद्री और सड़क परिवहन मार्गों के रूप में विश्वसनीय और लागत प्रभावी क्रॉस बॉर्डर शिप टू रेल ट्रांजिट सुविधा देने के लिए डिजाइन किया गया है. मुखमुख्य रूप से मिडिल ईस्ट से होकर गुजरने वाले इस रेलवे मार्ग में बिजली के केबल और क्लीन हाइड्रोजन पाइपलाइन बिछाने की योजनाएं शामिल हैं. व्हाइट हाउस की रिपोर्ट में कहा गया है कि रेल सौदा भारत से यूएई, सऊदी अरब, जॉर्डन और इजराइल के माध्यम से यूरोपतक शिपिंग और रेल लाइनों को जोड़ेगा. अब प्रोजेक्ट में शामिल देश अगले 60 दिन में कॉरिडोर को लेकर एक कार्य योजना तैयार करेंगे. इसमें ट्रांजिट रूट्स, कोऑर्डिनेशन बॉडी और टेक्निकल पहलुओं पर ज्यादा जानकारी के लिए चर्चा की जाएगी. भारत सरकार के सूत्रों के मुताबिक, इसमें शामिल सभी देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करते हुए परामर्शात्मक,

> चीन बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के बहाने कारोबार करते करते छोटे देशों को कर्ज के जाल में फंसाने की कई वर्षों से जुगत में लगा हुआ है। ऐसे में नया कॉरिडोर बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का बेहतर विकल्प बनकर उभरेगा। कई देशों को चीन के कर्ज के जाल से मुक्ति मिलेगी। जी20 में अफ्रीकी संगठन के 21वें सदस्य बनने के बाद बीआरआई के माध्यम से चीन की अफ्रीकी देशों पर कर्ज का दबाव बनाने की कोशिश को रोकने में मदद मिलेगी।

पारदर्शी और भागीदारीपूर्ण कनेक्टिविटी पहल की महत्व पर जोर दिया गया है.

पूरी दुनिया की कनेक्टविटी मिलेगी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे मानवीय प्रयास और महाद्वीपों में एकता का एक प्रमाण बताया है. उन्होंने कहा, राष्ट्रपति बाइडेन, मोहम्मद बिन सलमान, शेख मोहम्मद बिन जायद, मैक्रो समेत सभी देशों के प्रमुखों को इस इनिशिएटिव के लिए बहुत बधाई देता हूं. मजबूत कनेक्टिविटी और इन्फ्रस्ट्रक्चर मानव सभ्यता के विकास का मूल आधार है. आने वाले समय में भारत पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच यह आर्थिक एकीकरण का प्रभावी माध्यम बनेगा. यह पूरी दुनिया की कनेक्टिविटी और सतत विकास को नई दिशा देगा. जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इसे वाकई में एक बड़ी उपलब्धि माना. बाइडेन ने कहा, दुनिया इतिहास के एक मोड़ पर खड़ी है. एक ऐसा पॉइंट, जहां हम आज जो निर्णय लेते हैं वह हमारे भविष्य की दिशा को प्रभावित करने वाले हैं. नए भारत-मिडिल ईस्ट-यूरोप आर्थिक गलियारे में इजराइल और जॉर्डन भी शामिल हैं.

रूस को संदेश

बैठक के दौरान यूक्रेन युद्ध के मामले में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और महासभा में अपनाए गए प्रस्तावों को दोहराया गया और कहा गया कि सभी देशों को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप ही काम करना चाहिए. इस घोषणा पत्र के जरिए रूस को संदेश दिया गया कि किसी भी देश की अखंडता, संप्रुभता का उल्लंघन और इसके लिए धमकी या बल के प्रयोग से बचना चाहिए. परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की धमकी देना अस्वीकार्य है. बीते साल रूस द्वारा पश्चिमी देशों को परमाणु हमले की धमकी के संदर्भ में भी इस बयान को देखा जा रहा है. नई दिल्ली घोषणापत्र को इसलिए भी भारत की बड़ी जीत के तौर पर देखा जा रहा है कि राजधानी में आयोजित जी20 समिट में शुरूआत में यूक्रेन युद्ध और जलवायु परिवर्तन से जुड़े मुद्दों को शामिल किए जाने पर रूस और चीन ने आपत्ति जताई थी. यही वजह है कि समिट में मीटिंग के दौरान इस पर सहमति नहीं बनने के बाद यूकेन युद्ध से जुड़े पैराग्राफ को खाली छोड़ दिया गया था. लेकिन दुसरे दिन की मीटिंग में यूक्रेन युद्ध, जलवायु परिवर्तन, लैंगिक असमानता, आर्थिक चुनौतियां, आतंकवाद समेत कई मुद्दों पर सदस्य देशों के बीच आम सहमति बनाने में कामयाब हो गया।

स्वास्थ्य को लेकर गंभीरता

आज वैश्विक स्तर पर सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित करने की दृष्टि से महिलाओं बच्चों और किशोर के स्वास्थ्य में निवेश बेहद महत्वपूर्ण है। इसलिए जी-20 को अब महिलाओं, बच्चों व किशारों के स्वास्थ्य में सुधार लाने और इसे रोकी जा सकने वाली जीवन की सुविधाओं के लिए पहल करनी होगी। आंकड़ों के मुताबिक हर वर्ष सभी जी-20 देशों में लगभग 20 लाख माताएं, नवजात शिशुओं और किशोरों की मौतें होती है। इनमें मृत बच्चों का जन्म भी शामिल है। इन सभी मौतों को रोका जा सकता है। लेकिन इसके प्रमुख नकारात्मक कारकों पर ध्यान देना होगा। जलवायु परिवर्तन और जीवन यापन में बदलाव लाना होगा और इसके कॉस्ट ऑफ लिविंग क्राइसिस को खत्म करना होगा। खाद्य सुरक्षा व गरीबी में वृद्धि दर को कम करना होगा। वर्ष 2000 में जलवायु संबंधी आपातकालों से दुनिया भर में डेढ़ लाख से अधिक मौतें हुई और बेसिक स्तर पर बीमारी के बढ़ते बोझ की वजह से से 88 फीसदी हिस्सा बच्चों पर ही पड़ा था। एक अनुमान के अनुसार जलवायु आपातकाल से विस्थापित होने वाले लोगों में से 80 फीसदी महिलाएं हैं। और इसका मुख्य कारण लैंगिक आधार पर होने वाली आर्थिक सामाजिक असमानताएं हैं। ऐसे में इस अहम मसले कसे भी जी-20 में शामिल करना चाहिए। उदाहरण के लिए 2021 में शुरू की गई डिजिटल रणनीति के हिस्से के रूप में भारत ने डिजिटल स्वास्थ्य समाधान से संबंधित कई पहलों का प्रस्ताव दिया है। भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य और महामारी संबंधी बेहतर तैयारी एवं उपाय से जुड़े प्रयासों पर जलवायु संकट के प्रभाव को देखते हुए जलवायु स्वास्थ्य संबंध से जुड़ी पहलो का प्रस्ताव भी दिया है। यह सुनिश्चित करना बेहद अहम है कि यह सभी पहल लैंगिक और उम्र की दृष्टि से संवेदनशील हो।

> “ बैठक के दौरान यूक्रेन युद्ध के मामले में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और महासभा में अपनाए गए प्रस्तावों को दोहराया गया और कहा गया कि सभी देशों को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप ही काम करना चाहिए. इस घोषणा पत्र के जरिए रूस को संदेश दिया गया कि किसी भी देश की अखंडता, संप्रुभता का उल्लंघन और इसके लिए धमकी या बल के प्रयोग से बचना चाहिए. परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की धमकी देना अस्वीकार्य है।

पत्रकारों के लिए व्यक्तिगत अभिलेखों की शक्ति

संभावनाओं को खोलना और विरासतों को संरक्षित करना

कुमुद रंजन सिंह

आज के डिजिटल युग में, पत्रकारों को अपने काम का रिकॉर्ड बनाए रखते हुए बड़ी मात्रा में जानकारी प्रबंधित करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। व्यक्तिगत संग्रह बनाना न केवल आसान पुनर्प्राप्ति और संदर्भ के लिए बल्कि पत्रकारिता विरासत को संरक्षित करने के लिए भी आवश्यक हो गया है। यह लेख सूचना पुनर्प्राप्ति से परे पत्रकारों के लिए व्यक्तिगत अभिलेखागार के मूल्य की पड़ताल करता है, उनके व्यापक लाभों और संभावित उपयोगों पर प्रकाश डालता है।

1. पत्रकारिता विरासत का संरक्षण:

एक व्यक्तिगत संग्रह पत्रकारों को भावी पीढ़ियों के लिए अपने काम को सुरक्षित रखने की अनुमति देता है। समाचार लेखों, रिपोर्टों और साक्षात्कारों को संग्रहीत करके, पत्रकार अपनी पेशेवर यात्रा का एक व्यापक रिकॉर्ड बनाते हैं, जो इतिहासकारों, शोधकताओं और पत्रकारिता के छात्रों के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में काम कर सकता है।

2. अनुसंधान और संदर्भ को सुव्यवस्थित करना:

एक संगठित डिजिटल संग्रह पत्रकारों को पिछले लेखों, रिपोर्टों और शोध सामग्रियों को कुशलतापूर्वक पुनः प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। नई कहानियों या लेखों पर काम करते समय, पत्रकार अंतर्दृष्टि प्राप्त करने, तथ्यों की जांच करने और अपने पिछले काम को आगे बढ़ाने के लिए अपने अभिलेखागार का संदर्भ ले सकते हैं। इससे समय की बचत होती है और लगातार पत्रकारिता की आवाज को बनाए रखते हुए सटीकता सुनिश्चित होती है।

3. प्रेरणा और कहानी विकास:

व्यक्तिगत अभिलेखागार पत्रकारों को प्रेरणा और कहानी के विचारों का एक समृद्ध स्रोत प्रदान करते हैं। पिछले काम की समीक्षा करने से नए दृष्टिकोण सामने आ सकते हैं, आवर्ती विषयों की पहचान करने में मदद मिल सकती है और चल रहे मुद्दों पर नए दृष्टिकोण सामने आ सकते हैं। अपने संग्रह की खोज करके, पत्रकार अनदेखी कहानियों को उजागर कर सकते हैं या अतीत और वर्तमान घटनाओं के बीच संबंध बना सकते हैं।

4. विशेषज्ञता और विशेषज्ञता का निमार्ण:

एक व्यक्तिगत संग्रह पत्रकारों को विशिष्ट विषय क्षेत्रों में विशेषज्ञता विकसित करने में मदद करता है। लेखों, शोध सामग्रियों और विशेषज्ञ साक्षात्कारों का एक वगीर्कृत संग्रह बनाए रखकर, पत्रकार अपने ज्ञान को गहरा कर सकते हैं और अपने चुने हुए क्षेत्रों में विश्वसनीय अधिकारी बन सकते हैं। यह संग्रह चल रहे व्यावसायिक विकास के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में कार्य करता है।

5. व्यक्तिगत विकास और प्रगति पर नजर रखना:

पत्रकार अपने व्यक्तिगत अभिलेखागार के माध्यम से अपनी वृद्धि और प्रगति को ट्रैक कर सकते हैं। पहले के काम पर दोबारा गौर करके, वे अपनी लेखन शैली, खोजी तकनीकों और रिपोर्टिंग कौशल पर विचार कर सकते हैं। यह स्व-मूल्यांकन सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने, पेशेवर विकास को मापने और उनके पत्रकारिता दृष्टिकोण को परिष्कृत करने में मदद करता है।

6. मल्टीमीडिया सामग्री संग्रहित करना:

पाठ-आधारित सामग्रियों के अलावा, व्यक्तिगत अभिलेखागार में फोटोग्राफ,

वीडियो और ऑडियो रिकॉर्डिंग जैसी मल्टीमीडिया सामग्री शामिल हो सकती है। ये संपत्तियाँ एक पत्रकार के फील्डवर्क, साक्षात्कार और दृश्य कहानी कहने का एक व्यापक रिकॉर्ड प्रदान करती हैं। मल्टीमीडिया अभिलेखागार मल्टीमीडिया-समृद्ध कहानी कहने में योगदान देता है और पत्रकारिता कार्य के समग्र प्रभाव को बढ़ाता है।

7. दर्शकों से जुड़ना और विश्वास बनाना:

पत्रकार अपने दर्शकों के साथ जुड़ने और विश्वास कायम करने के लिए अपने निजी अभिलेखों का लाभ उठा सकते हैं। उल्लेखनीय लेख, पर्दे के पीछे की अंतर्दृष्टि और उनके संग्रह से व्यक्तिगत प्रतिबिंब साझा करने से पारदर्शिता बनती है और पाठकों के साथ गहरा संबंध बनता है। यह पत्रकारों को अपने काम के विकास को प्रदर्शित करने और सटीक और गहन रिपोर्टिंग के प्रति अपने समर्पण को प्रदर्शित करने की भी अनुमति देता है।

कुल मिलाकर एक व्यक्तिगत संग्रह पत्रकारों के लिए सूचना पुनर्प्राप्ति से परे एक मूल्यवान उपकरण के रूप में कार्य करता है। यह पत्रकारिता की विरासत को संरक्षित करता है, अनुसंधान को सुव्यवस्थित करता है, रचनात्मकता को जगाता है और पेशेवर विकास को सुविधाजनक बनाता है। अपने अभिलेखों को संकलित और व्यवस्थित करने में समय निवेश करके, पत्रकार अपने पिछले काम की पूरी क्षमता को उजागर कर सकते हैं, अपनी विशेषज्ञता को मजबूत कर सकते हैं और पत्रकारिता के क्षेत्र पर एक स्थायी प्रभाव बना सकते हैं।

> “ पत्रकार अपने दर्शकों के साथ जुड़ने और विश्वास कायम करने के लिए अपने निजी अभिलेखों का लाभ उठा सकते हैं। उल्लेखनीय लेख, पर्दे के पीछे की अंतर्दृष्टि और उनके संग्रह से व्यक्तिगत प्रतिबिंब साझा करने से पारदर्शिता बनती है और पाठकों के साथ गहरा संबंध बनता है। यह पत्रकारों को अपने काम के विकास को प्रदर्शित करने और सटीक और गहन रिपोर्टिंग के प्रति अपने समर्पण को प्रदर्शित करने की भी अनुमति देता है।

प्रेस एवं पत्र-पत्रिका पंजीकरण विधेयक-2023 से प्रेस को मिलेगी अधिक स्वतंत्रता

जितेन्द्र कुमार सिन्हा

राज्य सभा में ह्लप्रेस एवं पत्र-पत्रिका पंजीकरण विधेयक-2023ह्व ध्वनि मत से पारित हो गया है। प्रेस एवं पत्र-पत्रिका पंजीकरण विधेयक-2023 को इसलिए लाया गया है कि ह्लप्रेस और पुस्तक अधिनियम, 1867ह्व को निरस्त किया जा सके, क्योंकि नये विधेयक द्वारा पत्र पत्रिकाओं के शीर्षक सत्यापन और पंजीकरण की ऑन लाइन प्रक्रिया को सरल बनाया जाय।इस विधेयक में समाचार पत्र के प्रसार संख्या और सत्यापन का भी समावेश किया गया है। साथ ही इसमें भारत में विदेशी पत्रिकाओं के संस्करणों के प्रकाशन के लिए केन्द्र सरकार द्वारा पूर्व मंजूरी का भी प्रावधान किया गया है।

विधेयक में प्रेस और अपीलीय बोर्ड का प्रावधान है, जिसमें प्रेस परिषद के अध्यक्ष और इसके सदस्यों में से प्रेस परिषद द्वारा नामित दो सदस्य शामिल होंगे।विधेयक के अनुसार प्रकाशक पत्रिका के पंजीकरण प्रमाणपत्र शीर्षक में संशोधन के लिए प्रेस रजिस्ट्रार को आवेदन कर सकता है।

विधेयक का उदेश्य समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की पंजीकरण प्रक्रिया को और अधिक सरल बनाना है। पंजीकरण प्रक्रिया निर्धारित 60 दिनों की अवधि में पूरी की जाएगी। इस विधेयक को लागू हो जाने पर पंजीकरण प्रक्रिया आठ चरण के बजाय केवल एक चरण में ही पूरी कर ली जाएगी। समाचार पत्र और पत्रिकाओं के प्रकाशकों को जिलाधिकारी और भारत के समाचार पत्र पंजीयक (आर एन आई) के प्रेस रजिस्ट्रार को ऑनलाइन आवेदन देना होगा।

इस विधेयक से प्रेस को अधिक स्वतंत्रता मिलेगी। यह विधेयक दोनों सदनों से पारित हो जाता है तो यह कानून भारत में समाचार पत्र-पत्रिकाओं को पंजीकृत करने की प्रक्रिया को आसान बना देगा और प्रेस और पुस्तक पंजीकरण अधिनियम, 1867 का स्थान ले लेगा।

नये विधेयक में आतंकवादी गतिविधियों में शामिल लोगों को समाचार पत्र और पत्रिकाओं के प्रकाशन की अनुमति नहीं मिल पायेगी। पहले छोटे अपराधों के लिए जुमार्ना और छह महीने की कैद का प्रावधान था, लेकिन अब ज्यादातर प्रावधानों को अपराध की श्रेणी से हटा दिया गया है। अब नियमों का उल्लंघन करने पर सिर्फ जुमार्ना लगाया जाएगा। विधेयक को सरल, बेहतर और कारोबारी सुगमता को बढ़ावा देने वाला है। यह विधेयक इसे साबित करता है कि वर्तमान सरकार प्रेस की स्वतंत्रता की समर्थक है। यह विधेयक, बदलते मीडिया परिदृश्य के अनुरूप है।

> “ विधेयक में प्रेस और अपीलीय बोर्ड का प्रावधान है, जिसमें प्रेस परिषद के अध्यक्ष और इसके सदस्यों में से प्रेस परिषद द्वारा नामित दो सदस्य शामिल होंगे।विधेयक के अनुसार प्रकाशक पत्रिका के पंजीकरण प्रमाणपत्र शीर्षक में संशोधन के लिए प्रेस रजिस्ट्रार को आवेदन कर सकता है। विधेयक का उदेश्य समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की पंजीकरण प्रक्रिया को और अधिक सरल बनाना है। पंजीकरण प्रक्रिया निर्धारित 60 दिनों की अवधि में पूरी की जाएगी।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 6 सितम्बर को मनाया जाएगा

जितेन्द्र कुमार सिन्हा

भगवान कृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र, निशिथ काल मध्‍ य रात्रि द्वापर युग में हुआ था। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अष्टमी तिथि का आरंभ 6 सितम्बर को अपराह्न 3 बजकर 37 मिनट से प्रारम्भ होकर 7 सितम्बर को शाम 4 बजकर 14 मिनट तक रहेगी।

जबकि रोहिणी नक्षत्र का आरंभ 6 सितम्बर को सुबह 9 बजकर 20 मिनट से होगा और 7 सितम्बर को सुबह 10 बजकर 25 मिनट तक रहेगा। इसलिए श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत 6 सितम्बर को गृहस्थ लोग मनायेंगे।

भविष्य पुराण के अनुसार, जहां श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत उत्सव मनाया जाता है, वहां पर प्राकृतिक प्रकोप या महामारी का ताण्डव नहीं होता। व्रत करने वाले का क्लेश दूर हो जाता हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, द्वापर युग में पृथ्वी पर राक्षसों के अत्याचार बढ़ने लगा था। राक्षसों के अत्याचार को देखते हुए पृथ्वी गाय का रूप धारण कर ब्रह्माजी के पास गई और व्यथा सुनाकर उद्धार का उपाय जानना चाही। ब्रह्मा जी देवताओं के साथ गाय रूपी पृथ्वी को क्षीरसागर में जहां भगवान श्रीकृष्ण अनन्त शैया पर शयन कर रहे थे, के पास ले गये। स्तुति करने पर भगवान की निद्रा भंग हुई। गाय रूपी पृथ्वी ने पूरी कथा बतायी और पाप के बोझ से उद्धार के लिए अनुरोध की। यह सुनकर भगवान श्रीकृष्ण बोले। मैं ब्रज मंडल में वासुदेव की पत्नी देवकी के गर्भ से जन्म लूंगा। आपलोग ब्रज भूमि में जाकर यादव वंश में अपना शरीर धारण कीजिए। यह कहकर भगवान अंतर्ध्यान हो गए।

भगवान श्रीकृष्ण द्वापर युग के अंत में मथुरा में उग्रसेन नाम के एक राजा राज्य करते थे। उग्रसेन के पुत्र का नाम कंस था। कंस ने उग्रसेन को बलपूर्वक सिंहासन से उतारकर जेल में डाल दिया और स्वयं राजा बन गया।कंस की बहन देवकी का विवाह यादव कुल में वासुदेव के साथ हुआ। जब कंस देवकी को विदा करने के लिए रथ के साथ जा रहा था, तो आकाशवाणी से देवकी के आठवें पुत्र के हाथ से अपनी मृत्यु की बात सुनकर कंस क्रोध में भरकर देवकी को मारने को तैयार हो गया। ताकि न देवकी रहेगी और न ही उसका कोई पुत्र होगा।

देवकी के पति वासुदेव जी ने कंस को बहुत समझाया कि तुम्हें देवकी से तो कोई भय नहीं है। देवकी की आठवीं संतान से तुम्हें भय है। इसलिए उसकी

“ पौराणिक कथाओं के अनुसार, द्वापर युग में पृथ्वी पर राक्षसों के अत्याचार बढ़ने लगा था। राक्षसों के अत्याचार को देखते हुए पृथ्वी गाय का रूप धारण कर ब्रह्माजी के पास गई और व्यथा सुनाकर उद्धार का उपाय जानना चाही। ब्रह्मा जी देवताओं के साथ गाय रूपी पृथ्वी को क्षीरसागर में जहां भगवान श्रीकृष्ण अनन्त शैया पर शयन कर रहे थे, के पास ले गये। स्तुति करने पर भगवान की निद्रा भंग हुई।

आठवीं संतान को मै तुम्हें सौंप दूंगा। तुम्हारी समझ में जो आये, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना। कंस ने वासुदेवजी की बात को स्वीकार कर लिया लेकिन वासुदेव और देवकी को कारागार में बंद कर दिया।

उसी समय नारद जी वहां पहुंचे और कंस से पूछा कि यह कैसे पता चलेगा कि आठवां गर्भ कौन सा होगा। गिनती प्रथम से या अंतिम गर्भ से शुरू होगी। इस तरह कंस संसय में पड़ गया और नारद जी से परामर्श कर देवकी के गर्भ से उत्पन्न होने वाले समस्त बालकों को मारने का निश्चय कर लिया। इस प्रकार एक-एक कर देवकी की सातों संतानों को निर्दयतापूर्वक कंस ने मार डाला।

भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। उनके जन्म होते ही जेल की कोठरी में प्रकाश फैल गया। वासुदेव देवकी के सामने शंख, चक्र, गदा एवं पद्मधारी चतुर्भुज से अपना रूप प्रकट कर श्री कृष्ण ने कहा कि अब मैं बालक का रूप धारण करता हूँ। आप मुझे तत्काल गोकुल में नंद के घर जहां अभी-अभी कन्या जन्मी है उससे मुझे बदल देना और कन्या को यहाँ लाकर कंस को सौंप देना। ऐसा कहने के साथ ही तत्काल वासुदेवजी की हथकड़ियां, कोठरी के दरवाजे अपने आप खुल गये और सभी पहरेदार सो गये। वासुदेव ने श्रीकृष्ण को सूप में रखकर गोकुल के लिए चल पड़े, वहां बाल लीलाएं कीं और अत्याचारी कंस का वध कर अपने नाना उग्रसेन को राजगद्दी पर बैठाने की कथा है। ज्योतिषाचार्य के अनुसार, मनोकामना पूर्ण करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण को राशि के अनुसार भोग लगाकर और अपनी राशि के अनुसार मंत्र जाप कर सकते हैं। मेष राशि वाले "ॐ अं वासुदेवाय नमः" मंत्र का एक माला जप सकते है और रसगुल्ले का भोग लगा सकते है। वृषभ राशि वाले रुके हुए कार्य पूर्ण करने के लिए "ॐ नारायणाय नमः" मंत्र का 7 माला जप सकते है और लड्डू एवं अनार का भोग लगा सकते है। मिथुन राशि वाले धन लाभ के लिए "ॐ नमो नारायण" 7 माला जप सकते है और काजू की मिठाई अर्पित कर सकते है। कर्क राशि वाले पारिवारिक सुख बढाने के लिए ह्लॐ नमो नारायण। श्रीमन नारायण नारायण हरि हरि।।ह्व मंत्र का जप कर सकते है और नारियल की बर्फी और नारियल का भोग लगा सकते है। सिंह राशि वाले व्यवसाय में लाभ के लिए "ॐ अं वासुदेवाय नमः" मंत्र का एक माला जप सकते है और गुड़ एवं बेल का फल भोग में चढ़ा सकते है। कन्या राशि वाले आवास की समस्या हल करने के लिए ह्लॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतः क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।।ह्व मंत्र का जप कर सकते है और तुलसी के पत्ते एवं हरे फल का भोग लगा सकते है। तुला राशि वाले सभी तरह के समस्याओं का समाधान के लिए "ॐ नमः भगवते वासुदेवाय कृष्णाय क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः" मंत्र का एक माला जप सकते है और कलाकंद एवं सेब का भोग लगा सकते है। वृश्चिक राशि वाले लोकप्रियता बढ़ाने के लिए ह्लकृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणत क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नम।।ह्व मंत्र का 21 बार जप कर सकते है और गुड़ की मिठाई का भोग लगा सकते है। धनु राशि वाले सौभाग्य में वृद्धि के लिए "ॐ आं संकर्षणाय नमः" का 108 बार जप कर सकते है और बेसन की मिठाई का भोग लगा सकते है। मकर राशि वाले न्याय मिलने के लिए "ॐ अः अनिरुद्धाय नमः" 11 माला जप कर सकते है और गुलाब जामुन एवं काले अंगूर का भोग लगा सकते है। कुंभ राशि वाले स्थिरता लाने के लिए "ॐ नारायणाय नमः" 7 माला जप सकते है और पिसा हुआ धनिया एवं शक्कर तथा मीठे फल चढ़ा सकते है। मीन राशि वाले रुके हुए काम शीघ्र पूर्ण होने के लिए ह्लॐ नमो भगवते वासुदेवाय।ह्व का एक माला जप कर सकते है और जलेबी एवं केले का भोग लगा सकते है। पूजा-पाठ लोभ में नही बल्कि श्रद्धा और विश्वास से करना चाहिए।

"भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। उनके जन्म होते ही जेल की कोठरी में प्रकाश फैल गया। वासुदेव देवकी के सामने शंख, चक्र, गदा एवं पद्मधारी चतुर्भुज से अपना रूप प्रकट कर श्री कृष्ण ने कहा कि अब मैं बालक का रूप धारण करता हूँ। आप मुझे तत्काल गोकुल में नंद के घर जहां अभी-अभी कन्या जन्मी है उससे मुझे बदल देना और कन्या को यहाँ लाकर कंस को सौंप देना।

शिक्षकों का योगदान अतुलनीय होता है : राज्यपाल

शिक्षकों का योगदान अतुलनीय होता है। वे हमारे आदर्श हैं और हमारा मार्गदर्शन करते हैं। हमें उनका सम्मान करना चाहिए। -यह बातें महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित पटना विश्वविद्यालय के नव सौन्दयीर्कृत व्हीलर सीनेट हाउस के लोकार्पण कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि प्राथमिक शिक्षक से लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति तक सभी हमारे शिक्षक हैं और हमें उन्हें उच्च दर्जा देना चाहिए। शिक्षक ही विद्यार्थियों को सुसंस्कृत बनाते हैं और इससे वे अनुशासित बनते हैं। संस्कार देने का केन्द्र विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय होते हैं।

राज्यपाल ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ एस॰ राधाकृष्णन को उनके जन्मदिन पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि वह सिर्फ एक शिक्षक ही नहीं बल्कि उच्च कोटि के विचारक एवं हमारे मार्गदर्शक भी थे तथा तत्कालीन समय की मांग को समझकर हमारे ऋषियों के अनुपम अवदानों का जागरण किया। देश के विकास के लिए डॉ॰ राधाकृष्णन का वैचारिक योगदान अविस्मरणीय है।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षकों की समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए तथा उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों की संख्या के अनुरूप शिक्षकों की संख्या को भी आवश्यक बताया। उन्होंने राज्य में शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा से जुड़े सरकार के सभी प्राधिकारों को आपस में समन्वय बनाकर काम करना होगा।

राज्यपाल ने पटना विश्वविद्यालय की पत्रिका के विशेषांक का विमोचन किया। उन्होंने उल्लेखनीय योगदान हेतु विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त एवं कार्यरत शिक्षकों, शिक्षिकाओं एवं कर्मियों को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

“ राज्यपाल ने कहा कि शिक्षकों की समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए तथा उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों की संख्या के अनुरूप शिक्षकों की संख्या को भी आवश्यक बताया। उन्होंने राज्य में शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा से जुड़े सरकार के सभी प्राधिकारों को आपस में समन्वय बनाकर काम करना होगा।

राज्यपाल ने त्रिदिवसीय वैदिक सम्मेलन का उद्घाटन किया

हमारी परम्परा व आध्यात्मिकता तथा वर्तमान आधुनिकता के बीच समन्वय स्थापित करते हुए वैदिक ऋचाओं के भावों को आज के परिप्रेक्ष्य में सहज एवं सरल ढंग से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है ताकि सबलोग इन्हें आसानी से समझ सकें। -यह बातें महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं महावीर मंदिर, पटना के संयुक्त तत्वावधान में महाराणा प्रताप भवन, पटना में आयोजित त्रिदिवसीय वैदिक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कही।

राज्यपाल ने कहा कि मैक्समूलर सहित अनेक विदेशी विद्वानों ने वेदों की व्याख्या अपने तरीके से की और इसमें उनका हित निहित था। आवश्यकता है कि वैदिक ऋचाओं के भावों को युवा पीढ़ी के सामने आज के संदर्भ में सहज एवं सरल ढंग से रखा जाए। उन्होंने देश में समरसता की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इसका भाव वेदों से आता है। उन्होंने कहा कि बच्चों की शिक्षा में वेदाध्ययन को शामिल किया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि भारत की आत्मा आध्यात्मिकता में निहित है तथा हजारों वर्षों से हमने इसे सँजोया है। सबके प्रयासों से इस विषय को आगे लेकर बढ़ने से ही हम भारत को विश्व गुरू बना सकेंगे।

कार्यक्रम को श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव श्री किशोर कुणाल तथा महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के उपाध्यक्ष डॉ॰ प्रफुल्ल कुमार मिश्र ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर अनेक वैदिक विद्वान, वेदपाठी आचार्य व विद्यार्थीगण, गणमान्य व्यक्ति एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

“ राज्यपाल ने कहा कि मैक्समूलर सहित अनेक विदेशी विद्वानों ने वेदों की व्याख्या अपने तरीके से की और इसमें उनका हित निहित था। आवश्यकता है कि वैदिक ऋचाओं के भावों को युवा पीढ़ी के सामने आज के संदर्भ में सहज एवं सरल ढंग से रखा जाए। उन्होंने देश में समरसता की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इसका भाव वेदों से आता है। उन्होंने कहा कि बच्चों की शिक्षा में वेदाध्ययन को शामिल किया जाना चाहिए।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल कार्यान्वयन से युवा नई ऊर्जा से अनुप्राणित होंगे : राज्यपाल

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 हमारे समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। यह जमीन से जुड़ी हुई ऐसी शिक्षा नीति है जो हमारी मौजूदा जरूरतों को भी पूरा करती है। यह शिक्षा नीति हमारी औपनिवेशिक सोच को बदलकर युवाओं में नयी ऊर्जा भरती है।ह्व- उक्त उद्गार महामहिम राज्यपाल सह कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने स्थानीय होटल मौर्या के सभागार में ललित नारायण मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट मुजफ्फरपुर के तत्वावधान मे आज शाम आयोजित एक संगोष्ठी में मुख्य अतिथि पद से संबोधित करते हुए व्यक्त किये। राज्यपाल ने कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित करते हुए किया।

उक्त अवसर पर बोलते हुए महामहिम राज्यपाल श्री आर्लेकर ने कहा कि पुरानी शिक्षा नीति केवल सेवक पैदा करते हुए बाबूगिरी को बढ़ावा देने वाली थी। इसमें सिर्फ विद्यार्थियों की स्मरण-शक्ति का ही परीक्षण हो पाता था। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को औपनिवेशिक सोच से उबरते हुए एक अच्छे मनुष्य के निर्माण की दिशा में एक सार्थक पहल के रूप में लागू किया गया है। राज्यपाल ने कहा कि एक अच्छा मनुष्य ही एक अच्छा चिकित्सक, शिक्षक, ऑफिसर या अच्छा राजनेता बन सकता है।

कार्यक्रम में अपने अत्यंत मार्मिक उद्बोधन के दौरान राज्यपाल ने कहा कि बिहारी अगर परिश्रमी एवं प्रतिभाशाली हैं तो फिर बिहार क्यों किसी से पीछे रहेगा? उन्होंने कहा कि हमें उस दिन की प्रतीक्षा है जब सिर्फ बिहारी विद्यार्थी ही उच्च शिक्षा प्राप्त करने बाहर नही जायेंगे बल्कि दूसरे प्रदेशों के विद्यार्थी भी बिहार पढ़ने आयेंगे।

राज्यपाल ने कहा कि आज हमें ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता है जो हमें रोजगार-याचक नही बल्कि रोजगार-प्रदाता बनाये। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति इसी दिशा में एक ठोस पहल है।

राज्यपाल श्री आर्लेकर ने कहा कि बिहार राज्य में भी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू हो गयी है। उन्होंने स्पष्ट किया की नई शिक्षा नीति में भी तीन वर्ष का ही स्नातकीय पाठ्यक्रम निर्धारित है, उच्च और विशिष्ट अध्ययन के लिए चैथे वर्ष में पढ़ाई का प्रावधान है।

राज्यपाल ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तत्परतापूर्वक कार्यान्वयन की जरूरत बताते हुए कहा कि हमारी आगामी पीढ़ियाँ इससे स्वतंत्र और युगान्तकारी परिवर्तन के लिए तैयार हो सकेंगी।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण राज्य के पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री नीतीश मिश्रा तथा धन्यवाद-ज्ञापन ललित नारायण मिश्रा कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट के रजिस्ट्रार ने किया।

“ उक्त अवसर पर बोलते हुए महामहिम राज्यपाल श्री आर्लेकर ने कहा कि पुरानी शिक्षा नीति केवल सेवक पैदा करते हुए बाबूगिरी को बढ़ावा देने वाली थी। इसमें सिर्फ विद्यार्थियों की स्मरण-शक्ति का ही परीक्षण हो पाता था। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को औपनिवेशिक सोच से उबरते हुए एक अच्छे मनुष्य के निर्माण की दिशा में एक सार्थक पहल के रूप में लागू किया गया है। राज्यपाल ने कहा कि एक अच्छा मनुष्य ही एक अच्छा चिकित्सक, शिक्षक, ऑफिसर या अच्छा राजनेता बन सकता है।

सैनिकों के लिए प्रत्येक घर से एक राखी भेजें-राज्यपाल

रक्षाबंधन के अवसर पर देश की सीमा पर तैनात हमारे सैनिकों के लिए हर घर से एक राखी भेजी जानी चाहिए। इससे हममें राष्ट्रभक्ति का भाव मजबूत होगा।- यह बातें महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल, पटना में आयोजित ह्यरक्षाबंधन संवाद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि गोवा के स्कूली विद्यार्थियों द्वारा सीमा पर तैनात जवानों के लिए प्रत्येक घर से एक राखी भेजी जाती है और इस वर्ष 26 हजार राखियाँ भेजी गई हैं। बिहार के विद्यार्थियों द्वारा भी ऐसा किया जाना चाहिए। दीवाली के अवसर पर भी उन जवानों के लिए प्रत्येक घर में एक दिया जलाया जाना चाहिए।

हम सदियों से रक्षाबंधन का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाते है और इस अवसर पर बहनें अपने भाइयों को राखी बाँधती है। परन्तु अब यह त्योहार भाई-बहन तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि अन्य लोगों को भी हम राखी बाँधते है ताकि हममें समाज के प्रत्येक व्यक्ति की रक्षा की जिम्मेदारी का भाव आ सके।

इस अवसर पर राज्यपाल ने केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल, पटना के विद्यार्थियों द्वारा दी गई राखियों को मेजर जनरल श्री विशाल अग्रवाल को सौंपा ताकि वे उन्हें देश की सीमा पर तैनात जवानों को भिजवा सकें। विद्यालय की छात्राओं ने राज्यपाल एवं अन्य महानुभावों को राखी बाँधी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में मेजर जनरल श्री विशाल अग्रवाल के अतिरिक्त केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल, पटना के प्रधानाचार्य श्री देवानंद दूरदर्शी, वरिष्ठ सदस्य डॉ॰ मोहन सिंह, सचिव डॉ॰ राजीव कुमार सिंह एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

“ हम सदियों से रक्षाबंधन का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाते है और इस अवसर पर बहनें अपने भाइयों को राखी बाँधती है। परन्तु अब यह त्योहार भाई-बहन तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि अन्य लोगों को भी हम राखी बाँधते है ताकि हममें समाज के प्रत्येक व्यक्ति की रक्षा की जिम्मेदारी का भाव आ सके। इस अवसर पर राज्यपाल ने केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल, पटना के विद्यार्थियों द्वारा दी गई राखियों को मेजर जनरल श्री विशाल अग्रवाल को सौंपा ताकि वे उन्हें देश की सीमा पर तैनात जवानों को भिजवा सकें।

दुनिया भर में गौरैया की आबादी तकरीबन 1.6 अरब

सात गौरैया प्रजाति वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के अनुसूची में शामिल

संजय कुमार

"स्टेट ऑफ इंडियंस बर्ड्स 2023" ने अपनी रिपोर्ट में भारत के कई पक्षियों की प्रजातियां को खतरे में बता कर सबको चौंका दिया है। साथ ही चिड़ियों के 178 प्रजातियों को संरक्षित करने की बात भी कही है। विलुप्ति के सवालों से लिपटी गौरैया के ऊपर भी मंडराते खतरे की चर्चा होती रहती है। हालाँकि अभी ऐसी स्थिति नहीं है कि गौरैया लाल सूचि में शामिल हो, हालाँकि स्थिति अच्छी नहीं हैं। इसके बावजूद खतरा तो है ही, क्योंकि यह कई इलाकों से विलुप्त हो चुकी है। ऐसे में गौरैया की संख्या को लेकर अक्सर सवाल भी उठता रहता है कि कितनी गौरैया एक गांव, एक शहर, एक मोहल्ला, एक राज्य या फिर पूरे देश या दुनिया भर में है? वैसे एक आंकलन के अनुसार दुनिया भर में गौरैया की आबादी तकरीबन 1.6 अरब हैं।

गौरैया की घटती संख्या यानि विलुप्ति की ओर बढ़ने के मद्देनजर इसके संरक्षण के प्रति केंद्र सरकार ने सजगता दिखाई है ताकि इसकी संख्या में गिरावट नहीं आये और वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (अंतिम अद्यतन 1-4-2023) को अधिसूचित कर घरेलू गौरैया सहित सात गौरैया को अनुसूची-क्क में शामिल कर लिया है। इनमें यूरेशियन ट्री स्पैरो (पासर मोंटैनस), हाउस स्पैरो (पासर डोमेस्टिकस), रॉक स्पैरो पेट्रोनिया (पेट्रोनिया), रसेट स्पैरो (पासर सिनामोमियस), सिंध स्पैरो (पासर पाइरहोनोटस), स्पैनिश स्पैरो (पासर हिस्पानियोलेंसिस), पीले गले वाली गौरैया (जिमनोरिस जैंथोकोलिस), जो भारत में पाई जाती है,शामिल है। कह सकते हैं गौरैया को खतरे से बचाना है। पहले गौरैया अनुसूची-क्क्क में शामिल थी। लेकिन अब अनुसूची-क्क में आने से इसकी सुरक्षा-संरक्षा और बढ़ गयी है। इसके तहत जीव को उच्च सुरक्षा प्रदान की जाती है। मानव जीवन को खतरे के अलावा उनका शिकार नहीं किया जा सकता। इसके तहत इसको एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डन की अनुमति जरुरी होगी।

बात भारत में गौरैया की संख्या की, तो कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक गौरैया दिखती है, तो कहीं नहीं। फिर भी देश में गौरैया की कुल संख्या को लेकर सवाल अक्सर उठता रहता है। हालाँकि अभी तक भारत में आधिकारिक (सरकारी) तौर पर कोई गणना नहीं हुई है। लेकिन, संस्थागत या व्यक्तिगत गणना की खबरें आती रहती है। अगर बिहार के एक शहर को ले, तो कोई पचीस,पचास,सौ, तो कोई हजार, तो कोई एक भी नहीं बताता है। वैसे इसकी गणना आसान नहीं है।

“ बात भारत में गौरैया की संख्या की, तो कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक गौरैया दिखती है, तो कहीं नहीं। फिर भी देश में गौरैया की कुल संख्या को लेकर सवाल अक्सर उठता रहता है। हालाँकि अभी तक भारत में आधिकारिक (सरकारी) तौर पर कोई गणना नहीं हुई है। लेकिन, संस्थागत या व्यक्तिगत गणना की खबरें आती रहती है। अगर बिहार के एक शहर को ले, तो कोई पचीस,पचास,सौ, तो कोई हजार, तो कोई एक भी नहीं बताता है।

देखा जाये तो गौरैया प्रवासी पक्षी नहीं हैं। यह झुंड में रहने वाली है और पलायन भी करती हैं। ज्यादातर एक से पांच किलोमीटर के दायरे में घूमते या स्थानांतरण करते रहते हैं। गौरैया ज्यादातर छोटे-छोटे पेड़ों और झाड़ियों में रहती है। पेड़ों में बबूल, नींबू, अमरूद, अनार, मेहंदी, बांस और कनेर आदि शामिल हैं। इसमें छुप कर बैठने से इसकी गिनती आसान नहीं है ऐसे में इसे उड़ा कर तस्वीर लेकर फिर उसकी संभावित गिनती की जा सकती है। अगर एक दिन में एक पेड़ पर सौ गौरैया बैठती है तो जरुरी नहीं कि दूसरे दिन उतनी ही गौरैया उस पर बैठे, दूसरे पेड़ पर भी दूसरी जगह बैठ जाती है। इसलिए सिर्फ अनुमान ही लगाया जा सकता है। विशेषज्ञों की माने तो गौरैया की गणना के लिए एक पॉइंट से चारो दिशा में एक से पांच किलोमीटर के दायरे में एक ही दिन में गौरैया की गणना पद्धति को अपनायी जा सकती हैं।

भारत में गौरैया की स्थिति जानने के लिए बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी ने 2021 में ऑनलाइन सर्वे कराया था। भारतीय जैव विविधता संरक्षण संस्थान ने 2015 में वृहद स्तर पर गणना की थी। लखनऊ में सिर्फ 5,692 और पंजाब के कुछ इलाकों में लगभग 775 गौरैया देखीं गई थीं। तिरुवनंतपुरम में तो सिर्फ 29 गौरैया देखी गई। कन्याकुमारी के स्थानीय एनजीओ ह्त्रवनकोर नेचुरल हिस्ट्री सोसायटीह्व ने शहर के अलग-अलग जगहों पर इनकी संख्या को लेकर 2017 में सर्वेक्षण किया। इसमें पाया गया कि जहां एक साल पहले तक 82 गौरैया दिखती थीं, वहां अब उनकी संख्या घटकर मात्र 23 रह गई है। कानपुर जिले में सेव स्पैरो प्रोजेक्ट रिपोर्ट 2015 में बताया गया है कि जिले में कुल 37 साइटों का सर्वेक्षण किया गया और 581 स्पैरो (गौरैया की संख्या) दर्ज किए गए।

वहीं, पटना में इनवारमेंट वैरियर और हमारी गौरैया बिहार, ने विभिन्न इलाकों का जायजा लेकर गौरैया की अनुमानित संख्या तलाशने की कोशिश की। हमारी गौरैया को कंकड़बाग सहित कई मुहल्लों में 25 से एक सौ दिखी तो कई में एक भी नहीं। वहीं, पटना सहित पास के रेलवे स्टेशनों पर सौ से ज्यादा दिखी। पुराने मोहल्लों में यह 50 से सौ की संख्या में दिखी।

एनवायरनमेंट वाररिर्स बिहार की टीम के द्वारा पटना के विभिन्न इलाकों से प्राप्त आँकड़ो के अध्ययन तथा अवलोकन के आधार पर, इस नतीजे पर पहुँचा गया कि पटना नगर निगम क्षेत्र के 40% हिस्से से गौरैया विलुप्त हो चुकी है या न के बराबर है। पटना जंक्शन, राजेंद्र नगर, महेंद्रू, बाजारसमिति आदि स्थानों के आसपास इसकी संख्या 200 से भी अधिक है, लेकिन आनन्दपुरी, राजीव नगर, पाटलिपुत्र कॉलोनी आदि क्षेत्रों में इनकी संख्या 15 से भी कम है। टीम के सर्व के आधार पर पटना नगर निगम क्षेत्र में गौरैया की संभावित संख्या साढ़े छह से सात हजार के बीच है। अगर पूरे बिहार (ग्रामीण और शहरी इलाका) को देखें तो गया, भागलपुर, मुंगेर, खगड़िया, नवगछिया, रोहतास, लखीसराय, भोजपुर, सारण, वैशाली, किशनगंज, पूर्वी एवं पश्चमी चंपारण, जमुई, आदि के इलाकों में गौरैया एक सौ से हजार की तादाद में हैं, लेकिन कई इलाकों में नहीं दिखती है। लखीसराय जिले के ग्रामीण इंदु शेखर के घर में सौ से ज्यादा गौरैया थी आज इसकी संख्या 25 हो गयी है। गौरैया की संख्या को लेकर अमूमन कई गाँव/शहर की यह तस्वीर है।

जहाँ तक दुनिया भर में गौरैया के पाए जाने का सवाल है तो कुल 26 प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से पांच से सात भारत में मिलती हैं। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर ने 2002 में गौरैया को लुप्तप्राय प्रजातियों में शामिल कर दिया था। जबकि ब्रिटेन की रॉयल सोसायटी ऑफ प्रोटेक्शन ऑफ बर्ड्स ने भारत सहित दुनिया के अन्य हिस्सों में भी कई अध्ययनों के आधार पर गौरैया को 2017 में ह्यरेड लिस्ट में डाला (डाउन टू अर्थ के अनुसार)। ह्यरेड लिस्ट में उन जीव-जंतुओं या पक्षियों को डाला जाता है, जिन पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा होता है। जबकि स्टेट ऑफ इंडियंस बर्ड्स 2020, रेंज, ट्रेंड्स और कंजर्वेशन स्टेट्स की रिपोर्ट में दावा किया गया कि, पिछले 25 साल से गौरैया की संख्या भारत में स्थिर बनी हुई है। गुजरात के गांधीनगर 15 से 22 फरवरी 2020 को आयोजित 13वें अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी प्रजाति संरक्षण सम्मेलन में आयी एक रिपोर्ट में खुलासा हुआ था कि भारत में गौरैया की संख्या स्थिर है। वैसे यह भी सच है कि कई गांव और शहर जहां ये दिखती थी वहां सालों से नहीं दिखी। जबकि एक शहर/गांव/मोहल्ला में कुछ इलाके में दिखती है तो कुछ इलाके में नहीं। रेलवे स्टेशनों पर गौरैया को झुंड में प्रवास करते देखा जा सकता है। रेलवे स्टेशन के सभी प्लेटफॉर्म पर लगे शेड और खुल्ले- खुल्ले ईमारत आवास देते है। साथ ही उन्हें भरपूर आहार सहज मिल जाता है। यहाँ पेड़ नहीं होने से फर्क नहीं पड़ता है बिजली के तार पर बड़ी संख्या में बैठती है। यह पूरा दृश्य देखने लायक होता है, जो अमूमन देश भर में दिखता है।

गौरैया का इंसानों के साथ का संबंध बहुत पुराना है। बेथलहम की एक गुफा से 4,00,000 साल पुराने जीवाश्म के साक्ष्य से पता चलता है कि घरों में रहने वाले गौरैयों ने प्रारंभिक मनुष्यों के साथ अपना स्थान साझा किया था। वहीँ, रॉयल सोसायटी ऑफ लंदन की 2018 की एक रिपोर्ट के अनुसार, इंसानों और गौरैयों के बीच का बंधन 11,000 साल पुरानी बात है। वैसे गौरैया से विश्व को प्रथम परिचय 1851 में अमेरिका के ब्रूकलिन इंस्टीट्यूट ने कराया था।

गौरैया की संख्या में कमी के पीछे के कारणों में बढ़ता आवासीय संकट, आहार की कमी, खेतों में कीटनाशक का व्यापक प्रयोग, जीवनशैली में बदलाव, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, शिकार, गौरैया को बीमारी और मोबाइल फोन टावर से निकलने वाले रेडिएशन(दोषी माना जाता है लेकिन स्टेट ऑफ इंडियंस बर्ड्स 2020- रेंज, ट्रेंड्स और कंजर्वेशन स्टेट्स ने अपनी रिपोर्ट में इसे खारिज किया है।

बहरहाल, गौरैया संरक्षण की पहल जरूरी है हर कोई कहे मेरे यहाँ है गौरैया।

एनवायरनमेंट वाररिर्स बिहार की टीम के द्वारा पटना के विभिन्न इलाकों से प्राप्त आँकड़ो के अध्ययन तथा अवलोकन के आधार पर, इस नतीजे पर पहुँचा गया कि पटना नगर निगम क्षेत्र के 40% हिस्से से गौरैया विलुप्त हो चुकी है या न के बराबर है। पटना जंक्शन, राजेंद्र नगर, महेंद्रू, बाजारसमिति आदि स्थानों के आसपास इसकी संख्या 200 से भी अधिक है, लेकिन आनन्दपुरी, राजीव नगर, पाटलिपुत्र कॉलोनी आदि क्षेत्रों में इनकी संख्या 15 से भी कम है।

बिहार की राजधानी पटना में बढ़ रहा डेंगू का कहर

लगातार बढ़ रही है मरीजों की संख्या

पटना में डेंगू बुखार से बहुत लोग हैं परेशान

राकेश कुमार की डॉ. दिवाकर तेजस्वी से खास बातचीत में आइए जानते है डेंगू बुखार क्या है, इसके लक्षण क्या है, डेंगू से बचाव कैसे करे और डेंगू का इलाज क्या है....

सवाल: डेंगू बुखार क्या होता है, इसके लक्षण क्या हैं, इससे बचाव कैसे करे और इसका इलाज कैसे करे!

जवाब: डेंगू एक गंभीर बीमारी है जो मच्छरों के काटने की वजह से फैलता है। डेंगू बुखार अभी बढ़ने की टेंडेंसी देखी जा रही है, अभी बहुत ज्यादा तो नहीं लेकिन अभी से ही सतर्क रहना बहुत आवश्यक है क्योंकि डेंगू के मामले आने शुरू हो गए हैं और आगे आने वाले दिनों में ये बढ़ने की संभावना हैं। अगर लोग सतर्क नही रहेंगे तो सितंबर और अक्टूबर में और भी बढ़ने की संभावना है। सबसे पहले आपके घर केवास पास जहां भी जल जमाव हो रहा है उस पानी को जमा न होने दे। घर के अंदर कूलर है, टायर है, ट्यूब है, छत पर कुछ है जहां की शुद्ध पानी में एडीज इजिप्टी के जो मच्छर होते हैं वो पनपते हैं तो वाहन पर आस पास पानी नहीं रहने दे और अगर कहीं पानी जमा है तो उसमे ' के ऑयल' या कोई और ऑयल डाले जिससे की कोई लार्वा पनप नहीं पाएं।

सवाल: डेंगू के लक्षण क्या हैं!

जवाब: तेज बुखार, जोड़ों में दर्द और प्लेटलेट्स में कमी डेंगू के प्रमुख लक्षण हैं। जब आपको तेज सिरदर्द, आंखों के पीछे दर्द, पेट में दर्द, शरीर में दर्द, दाने और उल्टी के साथ अचानक तेज बुखार हो। बुखार 5-7 दिनों तक रह सकता है। अगर कोई व्यक्ति डेंगू का शिकार हो जाता है, तो उसके शरीर में डेंगू के कई लक्षण दिखाई देते हैं जिसमें दर्द, मतली- उल्टी आना, पेट की खराबी, आंखों के पीछे वाले हिस्से में दर्द, त्वचा पर चकत्ते या लाल रंग के दाने निकलना आदि है।

सवाल: डेंगू बुखार कितने प्रकार के होते हैं?

जवाब: डेंगू के तीन प्रकार के बुखार होते हैं, जिनसे व्यक्ति को काफी खतरा होता है, जो इस प्रकार हैं-

> “ डेंगू एक गंभीर बीमारी है जो मच्छरों के काटने की वजह से फैलता है। डेंगू बुखार अभी बढ़ने की टेंडेंसी देखी जा रही है, अभी बहुत ज्यादा तो नहीं लेकिन अभी से ही सतर्क रहना बहुत आवश्यक है क्योंकि डेंगू के मामले आने शुरू हो गए हैं और आगे आने वाले दिनों में ये बढ़ने की संभावना हैं। अगर लोग सतर्क नही रहेंगे तो सितंबर और अक्टूबर में और भी बढ़ने की संभावना है।

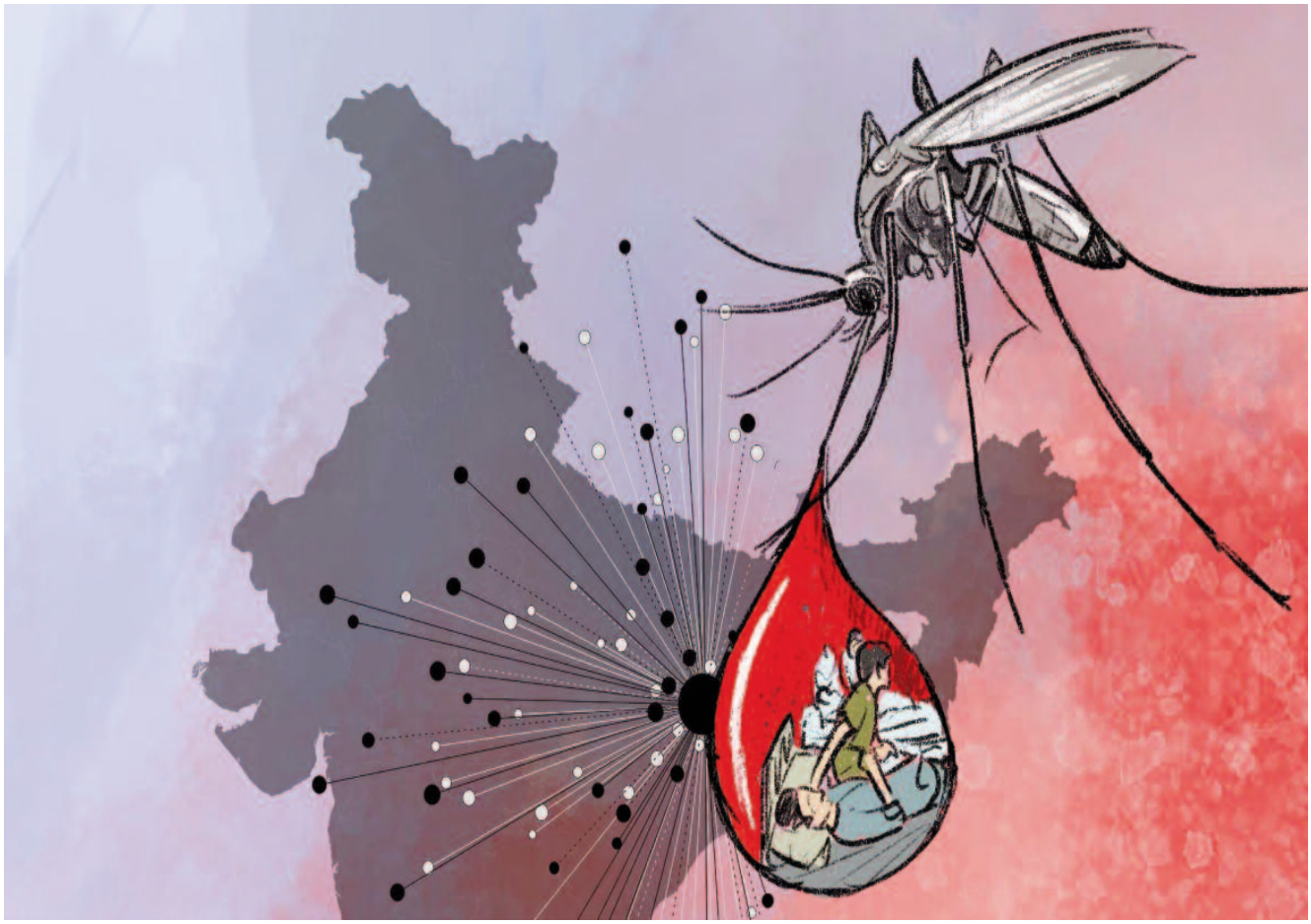

हल्का डेंगू बुखार- इसके लक्षण मच्छर के काटने के एक सप्ताह बाद देखने को मिलते हैं। इसमें व्यक्ति को कई तरह की समस्याएं होती हैं।

डेंगू रक्तस्रावी बुखार- डेंगू रक्तस्रावी बुखार के लक्षण हल्के होते हैं, लेकिन धीरे-धीरे कुछ दिनों बाद गंभीर भी हो जाते हैं।

डेंगू शॉक सिंड्रोम- डेंगू शॉक सिंड्रोम एक गंभीर रूप है। वहीं यह जानलेवा भी साबित हो सकता है।

सवालः डेंगू बुखार से बचाव कैसे करे!

जवाबः डेंगू बुखार से लोगों को बचाने के लिए कुछ उपाय हैं, जिन्हें जरूर करना चाहिए-

मच्छरों से बचने के लिए साफ जगह पर रहे एवं मच्छरों से बचने के लिए मच्छरदानी का उपयोग जरूर करे। अगर कही भी पब्लिक प्लेस पर जा रहे हैं जहां की मच्छर होने की संभावना है तो वहां अपना फुल शर्ट ही पहन कर जाएं, मच्छर रोधी मलहम का उपयोग अवश्य करे। डेंगू के लक्षण दिखने पर तत्काल चिकत्सकीय सलाह जरूर लें।

डेंगू में एक दो बातों पर ध्यान रखना बहुत ही जरूरी हैः अगर डेंगू बुखार हो रहा है तो सबसे पहले बुखार उतरने के लिए की Paracetamol का ही उपयोग करे जो और अंगो को परेशान नहीं करता है और बहुत ही सुरक्षित तरीके से बुखार उतर देता है। इसमें जो अन्य NSAID होते हैं या बुखार उतारने के लिए aspirin या disprin हैं जो प्रतिबंधित है उसका कतई उपयोग नहीं करें क्योंकि अगर डेंगू में aspirin या disprin का उपयोग करेंगे तो वो आंतरिक रक्तस्राव को और बढ़ाएगा और आपको बहुत ही गंभीर स्थिति में ले जायेगा इसलिए डेंगू में बुखार उतारने के लिए ढंशूीइंङ्क' उचित है। डेंगू होने पर जितना हो सके उतना आराम करें और पानी जितना हो सके पिएं ताकि शरीर में पानी की कमी नहीं हो और तरल पदार्थों का सेवन करते रहें।

सवालः डेंगू होने पर क्या खाएं!

जवाबः डेंगू होने पर पपीते के पत्ते का रस का उपयोग जरूर करे क्योंकि पपीते के पत्ते में विटामिन उ और एंटी-ऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में पाई जाती हैं। यह इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है। यदि डेंगू बुखार से पीड़ित व्यक्ति इसके रस का सेवन करें तो प्लेटलेट्स की संख्या में कमी नहीं आएगी यानि संतुलित रह सकती है। डेंगू बुखार से पीड़ित व्यक्ति यदि अनार का सेवन करें, तो यह प्लेटलेट्स को बढ़ाने में काफी मदद करता है। वहीं इसके सेवन से डेंगू की वजह से शरीर की गई एनर्जी को वापस आ जाएगी। दही का सेवन करने से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है। यदि आप डेंगू बुखार में इसका सेवन करें तो आपकी प्रतिरोधक क्षमता मजबूत हो सकती है। डेंगू होने पर नारियल पानी पीना बेहद फायदेमंद माना जाता है। इसे पीने से शरीर हाइड्रेट रहता है।

सवालः डेंगू होने क्या क्या जांच जरूरी है?

जवाबः डेंगू की जांच के लिए शुरूआत में एंटीजन ब्लड टेस्ट (एनएस 1) किया जाता है। जिसमें डेंगू किस प्रकार का है यह पता चल जाता है। इस टेस्ट में डेंगू शुरू में ज्यादा पॉजिटिव आता है, जबकि बाद में धीरे-धीरे पॉजिविटी कम होने लगती है। ये टेस्ट खाली या भरे पेट, कैसे भी कराए जा सकते हैं।

> मच्छरों से बचने के लिए साफ जगह पर रहे एवं मच्छरों से बचने के लिए मच्छरदानी का उपयोग जरूर करे। अगर कही भी पब्लिक प्लेस पर जा रहे हैं जहां की मच्छर होने की संभावना है तो वहां अपना फुल शर्ट ही पहन कर जाएं, मच्छर रोधी मलहम का उपयोग अवश्य करे। डेंगू के लक्षण दिखने पर तत्काल चिकत्सकीय सलाह जरूर लें।

अब अदालतें भी चिन्तित हैं माता-पिता की उपेक्षाओं पर

नये बन रहे समाज एवं पारिवारिक संरचना में माता-पिता का जीवन एक त्रासदी एवं समस्याओं का पहाड़ बनता जा रहा है, समाज में बच्चों के द्वारा बुजुर्ग माता-पिता की उपेक्षाओं एवं उनके प्रति बरती जा रही उदासीनता इतनी अधिक बढ़ गयी है कि अदालतों को दखल देना पड़ रहा है। माता-पिता भोजन-पानी, दवाई, जरूरत की चीजों से महरूम ही नहीं हो रहे हैं बल्कि उनके सम्मान की स्थितियां भी नगण्य होती जा रही है। वृद्ध माता-पिता की यह दुर्दशा एक विकराल समस्या के रूप में उभर रही है। सुविधावाद, भौतिकता एवं धन के बढ़ते वर्चस्व के बीच माता-पिता अपने ही बच्चों की प्रताड़ना के शिकार है। ऐसी बढ़ती समस्याओं पर नियंत्रण के लिये अदालतों को न सिर्फ दखल देना पड़ रहा है बल्कि बच्चों को पाबंद करना पड़ रहा है कि वे अपने बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करें और उनको सम्मान दें। मद्रास उच्च न्यायालय का ऐसा ही एक फैसला आज के समाज में खून के रिश्तों पर सवाल खड़ा करने वाला है। न्यायालय ने अपने फैसले में साफ किया है कि बुजुर्ग अभिभावकों की इच्छा पूरी करना बच्चों का दायित्व है। न्यायालय का यह फैसला सिर्फ किसी बच्चे और अभिभावकों के बीच संपत्ति विवाद तक सीमित नहीं है। इसे व्यापक अर्थों में देखने और समझने की जरूरत है। संवेदनशील मानसिकता के निर्माण से समाज का माहौल बदल सकता है। अदालत चाहती है कि वृद्ध माता-पिता को उदासीनता एवं उपेक्षा से मुक्ति देकर उन्हें सुरक्षा कवच मानने की सोच को विकसित किया जाये ताकि एक आदर्श परिवार की संरचना को जीवंत किया जा सके एवं वृद्धों के स्वास्थ्य, निष्कंटक एवं कुंठारहित जीवन को प्रबंधित किया जा सकता है। वृद्धों को बंधन नहीं, आत्म-गौरव के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा को अदालत ने उजागर कर समाज को जागृत करने का सराहनीय काम किया है।

ऐसा युग जहां रिश्तों की जगह धन हावी होता जा रहा है। इसी कारण वृद्धों को लेकर गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, ये समस्याएं अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण खड़ी हुई हैं। चिन्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है कि वृद्धों की उपेक्षा के इस गलत प्रवाह को रोके, इसी बात पर अदालत ने अपने फैसले में बल दिया है। क्योंकि सोच के गलत प्रवाह ने न केवल वृद्ध माता-पिता के जीवन को दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है। सवाल यह

> “ सुविधावाद, भौतिकता एवं धन के बढ़ते वर्चस्व के बीच माता-पिता अपने ही बच्चों की प्रताड़ना के शिकार है। ऐसी बढ़ती समस्याओं पर नियंत्रण के लिये अदालतों को न सिर्फ दखल देना पड़ रहा है बल्कि बच्चों को पाबंद करना पड़ रहा है कि वे अपने बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करें और उनको सम्मान दें। मद्रास उच्च न्यायालय का ऐसा ही एक फैसला आज के समाज में खून के रिश्तों पर सवाल खड़ा करने वाला है।

है कि जो माता-पिता कष्ट सहकर भी अपने बच्चों को अच्छी जिंदगी देने की भरपूर कोशिश करते हैं, उन्हीं मां-बाप के बुजुर्ग होने पर बच्चे उनकी देखभाल से जी क्यों चुराने लगते हैं? बच्चों की नजर मां-बाप की संपत्ति तक ही सीमित होकर क्यों रह जाती है? ऐसी बात नहीं है कि सभी बच्चे अपने मां-बाप की उपेक्षा कर रहे हैं, लेकिन आसपास नजरें घुमाने पर ऐसे मामले हर कहीं नजर आ जाते हैं। जाहिर है ऐसे मामले बढ़ रहे हैं।

वर्तमान युग की बड़ी विडम्बना एवं विसंगति है कि वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, वृद्धों की उपेक्षा स्वस्थ एवं सुसंस्कृत परिवार परम्परा पर काला दाग बनता जा रहा है। अदालत की यह संवेदनशील सोच है जिससे बच्चों एवं माता-पिता के बीच बढ़ते फासलों को दूर किया जा सकता है, अदालत चाहती है कि ऐसा परिवेश निर्मित हो जिसमें परिवार के वृद्ध हमें कभी बोझ के रूप में दिखाई न दें, हमें यह कभी नहीं सोचना पडे.कि इनकी उपस्थिति हमारी स्वतंत्रता को बांधित करती है। उन्हें पारिवारिक धारा में बांधकर रखा जाये। लेकिन हम सुविधावादी एकांगी एवं संकीर्ण सोच की तंग गलियों में भटक रहे हैं तभी वृद्ध माता-पिता की आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहशत है, दिल में अन्तहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्ध माता-पिता को मुक्ति दिलानी होगी। सुधार की संभावना हर समय है। हम पारिवारिक जीवन में वृद्ध माता-पिता को सम्मान दें, इसके लिये सही दिशा में चले, सही सोचें, सही करें। वृद्ध माता-पिता से जुड़े मामलों का बोझ अदालतों में बढ़ना एक गंभीर समस्या है, इसके लिये आज विचारक्रांति ही नहीं, बल्कि व्यक्तिक्रांति एवं परिवार-क्रांति की जरूरत है।

हमारा भारत तो बुजुर्गों को भगवान के रूप में मानता है। इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण हैं कि माता-पिता की आज्ञा से भगवान श्रीराम जैसे अवतारी पुरुषों ने राजपाट त्याग कर वनों में विचरण किया, मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार ने अपने अन्धे माता-पिता को काँवड़ में बैठाकर चारधाम की यात्रा कराई। फिर क्यों आधुनिक समाज में वृद्ध माता-पिता और उनकी संतान के बीच दूरियां बढ़ती जा रही है। इस समस्या की शुरूआत तब होती है, जब युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों को उपेक्षा की निगाह से देखने लगती है और उन्हें बुढ़ापे और अकेलेपन से लड़ने के लिए असहाय छोड़ देती है। आज वृद्धों को अकेलापन, परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा, तिरस्कार, कटुक्तियां, घर से निकाले जाने का भय या एक छत की तलाश में इधर-उधर भटकने का गम हरदम सालता रहता। इन्हीं स्थितियों से जुड़े मामले न्याय पाने के लिये अदालत की शरण लेते हैं।

माता-पिता की उपेक्षा करने वाले बच्चे यह क्यों नहीं समझते कि उम्र के जिस दौर से उनके माता-पिता गुजर रहे हैं, कल उसका सामना उन्हें भी करना पड़ेगा। विचारणीय सवाल यह है कि क्या न्यायालय का काम बच्चों को मां-बाप की सेवा करने की नसीहत देने का होना चाहिए? जब पानी सिर से ऊपर गुजरने लगता है, तब न्यायालयों को ऐसे मामलों में कड़े निर्णय लेने पड़ते हैं और तीखी टिप्पणी करनी पड़ती है। भारत ह्यवसुधैव कुटुम्बकम की सोच रखने वाला देश है। ऐसी सोच जिसमें पूरा विश्व एक परिवार है। ऐसे विलक्षण विचार को जन्म देने वाले देश में यदि बच्चे अपने मां-बाप की देखभाल से बचने लगें और उनका अपमान तक करने लगें, तो चिंता होना स्वाभाविक है। एकल परिवारों की वजह से भी यह समस्या बढ़ी है। स्वच्छंद जीवन एवं सुविधावाद ने भी इस समस्या को गहराया है, तभी वृद्ध माता-पिता इतने कुंठित एवं उपेक्षित होते जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार अनेक स्वस्थ एवं आदर्श समाज-निर्माण की योजनाओं को आकार देने में जुटी है, उन्हें वृद्धों को लेकर भी चिन्तन करते हुए वृद्ध-कल्याण योजनाओं को लागू करना चाहिए, ताकि वृद्धों की प्रतिभा, कौशल एवं अनुभवों का नये भारत-सशक्त भारत के निर्माण में समुचित उपयोग हो सके एवं आजादी के अमृतकाल को वास्तविक रूप में अमृतमय बना सके। अपने को समाज एवं परिवार में एक तरह से निष्प्रयोज्य समझे जाने के कारण वृद्ध माता-पिता सर्वाधिक दुःखी रहता है। वृद्ध माता-पिता को इस दुःख और संत्रास से छुटकारा दिलाने के लिये सरकार के द्वारा ठोस प्रयास किये जाने की बहुत आवश्यकता है।

संवेदनशून्य समाज में इन दिनों कई ऐसी घटनाएं भी प्रकाश में आई हैं, जब संपत्ति मोह में वृद्ध माता-पिता की हत्या तक कर दी गई। ऐसे में स्वार्थ का यह नंगा खेल स्वयं अपनों से होता देखकर वृद्ध माता-पिता को किन मानसिक आघातों से गुजरना पड़ता होगा, इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता। वृद्धावस्था में माता-पिता मानसिक व्यथा के साथ सिर्फ सहानुभूति की आशा जोहती रह जाती है। बड़े शहरों में ही नहीं अब तो छोटे ग्रामों में भी परिवार से उपेक्षित होने पर बूढ़े-बुजुर्गों को ह्यओल्ड होम्स की शरण लेनी पड़ती है। बड़ी संख्या में ह्यओल्ड होम्स का होना विकास का नहीं, अभिशाप का प्रतीक है। यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं शर्म का विषय है।

“ हमारा भारत तो बुजुर्गों को भगवान के रूप में मानता है। इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण हैं कि माता-पिता की आज्ञा से भगवान श्रीराम जैसे अवतारी पुरुषों ने राजपाट त्याग कर वनों में विचरण किया, मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार ने अपने अन्धे माता-पिता को काँवड़ में बैठाकर चारधाम की यात्रा कराई। फिर क्यों आधुनिक समाज में वृद्ध माता-पिता और उनकी संतान के बीच दूरियां बढ़ती जा रही है। इस समस्या की शुरूआत तब होती है, जब युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों को उपेक्षा की निगाह से देखने लगती है और उन्हें बुढ़ापे और अकेलेपन से लड़ने के लिए असहाय छोड़ देती है।

मेष दशम सूर्य आपके जीवन में विशेष कृपा बनाएगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।प्रतिष्ठा तो मिलेगी। परेशानी होगी।अष्टम शनि के लिए चांदी का टुकड़ा अपने पास रखें। लेकिन धनागमन में थोड़ी मा के महालक्ष्मी रूप की पूजा करें। शुभ अंक 3 रंग हरा और लाल।

बृषभ जीवन में आनंद का वातावरण बनाने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें।विद्यार्थी के लिए और प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल अवसर हैं। मन खिन्न रहेगा।बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलेगी।शुभ अंक 2 और शुभ रंग सफेद या ऑफ वाइट।

मिथुन पंचम शनि करियर के क्षेत्र में अच्छे अवसर देंगे।विद्या व बुद्धि से सफलता प्राप्त होंगे।गुरु के प्रभाव से लीवर या पेट की समस्या रहेगी। महामृत्युंजय मंत्र का जाप या श्रवण करें। शुभ रंग पीला। शुभ अंक 3।

कर्क प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है।हनुमान जी की आराधना करें। सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा।बजरंगबाण का पाठ करें। शुभ अंक 7। शुभ रंग- गुलाबी

सिंह मत्र के वेश में छुपे शत्रु से सावधानी की जरूरत है।श्री लुक्ष्मी नारायण की पूजा से धन लाभ होगा।संध्या प्रहर घी का चतुर्मुख दीपक अपने घर के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन जलाए।उत्सव और मांगलिक कार्य की बातें करने का उपयुक्त समय है। शुभ रंग नीला। शुभ अंक 8।

कन्या सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी।गुस्सा पर नियंत्रण रखें।दुश्मन से सचेत जरूरी है।नजर बचना होगा।घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नही रहेगा। दोस्तों से बचें। बिना कारण वाद-विवाद ना करें हानि हो सकती है। सफेद कपड़े में सिंधा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधे। शुभ रंग -हरा। शुभ अंक 9।

बृश्चिक आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है।भाई के लिए समय अनुकूल नही है।बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्बीर घर में रखें।प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5।

तुला भाग्य का राहु राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे।गुरु की कृपा से शत्रु व रोग का नाश होगा।शनि माता के स्वास्थ्य के लिए ठीक नही है।चांदी के पात्र से गाय का कच्चा दूध नदी में बहाएं।अनुकूलता बनी रहेगी। शुभ रंग लाल। शुभ अंक 4।

मकर जिद्द छोड़ना होगा।बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने सेनुक्सान कम होगा।राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है।कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7।

कुम्भ झूठ से नफरत होगी।झूठे लोगों से सामना होगा।लाभ होंगे लेकिन मन के अनुकूल नही।लेकिन मान सम्मान बढेगा।मंगल कार्य के लिए आगे बढ़े।आवश्यकता को कम करें।चोट चपेट से बचना होगा।हल्दी का गांठ अपने पर्स में रखें।ॐ नमो नारायणाय का जाप करें। शुभ रंग-गुलाबी। शुभ अंक 8।

धनु धन का आगमन होगा।लेकिन सूर्यास्त के बाद दूध व दही का सेवन नही करें।आत्मभिमान से बचना होगा।अहंकार को हावी नही होने दे।हनुमान चालीसा का पाठ करें। शुभ अंक 6। शुभ रंग हरा।

मीन कर्म स्थान का शनि मेहनत के बाद ही सफलता देगा।शनिबार की संध्या में लड्डू गरीबों में बांटे।सेहत का ध्यान रखें। गुरु की कृपा से भाग्य की बृद्धि होगी।भगवान श्री सूर्यनारायण को अर्ध्य प्रदान करें। शुभ अंक 1 और शुभ रंग लाल है।

जिदंगी में नई स्फूर्ति और उमंग भरता है पर्यटन

विश्व पर्यटन दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य पर्यटन और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों के प्रति विश्व समुदाय को जागरूक करना है। यह दिवस संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन द्वारा 1980 में शुरू किया गया जो प्रत्येक वर्ष 27 सितम्बर को मनाया जाता है। यह विशेष दिन इसलिये चुना गया क्योंकि इस दिन 1970 में यू.एन.डब्ल्यू.टी.ओ. के कानून प्रभाव में आये थे जिसे विश्व पर्यटन के क्षेत्र में बहुत बड़ा मील का पत्थर माना जाता है, इसका लक्ष्य विश्व पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों के लोगों को जागरूक करना है। पर्यटकों के लिए विभिन्न आकर्षक और नए स्थलों की वजह से पर्यटन दुनियाभर में लगातार बढ़ने वाला और विकासशील आर्थिक क्षेत्र बन गया है। भारत पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध एवं व्यापक संभावनाओं वाला देश है।

भारत अपनी सुंदरता, ऐतिहासिक स्थलों, प्रकृति की मनोरमा के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। भारत में विभिन्न संप्रदाय-धर्म और जाति के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक धरोहर के कारण भारत दुनिया के प्रमुख पर्यटन देशों में शुमार होता है। यहां के हर राज्य की अलौकिक और विलक्षण विशिष्टताएं हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। उन पर्यटकों के लिए भारत-यात्रा का विशेष आकर्षण है जो शांत, जादुई, सौंदर्य और रोमांच की तलाश में रहते हैं। इस देश की इन विविधताओं ने ही अनेक यायावरी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। भारतीय पर्यटन विभाग ने पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिये सितंबर 2002 में ह्यअतुल्य भारत नाम से एक नया अभियान शुरू किया था। इस अभियान का उद्देश्य भारतीय पर्यटन को वैश्विक मंच पर बढ़ावा देना था। इस अभियान के तहत हिमालय, काश्मीर, वन्य जीव, योग और आयुर्वेद पर अंतर्राष्ट्रीय समूह का ध्यान खींचा गया। देश के पर्यटन क्षेत्र के लिए इस अभियान से पर्यटन की संभावनाओं के नए द्वार खुले हैं। जीवन की आपाधापी, भागदौड़ से हटकर भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों के बीच जीवन के मायने ढूंढ़ने में यायावरी लोगों को सुखद अनुभव हुए हैं। पर्यटन से सत्य की खोज ने उन्हें अनूठे एवं विलक्षण ऐतिहासिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक स्थलों से साक्षात्कार करवाया है। भारत विश्व के पाँच शीर्ष पर्यटक स्थलों में से एक है। विश्व पर्यटन संगठन और वर्ल्ड टूरिज्म एण्ड ट्रैवल काउन्सिल तथा पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणीय संगठनों ने भारतीय पर्यटन को सबसे ज्यादा तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्र के रूप में बताया है। भारत के प्रति विश्व के पर्यटकों को आकर्षित करने में यात्रा साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब तक यात्रा साहित्य की दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन का ह्यमेरी तिब्बत यात्रा, डॉ. भगवतीशरण उपाध्याय का ह्यसागर की लहरों पर, कपूरचंद कुलिश का ह्यमैं देखता चला गया, धर्मवीर भारती का ह्यढेले पर हिमालय तथा नेहरू का ह्यआंखों देखा रूस, रामेश्वर टांटिया का ह्यविश्व यात्रा के संस्मरण, आचार्य तुलसी का यात्रा साहित्य की ही भांति पुखराज सेठिया की पुस्तक ह्यआओ घूमे अपना देश आदि मार्मिक और रोचक यात्रा-वृतांत है। यह यात्रा साहित्य इतनी सरल शैली में यात्रा का इतिहास प्रस्तुत करता है कि पाठक को ऐसा लगता है मानो वह इन लेखकों के साथ ही यात्रायित हो रहा है।

जिस तरह हम भारत को एक गुलदस्ते की भांति अनुभव करते हैं, लगभग वैसा ही विविधरूपी, बहुरंगी और बहुआयामी गुलदस्ता है- भारत का पर्यटन संसार। एक ऐसा गुलदस्ता है जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प सुसज्जित हैं। किसी फूल में कश्मीर की लालिमा है तो किसी में कामरूप का जादू। कोई फूल पंजाब की कली संजोए हैं, तो किसी में तमिलनाडु की किसी श्यामा का तरन्नुम। उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और अन्य प्रदेशों के पर्यटन स्थलों को देखना एक सुखद एवं अद्भुत अनुभूति का अहसास है। यह भारत पल-पल परिवर्तित, नितनूतन, बहुआयामी और इन्द्रजाल की हद तक चमत्कारी यथार्थ से परिपूर्ण है। भारत सरकार एवं विभिन्न राज्यों की सरकारें पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिये समय-समय पर अनेक योजनाएं प्रस्तुत करती है। ह्यपैलेस ऑन व्हील्स ऐसा ही एक उपक्रम है, जिसे देश की शाही सैलानी रेलगाड़ी का तीसरा हॉस्पिटेलिटी इंडिया इंटरनेशनल अवार्ड दिया गया है। राजस्थान पर्यटन विकास निगम का यह पहियों पर राजमहल दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर भारत का नाम रोशन करने वाला माना गया है। अब एक

और पैलेस ऑन व्हील्स शुरू किए जाने की योजना है। इसमें पर्यटकों के लिए पहली से भी ज्यादा सुख-सुविधाएं होंगी।

भारत में केवल गोवा, केरल, राजस्थान, उड़ीसा और मध्यप्रदेश में ही पर्यटन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है, बल्कि उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पर्यटन को भी अच्छा लाभ पहुँचा है। हिमाचल प्रदेश में पिछले वर्ष 6.5 मिलियन पर्यटक गए थे। यह आंकड़ा राज्य की कुल आबादी के लगभग बराबर बैठता है। इन पर्यटकों में से 2.04 लाख पर्यटक विदेशी थे। आंकड़ों के लिहाज से देखें तो प्रदेश ने अपेक्षा से कहीं अधिक सफल प्रदर्शन किया। विश्व पर्यटन संगठन ने भारतीय पर्यटन को सर्वाधिक तेजी से यानि 8.8 फीसदी वार्षिक की दर से विकसित हो रहे उद्योग के रूप में घोषित किया है। पर्यटन देश का तीसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला उद्योग है। 2004 में पर्यटन से 21 हजार करोड़ रुपए से भी अधिक की आय हुई। देश की कुल श्रम शक्ति में से 6 प्रतिशत को पर्यटन में रोजगार मिला हुआ है। पर्यटन उद्योग की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। भारत के विशाल तथा खूबसूरत तटीय क्षेत्र, अछूते वन, शान्त द्वीप समूह, वास्तुकला की प्राचीन, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परम्परा, रंगमंच तथा कलाकेन्द्र पश्चिम के पर्यटकों के लिए खूबसूरत आकर्षण के केन्द्र बनते रहे हैं। विदेशी पर्यटकों के प्रति आत्मीयता दशार्ने के लिए सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम अतिथि देवो भवः शुरू किया गया है। विदेशी पर्यटक दूसरे देशों में भी घूमते हैं लेकिन भारत में पर्यटकों को अपनेपन की अनुभूति होती है, इसीलिए वे जहां भी जाते हैं न केवल उन जगह के प्रमुख दर्शनीय स्थलों को देखते हैं।

> “ जिस तरह हम भारत को एक गुलदस्ते की भांति अनुभव करते हैं, लगभग वैसा ही विविधरूपी, बहुरंगी और बहुआयामी गुलदस्ता है- भारत का पर्यटन संसार। एक ऐसा गुलदस्ता है जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प सुसज्जित हैं। किसी फूल में कश्मीर की लालिमा है तो किसी में कामरूप का जादू। कोई फूल पंजाब की कली संजोए हैं, तो किसी में तमिलनाडु की किसी श्यामा का तरन्नुम।

खेलों के महानायक बन नीरज ने लिखा स्वर्णिम इतिहास

देश को लगातार मिल रही खुशीभरी खबरों एवं कीर्तिमानों के बीच एक और कीर्तिमान नीरज चोपड़ा ने जड़ दिया। चार दशक में पहली बार विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में किसी भारतीय का देश की झोली में एक दुर्लभ स्वर्ण पदक डालना वाकई नया इतिहास रचने से कम नहीं है। नीरज चोपड़ा का जेवलिन थ्रो प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतना सूखे में बरसात की बूंदों के समान ही माना जाएगा। इस रोशनी के एक टुकड़े ने देशवासियों को प्रसन्नता का प्रकाश दे दिया है, संदेश दिया है कि देश का एक भी व्यक्ति अगर दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ने की ठान ले तो वह शिखर पर पहुंच सकता है। विश्व को बौना बना सकता है। पूरे देश के निवासियों का सिर ऊंचा कर सकता है। इस ऐतिहासिक एवं यादगार उपलब्धि की खबर जब अखबारों में छपी तो सबको लगा कि शब्द उन पृष्ठों से बाहर निकलकर नाच रहे हैं।

नीरज की एक खिलाड़ी होने की यात्रा अनेक संघर्षों, झंझावातों एवं चुनौतियों से होकर गुजरी है। चंद बरस पहले वह बढ़ते वजन से परेशान एक युवा थे। 13 साल की उमर में उनका वजन 80 किलोग्राम हो गया था जिसकी वजह से उनकी उम्र के दूसरे बच्चे उन्हें चिढ़ाते थे। वहां से शुरू करके नीरज ने न सिर्फ अपने शरीर को साधा बल्कि अपने मन को अनुशासित कर इस तरह से केंद्रित किया कि लगातार आगे बढ़ते रहे, कीर्तिमान गढ़ते रहे। लेकिन उनके पांव जमीन पर हैं और तभी वह भाला फेंकते हैं तो दूर तक जाता है और एक स्वर्णित इतिहास रचता है। तभी अब तक कोई भी ऐथलीट देश को जो गौरव नहीं दिला पाया था, वह नीरज ने दिलाया है। लेकिन बात सिर्फ इस एक गोल्ड की नहीं है। उनकी इस उपलब्धि के साथ ऐसी कई बातें जुड़ी हैं जो उन्हें खास बनाती हैं। उनको खास बनाने में जहां उनकी लगन, परिश्रम, निष्ठा एवं खेलभावना रही, वही साल 2018 में एशियाई खेल और फिर कॉमनवेल्थ गेम्स में गोल्ड, 2020 में तोक्यो ओलिंपिक्स में गोल्ड, 2022 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में सिल्वर, 2022 में ही डायमंड लीग में गोल्ड और 2023 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में गोल्ड लाने का उनका करिश्मा तो बहुत कुछ कहता ही है, सबसे बड़ी बात यह है कि इस दौरान वह अपने प्रदर्शन में लगातार निखार लाते रहे। उन्होंने भारतीय खेलों को भी दुनिया में शीर्ष पर पहुंचाया है। इस उपलब्धिभरी सुहानी फिजां में सबसे अहम सवाल यह है कि दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश खेलों में वह मुकाम हासिल क्यों नहीं कर पाया जिसका वह हकदार है? क्या हमारे यहां खेल का माहौल नहीं है या फिर सुविधाओं के अभाव में खिलाड़ी आगे नहीं बढ़ पाते। या खेल भी राजनीति के शिकार है? ये सवाल इसलिए उठते हैं क्योंकि विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में अब तक पदक पाने वाले देशों की सूची में भारत बहुत पीछे है। महज पांच करोड़ की आबादी वाला देश केन्या 65 स्वर्ण पदक के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। वहीं एक करोड़ की आबादी वाला देश क्यूबा विश्व चैंपियनशिप में 22 स्वर्ण पदक अपनी झोली में डाल चुका है। ओलम्पिक खेलों की बात की जाए तो वहां भी भारत का प्रदर्शन निराशाजनक ही रहा है।

ओलम्पिक खेलों के 127 साल के इतिहास में हॉकी के अलावा हमें अब तक दो स्वर्ण पदक ही मिले हैं। इनमें एक नीरज चोपड़ा व दूसरा अभिनव बिन्द्रा के नाम ही है। ऐसा नहीं है कि आजादी के बाद देश ने विकास की रफ्तार नहीं पकड़ी हो। हर क्षेत्र में भारत ने प्रगति की नई ऊंचाइयों को छुआ है। विज्ञान हो या अंतरिक्ष, देश ने दुनिया में अलग पहचान बनाई है। इस समय हम दुनिया की पांचवीं आर्थिक महाशक्ति बन गए हैं। छह दिन पहले ही चांद पर तिरंगा लहराया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कारण विश्व में भारत की बात को महत्त्व दिया जाता है। इन तमाम उपलब्धियों के बीच सवाल यही उठता है कि हम खेलों में पीछे क्यों हैं? क्या इसके लिए खेल संघ जिम्मेदार हैं? खेल संघों पर वर्षों से कब्जा जमाए बैठे राजनेता और नौकरशाह खेल की विकास यात्रा में बाधक तो नहीं बन रहे?

ऐसे समय जब चांद के दक्षिण ध्रुव के पास चंद्रयान उतार कर भारतीय वैज्ञानिक स्पेस एक्सप्लोरेशन के क्षेत्र में अपना झंडा बुलंद कर चुके हैं और शतरंज में प्रग्नानंदा जैसे यंग टैलंट नई उम्मीदें दिखा रहे हैं, नीरज चोपड़ा की यह उपलब्धि न केवल देशवासियों के मनोबल को और ऊंचा करती है बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी निरंतर बेहतर करने का विश्वास और प्रेरणा देती है और आजादी के अमृतकाल को अमृतमय करने का हौंसला देती है। नीरज ने 88.17 मीटर की दूरी पर भाला फेंक कर कीर्तिमान स्थापित किया और साबित कर दिया कि भारत की मिट्टी में जन्मे खेलों को यदि खुद भारतवासी ही इज्जत की नजर से देखें तो यह देश कमाल कर सकता है। यदि सच पूछा जाये तो नीरज चोपड़ा भारतीय मूल के खेलों के ह्यमहानायक बन चुके हैं। उनसे पहले यह रूतबा कुश्ती के पहलवान गुलाम मुहम्मद बख्श उर्फ ह्यगामा को ही प्राप्त हुआ है या ओलम्पिक खेलों में शामिल हाकी के खिलाड़ी मेजर ध्यान चन्द के नाम रहा है। नीरज चोपड़ा का योगदान इसलिए बड़ा एवं महान है कि उन्होंने ग्रामीण एवं देशी खेल को विश्व प्रतिष्ठा प्रदान की है। भले ही आर्थिक एवं चकाचौंध वाली सोच के कारण भारत में क्रिकेट का खेल अधिक लोकप्रिय हो,

“ नीरज की एक खिलाड़ी होने की यात्रा अनेक संघर्षों, झंझावातों एवं चुनौतियों से होकर गुजरी है। चंद बरस पहले वह बढ़ते वजन से परेशान एक युवा थे। 13 साल की उमर में उनका वजन 80 किलोग्राम हो गया था जिसकी वजह से उनकी उम्र के दूसरे बच्चे उन्हें चिढ़ाते थे। वहां से शुरू करके नीरज ने न सिर्फ अपने शरीर को साधा बल्कि अपने मन को अनुशासित कर इस तरह से केंद्रित किया कि लगातार आगे बढ़ते रहे, कीर्तिमान गढ़ते रहे।

Janpath News
A Unit of Janpath News & Views Pvt. Ltd.
बिहार के प्रत्येक
जिले में रिपोर्टर
की आवश्यकता है
रिपोर्टर बनने
के लिए
7858883787
पर संपर्क करे

FORD HOSPITAL, PATNA

A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital

PATNA

A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar

उत्कृष्ट एवं अद्वितीय की अनुभूति

Dr. Santosh Kr.

Dr. B. B. Bharti

Dr. Arun Kumar

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE

NABH

PRE ACCREDITED

हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम

2nd Multi Speciality NABH Certified Hospital of Bihar

Best Promising Multi Speciality Hospital 2018 Bihar.

फोर्ड हॉस्पीटल में उपलब्ध सेवाएं

क्लीनिकल सर्विसेस

- कार्डियोलॉजी
- क्रिटीकल केयर
- न्यूरोलॉजी
- स्पाईन सर्जरी
- नेफ्रोलॉजी एवं डायलेसिस
- ऑर्थोपेडिक एवं ट्रॉमा
- ओब्स एवं गॉयनेकोलोजी
- पेडिएट्रिक्स
- पेडिएट्रिक सर्जरी
- साइकियेट्री एवं साइकोलॉजी
- रेस्पिरेट्री मेडिसिन
- यूरोलॉजी
- सर्जिकल ऑन्कोलोजी

Empanelled with CGHS, ECR, CISF, NTPC, Airport Authority, Power Grid & other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS

New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline ; 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org